

મુખર્જી ઇલાકાનું સરકારી કેલવળીખાતું.

ગુજરાતી કાવ્ય સંક્ષેપ.

આ ગ્રથ,

કવિ દલપતરામ દાહ્યાભાઈ

એઓએ રચ્યો.

૬૦૦૦ પ્રત.

૮૮.
૬૬.

આ પુસ્તકની માલિકી સન ૧૮૬૭ ના ૨૫ મા આત્મમાણ નાખલો છે

—૩૦૬—

મુખર્જી:

ગવર્નમેન્ટ સેન્ટ્રલ બુક દિપો

સન ૧૮૭૯ ઇ૦

આ પુસ્તક સર્વધી સર્વે અધિકાર સાકારે સ્વાધીન રારયા છે

| Price Rs 5-0-0

મુંવડેમા

“નિર્ણપસાગર” છારખાનામાં છાન્યુ છે

काव्यसंक्षेपं.

प्रस्तावना.

—०५०—

हरेकदेशनी भाषामा कविता होयछे. हरेकदेशमा एबो नियम छे के व्याकरण भणीने बीजा ग्रथो बांचे, पण जो ते भाषानी कवितानां पुस्तको बांची के समजी शकतो न होय, तो ते भाषा पूरी भणेलो पडित कहेवाय नहि, अने एकला गद्यनांज पुस्तको बांच्या होय तेनाथी तेज भाषानी कवितानु पुस्तक बांची के समजी शकाय नहि.

जेम छापेला अक्षरोमां अने झडपयो लखेला अक्षरोमां तफावत होय छे, तेमज कवितानी भाषामां अने गद्यनी भाषामां काँइक तफावत होयछे, माटे ते बने प्रकार शीसगा जीइए.

संस्कृत भणनारा पण प्रयम व्याकरण भणीने पठी पंचकाव्य भणेहे खारे पडित कहेवाय छे, तेमन अग्रेजीमां अने फारशीमां पण छे, तथा मराठी भाषामां अने हिंदी भाषा वर्गेरेमां पण गद्यनां अने पद्यगां पुस्तको छे, अने ते सरकारी निशाळोमां तथा स्कूलोमां चालेछे.

गूजराती भाषामां जूना कविओनो कविताना सम्रहनां काव्य-दोहन नामे वे पुस्तको सरकारे मारी पासे कराव्यां हतां, अने ते आज सूधो स्कूलोमां चाल्यां. ए पुस्तको रचावती वसते एबो विचार हतो के कवितामां मतलब धर्मनी होय के गमे ते होय, पण जे कविता लोकोमां वखणाती होय तेनो सम्रह करो.

पारका धर्मनो उत्कृष्टतानु पुस्तक घणा खरा लोकोने बाचवु गमतु नयो, तेथी हमणां एबो तकरार ऊठी के निशाळोमां तथा स्कूलोमां कोइना धर्मनी कविता अथवा वाचत शीखवयो नहि, तेमन नागा शृगारसनी वाचत उछरता ढोकराभोने शीखवयी नहि. ते उपरथो

सरकारे एवो ठराव कर्यों के कोइ एकज पथने लागु 'पडे नहि, तथा जेमां बालकने नुकसान करी शृंगार रस न होय एवो कविता काव्य दोहननां वै पुस्तकोमांथी तथां बीजा ग्रंथोमांथी तारकी कहाडीने तेनु एक पुस्तक तैयार करयु, ते काम रावसाहेब महिपतराम रुपरामना देखोरेखमां करवाने मने सोंप्युं, तेथो आ पुस्तक तेवी रीते में तैयार कर्युछे.

आ पुस्तकमां फकत त्रणज कवियोनो कविता लीधी छे. तेमां प्रथम गिरधरकृत रामायणमांथी केटली एक कविता इतिहास दाखल छे, तेमां असलना अयोध्याना राजानो वात छे. तेपछी लख्जारामकृत अभिमन्युना आख्यानमांथी केटलो एक भाग लीधो छे. ते पछी शामळभटना विविध विषय तथा पद्मावतीनो वार्ता संक्षेपे लीधी छे. ए वार्तामां सतीओ रवयवरथी परणोली ते चाल घणो वत्ताणवा लायेकू छे; तेमां अघटित शृंगार रस नयी पण योग्यरीते शृंगार रस छे.

ए त्रणे कवियोनो कवितामांथी धर्मने लगतां वाक्यो तथा अ-घटित शृंगार रसने लगतां वाक्यो आमां लीधां नयी, माटे आ पुस्त-कनुं नाम “काव्यसक्षेप” राख्युछे. ३० स० १८७९

क. दलपतराम डाह्याभाई.

संवत् १८९३ मां वडोदराना दशा लाड वाणिया कवि
गिरधरे रामायणनुं पुस्तक रची पूर्ण करेलुं छे.

गिरधरकृत रामायणमांथी

दशरथ विषे.



राग धनाशरी.

दशरथ राजा पुण्य पवित्रजी, कङ्ह संसेपे तेनां चरित्रजी;
रावणे मुक्यां बैन्यो त्यांहेजी, विधिये घोहो चाड्यां अवधपुरमांहेजी.
दोळ) अवध पुरमां राय दशरथ राणी कौशल्या सती;
तेना आनंदमां दिन जायछे निजधरम पाले महामती.
पछे पुत्रने निज राज सौंपी अज गया वन वास;
तप साधना करी योडे दिवसे पार्था स्वर्ग निवास.
त्यारे राय दशरथ राज करता नीति धर्म विवेक;
पुत्रनी पेरे प्रजां पाले दया सभ विशेक.
एक केकै कन्या रायनी शुभरूप कपटी मंन;
बलवान निरदे अतिधणी ते परणिया राजन.
बळी नागकन्या सुमित्राने परण्या पोते भूप;
बीजो सांत शत कन्या वन्या जेनुं महा मनोहर रूप.
ज्ञानकळा ते कौशल्या सुमित्रा भक्ति अनूप;
केकै निश्चे जाणनो ए कपट वृत्ति रूप.
त्रिगुण रूप विवेक मुरती मान दशरथ राय;
तेना पावन जश अदभूत प्राक्रम केहेतां पार न थाय.
धनुर विद्या विशारद रणपंडित शस्त्र प्रवीण;
शब्द वेधी चिच्छण सहु शत्रु कीधा क्षीण.
पण प्रजा नव यइ रायने कंइ पुत्र पुत्री रूप;
जोवन पण चाल्युं वही चिंता करेछे भूप.

शास्त्र पढित एम कहे पुत्र विना धिक ससार;
 शुन्य मदिर सुत विना जेम दीप विण अधार.
 प्रजा जेम राजा विना घृत लवण पाखे अन्न;
 राका विधु तरु फल विना ससार सुख निरधन.
 एम राय दशरथ करे चिंता पुत्र न ययो पेट;
 एक दिवस नृपने निशामाहे स्वप्न आव्यु नेट.
 जाणे बै पुरुष एक स्त्रीने मारी स्वप्नमा निरधार;
 शब्दकी जाग्या रायजी करता ते मन विचार.
 प्रातःकाळे वसिष्ठ गुरुने कही राये वात;
 मैं ब्रण जणनी स्वप्नमाहे करी शस्त्रे धात.
 त्यारे गुरु कहे ए भविष्य आगल थवानु छे जाण;
 पछे शाति अरथे राय दशरथ कन्यु पुण्य प्रमाण.
 केटला दिन वीरा पछी मृगया गया बन राय;
 कोइ मृग हाये नव चढ़ो त्यारे दूर पये जाय.
 ते बनमाहे निशा पडी आरे विमांशु मनमाहे;
 एक सरोवरथी दूर तरुवर तके बेठा त्याहे.
 ते समे-नाल्पण श्रवण नामे वृध अध मात पिताय;
 ते फरे तीरथ अटण करतो धरी कावड काय.
 आरे तम निशामा तृपा लागी वृधने तेणीवार;
 त्यारे कावड सर उपकठ मुक्की गयो भरवा वार.
 कम्पडळमा जळ भयुं ते शब्द प्रगळो त्याहे;
 त्यारे राये जाण्यु मृग की आव्यो सरोवरमाहे.
 राये ततक्षण बाण मुक्यु शब्दवेदी जेह;
 ते श्रवणने बाग्यु तदा कही राम पडियो तेह.
 आरे धश्या दशरथ गया पासे द्विन पड़ो जे ठाम;
 दीन यइ कहे श्रवणने मैं कयुं अघटित क्राम.
 त्यारे श्रवण कहे जइ पाओ जळ मुज मात पिताने जाण;
 ए चृद्धने तमो पाल्जो एवु कहेतामा गया प्राण.
 आरे कमडळ लेइ राय आव्या वृद्ध केरी पास;
 वोल्या विना जळ आपियुं आरे थया चित्त उदास.

अरे श्रवण केम नथी बोलतो तने कोध नहि कोइ दीन;
 जळ पान नहि करीये अमो बोल्या विना चित्त भिज.
 त्यारे राय वळतुं बोलिया मैं श्रवण मार्यो ठाम;
 अज तणो हुं पुत्र दशरथ अज्योध्या मुज गाम.
 मैं अजाणे कर्म आचयुं मृग वरांसे करी आन;
 हुं पुत्र थइ पालीश तमने पीयो जळ महाराज.
 एवुं सांभळी अति दुःखमां आकंद मांझुं अपार;
 अरे श्रवण जेवो पुत्र क्यांथी प्रगटशे संसार.
 जेणे मात पितानी सेवा न करी धरी मनुष्या देह;
 चंडाळ तेने जाणवो महापुत्र पापी तेह.
 मातं पिताने उवेखी शुभ करम करता अन्य;
 ते धरम अधरम जाणजो सेवा समु नहि पुन्य.
 एवुं कही धरणी ढळ्यां मुरछा थइ तव आप;
 अंतकाळे रायने वे जणे दीधो शाप.
 पुत्र विजोगे प्राण तारा जन्यो सत्य वचन;
 एवुं कही वे मरण पाम्यां राय कंप्या मन.
 दाहकिया कीधी ते तणी दशरथे तेणी वार;
 पछे अश्व आरुढ थइ पोते आव्या नगर मोजार.
 उत्तर किया करी वृद्धनी आप्यां अपरिमित दान;
 राय हरख्या मन विशे मारे थशे संतान.

सीतानाः स्वयंवर विषे.

राग सोरठ.

राम जनकपुर आविया विश्वामित्रनी साथ,
 हेते करी तेडी जायछे मिथुला नगरीनो नाय. रामजनकपुर आविया.
 मुनिमंडळमां महालता चालता वे चतुर,
 शोभे जेम साधन विशे ज्ञान विवेक पुर. राम जनक०
 सुंदर पुर शणगारियुं शेरी चौटाने पोळ,
 मनोहर मंदिर शोभतां सामा सामी ओळ. राम०

जळकेछे उच्ची अटारियो सप्त भूमिना माळ,	
छुना जस्खा रावटी बोले कीर मराळ.	राम०
ध्वजा पताका फरफडे जाणे तडिताकार,	
शिखरे शीखडी नाचता कचनकलश अपार.	राम०
घरघर केरे आगणे मगळ उपचार,	
पुरण कुभने साथीया मोती तोरण द्वार.	राम०
एवी रचना रघुवर नीरखता आवे नगर भोजार,	
रूपना भूपने जोइने मोद्धा सहु नर नार.	राम०
एवी मोहनरूपनी मोहनी मोही नगरनी नार,	
जाणे पुतलियो चित्रनी एम यइ तदाकार.	राम०
कोइ अबळा लेती ओवारणा कोइ देती आशीशँ,	
नेत्र भरीने निरखती कोइ बीनवे ईश.	राम०
ए वर सीता परणज्ञो छे सरखी जोड,	
जो विधि जोग ए मेलवे त्यारे पोहोचे कोड.	राम०
त्यारे एक सखी सखीने कहे सुण बेनी वचन,	
आवा रूपाळा राजवी हशे कोना तन.	राम०
गौर इयाम गुणवत छे बामरूप कीशोर,	
धनुप वाण कर शोभता नेत्र चपळ चकोर.	राम०
सखी इयाम घणो सकुमार छे चाले लटकती चाल,	
ए वर सीता जोग छे निष्ठे परणशे काल.	राम०
त्यारे बीजी कहे वाइ साभळो सीता सुक्रोतवान,	
अण चितव्यो आवी मळयो गुण रूपे समान.	राम०
ब्राजी त्रिया बोली तदा शु जाणो तमो आज,	
जनके तेडाव्या हशे वरयाने काज.	राम०
चोथो चतुरा कहे सखी घणु धनुप कठोर,	
तेहने कैम चटावशे सकुमार कीशोर.	राम०
त्यारे पाचमी कहे पण पालशे राखो धीरज मन,	
तेजस्वी गणीये नहि लघु कोमळ तन.	राम०
एम पचे मळी परमाणियु निष्ठे वरशे राम,	
सुरुत फळशे सीता तणु पौहोंचशे मन काम.	राम०

एवीं नगरनी नारी वातो करे धरे नेह अपार,
 सुति विधि उभयानी करे मनावे त्रिपुरार. राम०
 सुलत कइ जे अमे कर्यां धरीने आ शरीर,
 तै पुन्ये करी जानकी, वरजो रघुवीर. राम०
 ए रीते रघुनाथजी आव्या राजद्वार,
 मियुलेशो मुनि पूजीया करी सेवा अपार. राम०
 एक मदिर सुदर शोभतु आप्यु देइने मान,
 रामसहित मुनि उतर्या कर्या भोजन पान. राम०

वलण.

भोजन करिया भावता सतोप्या मुनि जनरे;
 कहे दास गिरधर ए कथा पावन श्रोता धरजो मनरे.

राम धन्याश्री.

जनके तेडाव्या राय अनूपजी, दशो दिशाना आव्या भूपजी;
 आप्या आसन भोजन पानजी, सहुने उतर्या करी सनमानजी.

टाळ.

सनमान करीं सैने उतर्या, मियुलपतिये खाहे;
 अपार सेना सकळ नृपनी, भोड यइ पुरमाहे.
 केटला राजा नगर बाहेर ऊतर्या उपचन;
 या जनकना परधान फरता आपे तृणजळअन.
 रथ अश्व हस्ती पदाती दळ चतुरग सेना खाहे;
 तेणे जनकपुर वीर्यु सकळ जेम नाव सागरमाहे.
 निमत्रण गयु हतु अवधपुरमा स्वयवरनु जेह,
 छै दुखी रामविजोगे दशरथ माटे न आव्या तेह.
 मढप रचाव्यो जनक राये अति घणो विस्तार;
 मणियभ कचन कळश शळके झोभानो नहि पार.
 वितान बदन जरी झालर दुलीचा वहु रग;
 जाळी मुक्काफळ तणी मणि रत्न तेजतरग.
 सिंहासन सोनातणा ते मुक्या हारोहार;
 माहे खड जूदा कर्याछे मढप घणो विस्तार.

ते मध्यमा व्यवक रह्युठे छूट चारे पास,
 जनके धनुपपूजा करी शुभलभ्रमा उल्लास
 दुतने आज्ञा करी भूपे तेढाव्या सहु राय,
 ते सभामाहे आविया त्या थइ घणी शोभाय
 सिंहासन वेठा सकळ नृप ज्यहा जेनो अधिकार,
 स्थिगमडळ सहित आव्या दशरथ राजकुमार.
 गौर श्याम कीशोर तन मनहरण मोहन रूप,
 श्रीवैष्णारिसुतने जोइने मोह पामिया सहु भूप
 जेम तारामडळ क्षीण पामे उदय रविनो थाय,
 एम भूप सौ शाखा थया ज्यारे आव्या श्रीरघुराय
 एक दीर्घ सिंहासन सुभग छे अधिक सहुथी सार,
 श्रीराम लक्ष्मण मुनी कौशिक वेठा तेणे ठार
 अन्य मुनिजन सरब वेठा सकळ एथ्वीराय,
 रूप जोइ रघुवरतणु नव नेत्रतृप्ति थाय
 सरवे मळाने एम विचार्यु धनुषनु मिथ्या नाम,
 ए रामने परणावशे कन्या जनक अभिराम
 ते मडपना एक खडमा शोभा अविक छे ज्याहे,
 सिंहासन उपर विराजे जनकतनया लाहे
 इद्राणि जेवो अनुचरी ते अनेक उभी दास,
 रत्नडाढी तणा चमर करेच्ये वे पास
 पुष्पमाळा हाथ झाली वेठी अदभूत रूप,
 चपळ नेत्रे करी जोती सकळ एथ्वीभूप

राग सामेरी

आवी रह्या सहु भूपति स्वयवरमा जेणीवार,
 त्योरे जनक रायनो भाट उठी बोलायो तेणीवार.
 सामळी सरवे नरपती जनके क्युं पण जेह,
 जे आ समे त्र्यवक चढावे वरे कन्या तेह
 माटे शूर वीर पराकमी शुभ होय क्षत्रीराज,
 ते उठो ततपर थइ करी त्र्यवक चढावो आज.

घणु कठीण त्र्यवक जोईने गतवळ थया राजन,
पठे परस्पर वातो करेठे राय अयोध्या.
ए शारासन जे चढावे एचो नथी को राज;
बीजो कहे अमो आव्याहु जोचा स्वयवर काज.
एक कहे मारे जनक साथे घणो मित्राचार;
ते माटे आच्या अमो करवा गृहस्थनो वेहेवार.
कैठलाये आवी हलाव्यु न हाल्यु ते चाप,
ते पाठा बैठा मान मूकी पाप्या मन परित्ताप.
कैठला कहे अभिमानथी जो उठीशु आ थार;
अपमान याशो आपणु एम करे मन विचार
एम धनुष हाल्यु नहि कोइथो थइ घडी बे चार;
खारे जनक नृपति बोलीया साभळो राजकुमार.
राजेद्र बलीयो होय जे त्र्यवक चढावो आज;
परणावु तेने जानकी माटे उठो करवा काज.
जोइ रद्या नीचु सुणी सरवे कोइ न उठयो शुर;
ते समे दशमुख आविषो अभिमान सागरपूर.
ककोतरी लखी हती जनके रावणने ते दोश,
बे मत्रि साथे आविषो ते सभामा दशशीश.
लकापतीने जोइने सहु कप्या राजकुमार;
सनमान करी आसन बेसाड्यो ^१विदेहे तेणीवार.
अभिमान करीने बोलीयो ते समे रावणराज;
अल्या जनक तें शु पण कर्युठे कहे मुजने आज.
तव ^२विदेहे त्र्यवक देखाड्यु रावणने ततकाळ;
ए चाप चढावे तेने कन्या आरोपे वरमाळ.
एवु साभळीने अदृहास्ये हश्यो रावण राय;
कैलाश सरखो हलाव्यो कोणमात्र धनु कहेवाय.
मैं अमर बधोवान कीधा, हु रावण बलीयो सत्य;
कदुकनी पेरे उठालु मेरु मदैराचळ परवत.

पृथ्वी उधो करी नासु पलकमा निरधार;
 ब्रह्माड चाक चढावु तो ए धनुषना शा भार.
 एम घणा वचन बोली पछे उठियो रावणराय,
 वस्त्राभूषण सभाळीने धनुषभणी ते जाय.
 रावणे आवी वाथ मारी बीशा करशु साहे,
 देश हाले नहि ते घणो भार त्यकमाहे.
 तदा थयो निस्तेज रावण स्परशता शिवचाप,
 हलाव्यु हाले नहि खारे पाम्पो मन परिताप.
 पछे अधर पीशे दत रीशे रक्तलोचन क्रोध,
 धनुष ते तव उपाङ्गु घणु जोर करीने जोध.
 परस्वेद चाल्यो अगयी उच्चु कर्यु बलवान,
 घणो श्वास चढियो शूरने थयु मन घणु अभिमान.
 जभु कर्यु जव धनुपने अतिबळ करी महाकाय,
 करमाहेथी लयज्ञु तदा तव पञ्चो रावण राय
 पृथ्वी उपर पञ्चो दशमुख थयो पुरण प्रहार,
 तेनो उपर पड्यु यवक चपायो तैणीवार.
 ते भडाको सबलो थयो घणी उडी रज ते ठार,
 रुधिर चाल्यु मुखथकी कचर थयो निरधार.
 पोकार करतो बोलियो तमो सुणो सरवे जन,
 हु दबायो दु मुने काढो थाय पीडा तन.
 अरे जनक मुजने काट वेहेलो जशे मारा प्राण,
 तो कुभकरण इदजीत तुजने मारशे निरवाण.
 पुरभग करशो असुर तहारू लेशो मारू वेर;
 पासु नदो अवतार जो जाउ जीवतो मुज घेर.
 एम ते समे चपायो रावण थयु दु स अपार,
 पृथ्वी उपर पञ्चो निशिचर करे मुखपोकार.

वलण.

पोकार करतो मुखे रावण पीडा पामे तनरे;
 खारे सरव सभा साभळता बोल्या जनकराय वचनरे.

राग मारु-

बोल्या जनक ते पुरुष वचन, नयी बळीयो को राजन;
मैं जोइ सरवनी करणी, निरवीर यह आज धरणी.

भू नक्षत्री करी भृगुनाथ, गयु बळपराक्रम ते साय;
पठी जन्म्यो नयी कोइ सुर, राणी जायो क्षत्रीपुर.
सरवे बेठा हीमत हारी, रही कन्या कुवारी महारी;
सरवे भूपति शोभा सहित, पण छे पुरुषार्थरहीत.
कद्या अधित एवा वचन, रह्या साभळी सौ राजन,
शुणी जनकनी वाणी विरोध, चट्ठो लक्ष्मणने अतिक्रोध.
यथा लोचन राता चोळ, फरके अधर भुकुटी कपोळ;

^२ शोरासन उचो करी पाणी, गुरुप्रद्ये बोल्या वाणी;
हे मुनिवर आवां वचन, केम बोल्यो जनक राजन.

बेठा रामचंद्र रघुराज, केम लोपी एणे लाज;
शुणता भानुकूळतन, केम बोले कठण वचन.

कहोतो उरंवी उधी नासु, एक हस्तमा मैरु रुखु;
करु त्र्यवक चोळी पिट, तो हु रामनो दास कनिष्ठ.

^३ सुमित्रीना वचन शुणी धीर, नेत्र समगा झुर्झु रघुवीर;
रामे लक्ष्मण वार्या ज्यारे, मुनि कौशिक बोल्या खारे.

उठो राम हवे करो काज, पाळो जनकतणु पण आज;
गुरुवचन पाळवा आप, हरवा जनकतणो परताप.

गुरुचरण वदा तेणीवार, कर्या सहु मुनिने नमस्कार;
इयाम सुदर तन सकुमार, पेहेयुं पीतवसन चळकार.

मणिजडित मुगट शीरशोभे, जेना तेजयी दिनकर थोभे;
काने कुडळ मच्छाकार, उर मुकाफलना हार.

मणिमाळ हीरा गळुवध, करककण वाजुवध;
पाम्या विस्मे सरवे भूप, जोइ रघुवरकेरु रूप.
आवी उभा धनुषनी पास, यथा जानकी जोइ उदास;
मन गभरायु तेणीवार, रामचंद्र घणा सकुमार.

राग धनाश्री

श्रीरामे करीयो धनुषनो भग्नी, जनक पण पाळ्यु राख्यो रग्नी,
रावण उठ्यो यदि सावधानजी, गयो लका पामी अपमानजी-
दाळ.

अपमान पामी गयो रावण रामे भाग्यु चाप,
ते समे नयनयकार वरख्यो थयो अधिक प्रताप
सहु सभाने मुरठावळी ते थया सरव सचेत,
श्रीरामने जोता तदा वा सल्यप्रेम समेत
सहु परस्पर वातो केरे रघुवीर अति सुकुमार,
ए कठण सायक कैम भाग्यु एम केरे मन विचार.
हरख आसु आव्या सहुने रोमाचित गदवाण;
जनक सीता सहित सरवे हररप पाम्या जाण
ते समे विश्वामित्र उठचा हरख प्रेम अपार;
रुदे चापिया रघुवीरने आशीश देता सार
त्यारे जनक आज्ञा थकी उठचा जानकीजी त्याहे;
हसगमनी हरख शु वरमाळ अही करमाहे.
शैणगार सजीया सोळ अगे चुदडी शळकार;
भ्रकाश एथवी थायछे जैम तडितनो चळकार
शुनंगति चाले चपळ चरणे घुघरी घमकार,
पदपान अणधट बोठिया, नेपुरनो झणकार
एवा जगतजननी आविया जामकीरूप रसाळ,
रघुवीर केरा कठमाहे आरोपी वरमाळ
निज आसने बेठा जइ हरखिया सीतामन,
वाजित्र वाजे अतिधणा केरे गान मगळ जन
आनद मन पामी तदा उठचा जनक राजन,
रामर द्वंजने वैसाड्या धीताने आसन
जामान श्री रघुवर याय ते जोइ हरखे राय,
पठे विश्वामित्रनी साथ बोल्या सुणता सरव सभाय.
ककोतरी लसो अवधपुरमा रायदशरथ ज्याहे,
सहुसायने तेढी भूपति वेहेला पधारे आहे

मुनि कौशिके कंकोतरी लखी बीने करी वहु ल्याहे;
 कुमकुमे ढांठी पत्र बीड्यो आप्यो द्विजकरमाहे.
 चाल्यो विप्र उत्तावळो अति हरखशुं तेणी वार;
 ते अवधपुरमां आवियो ज्यां रायनो दरबार.
 ते समे दशरथ सभा करीने बेठाछे गुरुसाथ;
 विजोग छे रघुवीरनो चिता करे नरनाथ.
 अरे गुरु वीरा दिन वहु गया रामलक्ष्मण ज्याहे;
 पछे खबर कंइ आवी नहि शुं हशे कारण ल्याहे.
 एटले द्विजवर आवियो छे सभामां ते दीश;
 रायने कर कंकोतरी ते आपी देइ आशीष.
 श्री राम लक्ष्मण कुशल छे राजे जनकपुरमाहे;
 नरपति जोतां सरव रामे धनुष भाग्युं ल्याहे.
 जानकीए वरमाळ घाली थयुं रुहु काज;
 जान सरवे लेइ तमने लेड्या जनके आज.
 मियुला पतिये कद्यो छे परणाम अति आहालाद;
 घणो करी तमने कद्यो कौशिके आशिरवाद.
 एवुं सांभळतांमां राय दशरथ पाम्या हरख अप्यार;
 रामे स्वयंवर जीतियो सुणी थयो जयजयकार.
 पछे दशरथे कंकोतरी आपी गुरुकरमाहे;
 सहु सभा सुणतां वसिष्ठ वांचे उकेलीने ल्याहे.
 स्वस्तिश्री महाशुभस्थानक अवधपुर पावन;
 पूज्य मूर्ति पावन जश नृप मुगाट मणिराजन.
 अखंड लक्ष्मी अलंकृत गुण सकळ बळ महिमाय;
 केंतुवत् रविकुल विशे महाराज दशरथ राय.
 लखीतंग मियुल्यपुर थकी सेवकजन अभिराम;
 चूडामणि महिपति मारो मानजो परणाम.
 शुभकाम कारण लख्यानुं ते सांभळो नृपनाथ;
 तमपुत्र मुज पुरविशे आव्या मुनि कौशिकसाथ.
 ते स्वयंवरमां धनुष भाग्युं पाव्युं मुज पण राम;
 मम पुत्रीए वरमाळ घाली थयां पुरणकाम.

माटे परणावा रघुनीरने शुभलग्न करवा काज;
 सहुसाथने तेढी तमो, बेहेला पधारो आज.
 तमो सदा जशवत छो शोभासहित राजन,
 ते माटे बेहेला पधारजो मुजने करो पावन.
 ए विनति सेवक तणा लख्यु तेह धरजो चत;
 कोटि गणु करी मानजो भूपति भाग्यवत.
 एम पत्र वाच्यो वसिष्ठे ते सुप्यो दशरथराय,
 यया मम ग्रसानदमा अतिहरख अग नमाय.
 सहु सभाने भूपे कहु जाने नवाने काज,
 प्रधानने कहे सकळ सेना करो ततपर आज.
 वीर वाच्यो हरसिया जे भरत शत्रुघन,
 सहु अवधपुरमा चात चाली लोक कहेठे धन्य.
 राणीवासमा जइ राणियोने कयुं राये जाण,
 जनकपुरनो पत्र ते सभलावियो निरवाण
 राणियो सहु आनद पामी उलट अगनमाय,
 ययो कौशल्याजीने तदा ते हरर नव कहेवाप
 द्विनवर तणी सेवा करी सतोसियो गहुपेर,
 गीत मगळ गाय सरवे यइ लीला लेहर
 पठो अश्व गज रथ पालसो शणगारीया वाहन,
 वस्त्र आभूपण धरी ततपर थया सहु जन.
 अवधपुरनी प्रजा सहु बेहेवारिया श्रीमत,
 जया जनकपुर थया ततपर जान शोभावत

बलण

शोभावत यइ जान सरवे वाजे बहु वाजिप्रे,
 सैन्य सकळ शणगारियु ते चलके चित्रविचित्रे

राग सामीरी

दशरथ राजा हरख्या अपार, जनकपुर जावा करियो विचार,
 पिंडो बजडाव्यो पुरमोशार, जान जावा सहु थाओ तैयार.

दाळ.

तैयार याओ जबा जाने जनकपुर मोझार;
 माटे जेने इच्छा होय ते नीकळो नरनार.
 एवु सामळी पुरजन सकळ अतिहरख पाम्या मन;
 वृद्धवालक विनासरवे यया सत्वर जन.
 गजउपर बेसाङ्घा प्रथम गुह वसिष्ठने तेणीवार;
 रथमाहे वेठा राय दशरथ जोडिया हय चार.
 अश्व उपर चळ्या बन्यो भरत शत्रुहन;
 सहु राणियो बेठी सुखासन सगदासी जन
 अनेक रथ हय गज पदाती सुखासन अपार;
 चतुरग सेना नीकळी ते अवधपुरनी बहार.
 वाजिप्र वाजे अति घणा थइ रह्यो नयन्यकार;
 हणहणे केकाण कछो गज करे चीकार.
 हस्ती उपर विप्र वेठा वदीजन बहुरग,
 रघुकुल तणी कीरति खलाणे पामे हरख उमग.
 नेजा अबाढी धना झळके कनक मणिमय सार;
 ठत्रचामर चळकता झळकता तडिताकार.
 वीरझूरा वेशपूरा चाल्या चढी केकाण,
 आभूषण शुभ शस्त्र झळके रत्नजडीत पलाण.
 शुभगुकन वदी नीकळ्या चाल्या जनकपुरनी वाट;
 सरितवन आवे वहु ओळघता गिरिघाट
 वाटे ज्या वास्तो रहे दशरथ सहित समाज;
 सुरलोक जेवु स्थळ भजे जाणे भूपति सुरराज.
 एवी शोभासहित आद्या मियुल देशमो शार;
 जनक पुरनी बहार उपवन उतर्या ते ठार.
 नीशान नोवत गडगडे शोभासहित राजन;
 रुपक वाधे तेतणु श्रोता सुणो एकमन.
 पायदळ शम दम तणु माहे सदविवेक तुरग;
 ते चाले आगळ मलपता रक्षा करे निज अग.

तेनी पुठे निजबोधना कुजर विराजे सार;
 रामनाम तणा मुखे करता घणा चीकाग.
 निजानुभवना दिव्यरथमाहे वेठा मोटा सत;
 ते रामरूपने नीरखवा अनुभव चढ्या माहानत.
 प्रयाण प्रथमे जागृती पुरग्राम स्थूल नीवास;
 त्या रही दशरथ रामने सभारता सुखराश.
 स्वप्ना अवस्था गामडा सूक्ष्म त्या नयी रेहेताराय;
 अघोर बनवाढे घणा ते सुषुप्ति कहेवाय.
 एम करता जनकपुरने आविया उपवन;
 त्यां लक्ष करी रघ्या राय जणाया रामप्राप्ति चिन्ह.
 विदेहने तव खवर थइले पधार्या महाराज;
 सामा आव्या वाजित्र वाजते साथे घणा षट्खीराज.
 मुरु वसिष्ठने चरणे प्रथम नमीपा जनकराजन;
 पठी राय दशरथने मळ्या भेटिया अन्योअन्य.
 भूपनी पासे पुत्र छे जे भरत शत्रुघन;
 रायजनक तेने जोइने स्थिर थयाढे लोचन.
 पळ्या विदेह विचारमा वे पुत्र जोइने त्याहे;
 रामलक्ष्मण मुज घेरछे, शु रीसावी आव्या आहे.
 एम तन वे तदवत जोइने, विचारे मन विदेह;
 वसिष्ठने पुठयु तदा, आरे निवरत्यो सदेह
 घणु मान देइने जाय तेढी राय नप्रयोशार;
 सुमते सेना सकळ, पठे उतरी ते ठार.
 जनकपुरमा गया दशरथ, शीभानी नहि पार;
 सहु लोक जोइ विस्मे थया, वळी गौरश्याम कुमार.
 एक सुदर मंदिर शोभतु रहेवाने आप्यु त्याहे;
 सहु साथशु नरनाथ पोते उतर्या तेमाहे.
 पठी राम लक्ष्मण मळ्या आवी लाग्या गुरुने पाय;
 पिताने चरणे नम्या तव हरसिया जोइ राय.
 राये चाप्या रुदेसाथे रामलक्ष्मण तन,
 सतोप पाम्या रायजी जेम पामे धन निरधन.

कौशल्या केके सुमित्राये वेसाड्या उठ्ठग;
 रुदे चापी सुधे शिर जेम वत्स धेनु सग.
 सहु सभा साथे राय दशरथ गुरु ब्रह्मकुमार;
 ते मढप जोवा चालिया सीता स्वयंवर सार.
 भूपने सरवे देखाड्या जे चापकेरा खड;
 आ जुओ नृप श्रीरामजीए भाग्यु कोदड.
 ते जोइ दशरथ धया विमय, अतिप्रचड कठोर;
 ए केम भाग्यु प्राणवल्लभ कोमळ राम कीशोर.
 पठी विदेहे आदर करी, वेसाड्या आसन;
 राय दशरथ पास वेठा, चारे पुत्ररतन.
 वसिट गुरु आदे सभा सहु वेठा थइ निर्वित;
 अन्य पृथ्वीराय वेठा हरख पामी चित्त.
 पुत्र चारि सहित दशरथ शोभता श्रीमत;
 ते समे जनके मानिया भूपति भाग्यवत.
 पछे जनक राजा वोलिया, सुणो भूपति कहु पेर;
 पुत्र चारे तमारा ते, परणावो सुज घेर.
 वे काया छे माहरी, उन्मीला सीतानाम,
 मालती श्रुत—कौरती वे, मुज वधुनी अभिराम.
 रामने सीता वेरे उन्मीला लक्ष्मणवीर;
 मालती भरतने श्रुतकीरती, शत्रुसूदन धीर.
 एनु साभळी सहु सभा हरखी, आनदा भूपाळ;
 पछे सामा सामी रच्या मढप अति विचित्र विशाळ.
 वाजित वे मढप विशे वाजता अति घनघोर;
 गाय मगळ गीत सुदर, सुदरी चित्त चोर.

वलण.

चित्त चोर चतुरा चोळे पीठी, वर कन्याने तेणी वारे;
 सहु करे भोजन भावता, मन पामे मोद अपारे.

राग धीक्कनी देशी.

शुभ महुरतमांहे लम्ब लीधु, करी मुनीये विचार;
 मार्गशिर शुद पचमी, शुभ जोग ग्रह चद्रवार.
 गणषति पधराविया, जे सकल मगळरूप;
 गोत्रज केरी स्थापना, करी पुज्या दक्षरथ भूप.
 चार कन्या चार वरने, पीठीचोळे अग;
 स्नान विधिये कराविया, धर्या अलकार उमग.
 राय जनकने घेरथी, आवी लेइ कलुवो नार;
 ते गीत मगळ गायछे, आनद हरस अपार.
 ते केवी शोभे कामनी, कवि उपमा दे सार;
 जाणे शाति करुणा दया, क्षमा धृति उन्मनी अविधार.
 सदबुद्धि सदविद्या तितिक्षा, समाधि अद्वा चिनीत;
 मुमुक्षुता तुरीया उपरती, सदगति सुनीत पुनीत.
 एवी राममदिरमा प्रवेशी, सुदरी शुभ काम;
 त्यारे वरघोडानो समे हवो, ततपर यथा श्रीराम.
 ते समे जनके तेडवा, मोकल्या निज प्रधान;
 ते आविया श्रीराम पासे, सकल शोभा मान.
 जाणे सदविवेकने बोध, आनद ज्ञान तप वैराग;
 परमारथ निष्काम निष्ठे, सतोपने अनुराग.
 वररायने शणगारिया, जरकशी जामा अग;
 तिलक मृगमदनां कर्याँ, कुमकुम अक्षतसग.
 मेश विदु ढीधा आख आजी, करमा श्रीफळ पान;
 वर राय वरघोडे चक्ष्या, ततपर यह सहु जान.

वरघोडानी देशी.

ततपर यहने उघलिया श्रीरामजी, मुनिवरने लाग्यापाय.

रघुवरनी घोडे चक्ष्या.

तीखो तोरग चालेरे नाचतो, नीज वधुसहित रघुराय. रघु०
 अगोअगनी शोभारे शी कहु रे, जोतां लाजे कोटीक काम. रघु०
 लक्षणवंता लघुवेश वीराजता, त्रण वंधुनी आगळ राम. रघु०
 तोरा कलगी मुगटपर शळकसी, उपर मुग्ताफळना खुप. रघु०

थाके वरणवतां शोशा सारदा, शुं विखाणुं सुंदर रूप. रघु०
 शोभे दशरथ सहु ननसाथमां, ग्रही चाले गुरुनो हाथ. रघु०
 जोइ शोभा चारेरे पुत्रनी, ब्रह्मानंद माने नृपनाथ. रघु०
 मोड वांधी माताओरे चालती, ग्रही नामणदीको हाथ. रघु०
 गीत मंगल मधुरां गायछे, चाले सरव राणीनो साथ. रघु०
 वाजे वानित्र नाना प्रकारना, नाचे अप्सरा गांध्रवगाय. रघु०
 बंदीजन वहु कीर्ति वखाणता, जयनपकार मंगल धुनिथाय. रघु०
 नभ देवोनां दुंदुभी गडगडे, सुर जोतां चढीने विमान. रघु०
 देइ आशीश पुष्प वर्धावता, सुर अंगना करती गान. रघु०
 जुवे नरनारी सर्वे नग्रनी, वधावे भरी मोतीडे थाळ. रघु०
 हरस्त्री नरखीने लेछे ओवारणां, घणु जीवजो दशरथ बाळ. रघु०
 आगल सविला, सरवे शोभता, छेलछब्बीला राजकुमार. रघु०
 जरी जीन मणीना मोहोरडा, रलजडीत पलाण तोखार. रघु०

चाल चातुरियोनी.

वरराम तोरण आविया ते अश्व उपरथी उतर्या;
 मणि बाजठ पर उभा रह्या आव्या आचारन हरखे भर्या.
 सुनेना राणी जनकनी, सुमतीने कुश केतु तर्णी;
 ते वन्यो आवी पौखवा, गाय गीत गोरी अतिघणी.
 शतानंद वसिष्ठ कौशीक, आदे मुनिवर आविया;
 विधिये करी पूजन कराव्युं, चारेवर पौखाविया.
 मधुपर्क विधि वेहेवार सरवे, आरती वरनी करी;
 एम पुरुषोत्तमने पौखिया, राणियो अतिहरखे भरी.
 त्यां मंडपमां छे माहेश, बाजठ कनक मणिना धर्या;
 वर रायने पधराविया, आचार कुळरीते कर्या.
 सहु भूपने बेसाडिया ते, मंडपमां आदर करी;
 एक खेडमां मरजादथी, त्यांहां बेसारी सहु सुंदरी.
 पुरजन पुरीजन ज्ञाति, गुरुजन बेठा मंडपमां मल्ली;
 सहु लम रचना जुवेछे, वानित्र वहु वाजे वल्ली.
 कनक झारी जलभरी, लावी राणी सुमेधा वाहालमां;
 पग पखाव्या वरना विदेहे, कनक केरी थाळमां.

यज्ञोपचीत पेहेरावियां, ते वेदमंत्रे अनुसरी;
 जनके ते वरने पूजिया, पछे पोडश उपचारेकरी.
 लग्न घटिका सोधे गणक, घडीयाळ वांधीने तदा;
 पछे पधराची खहां चार कन्या, शणगारीने सरवदा.
 सावधान वाणी विप्र बोले, अंतरपट आंडा धर्या;
 मंगळाष्टक उच्चार करता, मुनीमन हरखे भर्या.
 ज्यारे लग्नघटिका पुरण यह त्यारे, वेद आचारज भणे;
 मंगळाक्षत मंत्रीने कर, आप्या वरकन्या तणे.
 कन्याकेरे शीशा चरणे, वरे मुक्या ते जदा;
 पछे वरतणे पदशीश अक्षत, कन्याये मुक्या तदा.
 एम वेदविधिये लग्न थाय, कर्यो हस्तमेळाप;
 स्वस्तिवाचन बोलता, वरमाळ घाली आप.
 एम चार कन्या करी अरपण, जनक भूपे त्याहि;
 मंगळ तुरी वाजित्र जयजय, थाय मंडपमाहि.
 रामसीता परणिया, उन्मीलाने लक्ष्मण वर्या;
 शत्रुघ्न श्रुतकीरतीने, मालवी भरथ हरखे भर्या.
 मंगळकेरा फरेछे वर, कन्या हरखे अति घणुं;
 शोध नाग न कही शके, अतिशोभा सुख ते समे तणुं.
 मणिथंभमां प्रतिविव.भासे, फरे वरकन्याय;
 अलंकार अगे इळकता, शी वरणवुं शोभाय.
 जाणे चार अवस्था शोभिये, अभिमानी सत्ये जेम;
 एम केरा फरतां ते समे, वरकन्या शोभे तेम.
 चार मंगळ वरतियां, जनके कर्यां बहु दान;
 वळी जाचकने आप्युं घणुं, धन विपने देइ मान.
 शीखोचार केरे परस्पर, आचारज तेणी वार;
 कुळरीतथी वर कन्या बळतां, आरोग्यां कंसार.
 होम हुताशनमां कर्या, गोक्कज पूजा परसन;
 एम वर कन्या परणी रद्धां, पछे कराव्युं ध्रुवदरशन.

गुह चरण नमिया भावशु, रघुवीर साथे धात;
 पठे पिताने पाये नम्या, पदवदना करी मात.
 मियुलापतिना कोड पोहोत्या, हरख्या दशारथ भूप;
 वसाणे ठे जन सकळ जोइ, वरकन्यानु रूप.

बलण.

वरकन्यानु रूप जोइने हरखे सहु नर नारे;
 दुदुभि वाजे देवना थइ रथो जयजयकारे.

अयोध्याकांडमांथी.

हावे श्रोताजन सहुभावे सुणजो अयोध्याकाड विचार;
 राज्य तजी रघुवीर नीकल्या बनमा ए विस्तार.
 श्रीराम लक्ष्मण भरथ शान्तुधन परणीने आव्या घेर,
 उठुवमा दिन जाय सरवना सहुने लीला लेहेर
 त्रण वीर रघुवीरने सेवे भक्तिगद्वा सहित;
 माता पितानी आज्ञा पाळे अधरम कपट रहित.
 चार बुनी चार बधु ते पाळे पतिव्रत धरम;
 सुरपति सुखथी कोटी गणु सुराभोग भोगवे परम.
 सासुतणी आज्ञामा रहेता कुळबधु धर्म समेत,
 भेदरहित माताओ सरवे, सहनु सरपु हेत.
 एम धणा दिवस वीत्या महासुखमा, साचवता निजधर्म,
 पितानी आज्ञा प्रमाणे करता, राज काजनु कर्म
 हवे केकैकेरो बधु कहीए, सग्रामजीत एवु नाम;
 ते एकसमे आव्यो पुर मध्ये, भूपति केरे धाम.
 ते चार मास रही निजपुर जावा, थयो ततपर जेणीवार;
 अरै केकै साथे बोल्यो वचन, सग्रामजीत तेणीवार.
 भरथ शान्तुधन बन्यो वाधव, भोकल मारी साथ;
 योडा दिवस हु राटीश माटे, बेनी साभल वात.
 त्यारै केकै कहे हु द्वा कहुरु, पण रायने पूऱो पेर;
 जो भूपति आज्ञा आपे तो, तैडी जाओ तमारे घेर.

त्यारि मामाए कहु महिपतिने, सुणो भूषति भुज वचन;
 आज्ञा आपो तो तेढी जाऊ, हु भरतने शत्रुघ्न.
 मोसाळमाहे गया नथी कोई, दिन माटे मनोरथ मन;
 एक मास राखीने वक्ता, सौंपीश तमने तन.
 एवा वचन सुणीने दशरथ रायने, जळभरी आव्यु नेण;
 भरत शत्रुघ्न पासे तेढावीने, राजा बोल्या वेण.
 सुणो पुत्र आ मामो तमारो, आग्रह करेछे अपार;
 माटे थोडा दिवस जइने रहि आवो, मोसाळमा निरधार.
 जो ना कहीये तो तमारी मातने, दुख लागे भनमाहे;
 मामो तमारो रीसावे माटे, जइ आवो सुत त्याहे.
 एनु कही राये रुदेशु चाप्या, गदगद यद वहु पेर;
 जावो वाप सुखे एक मास रहीने, आधजो पाढा घेर.
 भरतने भाव जवानो नथी, मुकी रामतणी सेवाय;
 पठे मात पिताशु भरतज बोल्या, कर जोडी नामी पाय.
 श्रीरामनी रोवा समागम पाखे, मुजने रुचे नहि अन;
 राम विजोगे एक क्षणु ते, कोटी कल्प समान.
 श्रीरामचद्र हु चकोर चातक, रघुपति जळधर रूप;
 मुज भन कज सदा प्रफुल्लित, रहे राघव दिनकर भूप.
 रामसुरभी हु वत्स कहोते, विजोग केग करी सहेशी;
 कल्पवृक्षना विहगमते वळी, वबुल उपर नर वेसे.
 एनु कही गदगद कठ ययाने, आसु आप्या लोचन;
 खारे केकैये कहु एक मास रही, वेहेला आवजो तन.
 खारे भरते मातपितानु वचन, ते लोपायु नहि त्याहे;
 पठे सत्त्वर यद वे वीरज आव्या, रघुपति वेठा द्याहे.
 श्रीरामचंद्रने चरणे लाग्या, भरतने शत्रुघ्न;
 त्यारे रामे उठीने रुदेशु चाप्या, दौधु आर्द्धन.
 मोसाळ जवानी आज्ञा लीधी, साये घणी सेनाय;
 मातुदृक्षाये रथमा वेशीने, भरत शत्रुघ्न जाय.
 एम चायो वीर मोसाळ गया पण, मन रघुवरनु ध्यान;
 रामरङ्गण ते घेर रद्दा छे, चीर चन्यो यन्वान.

चलण.

बळगान बन्यो रहा मंदिर, रामलक्ष्मण वीर र;
नीति धरमने चलावेठे, धरम धोराधर धीर रे.

राम सामेरी.

मोसाळमाहे गया बन्यो भरत शत्रुघ्न;
श्रीराम लक्ष्मण रहा मंदिर वरते निरमळ मन.
नित्य सेवता गुरुचरण पकज धरम पथ पळाय;
वसिष्ठ मुनिना मुस्तधकी सुणता पुराण कथाय.
सभा करी एक समे वेठा राय दशरथ भूप;
रगमढपमाहे वेठा गुरुसहित अनूप.

खारे जोवा विद्यानी परीक्षा तेडचा लक्ष्मणराम;
पठे कळा जुद्धनी देखाडी सहु पोते पूरणकाम.
अख्त शस्त्र अनेक विद्या सफळ मन्त्रज जैह;
मळ मेष महिषनु जुद्ध करी देखाळ्यु तेह.
प्रसन्न थाय घणु रायजी जोइ पुत्रनो परताप;
त्यारे सकळ गुणसपूर्ण जाण्या रघुवरने आप.
ए प्रकार आनंदमा दिन जायठे सुखमाहे;
रघुवीरने सेवता भावे जनक तनया याहे.
एकवार वेठा मंदिरमा अजपौळनदन जैह;
निजमुखने अवलोकता आदर्शमाहे तेह.
खारे करण आगळ केश शिरनो श्वेत दीठो राय,
उदाशी आवी अति घणी मनमाहे थइ चित्ताय
जाण्यु जरा आवी बात कहेवा चेतावा नरदेव,
एम विचारी वसिष्ठगुरुने तेडाव्या ततखेव.
गुरुने कहे हु छता हवे करे रघुवरराज;
सकल्प मारे मन थयो ते करो गुरुमहाराज.
अभिषेक रघुवरने करी ज्ञुभूम जोइ आज;
रामने देखु राज करता थाय मासु काज.

गुरु कहे तमो रुद्धु विचार्यु घटे एमज भूष;
 साहिल्य सरवे करावो ए जयाजीग्य अनूप.
 खारे दशरथे तेडाविया रघुवीरने एकात;
 पासे बेसाडीने बहु निज मन तण् वरतात.
 हे राम मुजने एम भाश्यु कहु सत्य वचन;
 थोडा दिवसमा जाणु हवे पडशे माहारु तन.
 मुज मरण चिन्ह जणायले माटे राम करय तु राज,
 तमे तमारु सभाळो पुरदेश घरनु काज.
 एहेचा वचन शुणीने भूप चरणे नम्या श्रीरघुराय;
 माहाराज जे कहो ते करु शिर चढावी आज्ञाय.
 पठो राजाये सहुने तेढाव्या पोताना परधान;
 साहुकार सरवे नगरना ते बोलाव्या देइ मान.
 दरबासना अष्ट अधिकारी आदे सरव सभाय,
 ते सरव साभवता पछे बोलिया दशरथ राय.
 भाइ सहु सभाजन साभव्यो मैंहे मनविचारयु आज;
 माटे पच सहुने गमे तो रामने आपुं राज.
 एहेनु सुणी सरवे हरखोया धय धन्य है राजन;
 ए काज तो रुद्धु विचारयु अरे रिपुनाशन
 वसिष्ठ आदे सरव ऋषिये महुरत आप्यु सार;
 चैत्रसूदो सप्तमी शुभ गुरु पुष्य योग विचार.
 साहिल्य सहु ततपर कराव्यु वशिष्ठ तेणोवार;
 उपलक्षण आणि मैळव्या अभीपेकनो ऊपचार.
 चारदतनो उज्ज्यव्ल हस्ती खेत हय शुभ अग,
 नविन सिंहासन कफकतु ऊपचामर सग.
 सप्तप्लव पचमृतिका च्यार समुद्रनु वार,
 मोहोटा विपने जप करवाने बेसाड्या निरधार.
 सहु नगरने शणगारिपु घर चीटा झोरोपोळ;
 नर नारी अति हरखे भरगा यद रह्यो रग झकोळ.
 पेहेले दिवसे वशिष्ठ गुरुये आज्ञा आपी तास,
 श्रीराम सोता बनेन्नने कराव्यो ऊपचास.

कैकै कौशल्या सुमीत्रा मन हरखनो नहि पार;
 सुखवंत सरवे राणीयो आपती दान अपार.
 वारणे मंडप रोपियो गुणिजन करेछे गान;
 वहुरंग तोरण वांधियां झळके विचित्र वितान.
 एम करतां निशा थइने सुरज पाम्यो अस्त;
 त्यारे कुशासनपर राम सीता पोटीयां थइ स्वस्थ.
 सिंहासन उपर प्रभाते वेसशे रघुराय;
 सौं लोक आनंद पामियां देवने थइ चिताय.

रागसोरडनी चोपाइ.

शुणो श्रोता एकचीते करी, यइ रजनी दिवस गयो अनुसरा;
 खारे राजा दशरथ तेणीवार, आव्या कैकैना भोवन मोझार.
 दासी मंथराने पुछयुं कथी, क्यांहां गइ राणी देखाती नथी;
 खारे कुबजा बोली रीसे चडी, ओ पेली तमारी राणी पडी.
 राजा दशरथ आव्या पास, इहां केम बेठीहुं थइने उदास;
 मीठे वचन बोलावे राय, तेम तेम राणी अवळी थाय.
 हस्त स्परसवा माँड्यो जदा, राणीये कर तर छोड्यो तदा;
 पछे रुदन करवा माँड्युं घणु, न जाण्युं कपट राये ते तुणु.
 बोल साचुं तुने माराराम, तुं रीराइने रडेछे केम;
 आंसुधाराये भीजे रुदे, रुदन करती राणी बदे.
 हुं नहि बोलुं तमारी साथ, जाओ झुं करवा आव्या नाथ;
 हेत तमारुं जाण्युं राय, तमने हुं आपीश हत्याय.
 यारे राजा केहे आवडुं कां करे, शामाटे दुःख मनमां धरे;
 जो कोइये दुभी होय तुने, तो देउ दंड साचुं केहे मुने.
 माग्य माग्य जे मागे तुय, सब वचनथी आपुं हुय;
 हुं सरखो स्वामी ताहरे, नथी न्यूनवस्तु माहरे.
 वळती कैकै बोली वचन, क्येम जाओढो भुली राजन;
 गया जुध करवा ब्रशपरवा साथ, हुं तमसंग आवी नाथ.
 त्यारे आप्यांछे जुगलवचन, ते आज मुझने आपो राजन;
 राजा कहे मागी ले सुखे, सबवचन ना नहि कहुं मुखे.

त्यारे केकै केहे वनमा जाय राम, चोद वरस लगी रहे ते ठाम;
 माहारा भरतने आपो राज, ए वे वचन मागुहु आज
 एवु वचन सुष्टु जेटले, व्याकुळ राय थया तेटले,
 ज्यम व्रजबोजली आवी अडे, ज्यम शिरपर पर्वत तुटी पडे.
 ज्यम वेहेरे काळजु करवत धार, एम दक्षरथने दुख थयु अपार;
 प्रलय अग्नि केकेनु वचन, बळी गयु रापनु आपुशवन.
 पद्ध्या भूपति षुध्वीमाहे, आख्ये आसु धार चाली खाहे,
 अग मोडीने बेठा थाय, खोळा पाथरी केहेठे राय
 अरे प्रीये कइ बीजु माग्य, एविन आपु धरी अनुराग;
 माहारो राम कौमळ सकुमार, शोद मोकले वन मोझार.
 नही करे रामराज वेहेवार, भरतने सोपु सहु घरवार,
 ए राज भरत करे सर्वदा, राम घेर वेशी रहे सदा.
 ए वाळकने शीद काढे वन, द्ये घणु रामनु कौमळ तन,
 एम दीनवचन कद्धा राये जदा, त्यारे केकै घुरकी बोली तदा
 शु अधरभी हो राजन, लागशे रवीकुळमा लाठन,
 सखवचन नहीं पालो सार, तो पुरबज पडशे नरक मोझार.
 केकैवचन ते वाग्यु वाण, भेशु रुदे जेम जाय प्राण;
 मुरछीत थइने पडिया राय, नेत्रयकी जळ चाल्यु जाय.
 एम स्त्रीवश राजा थया, वचनवधमा आवीगया;
 अचेत थइ पडिया राजन, नव जाणे बीजु अन्य
 रजनी से महादुखमा गइ, अरुण उदीनी वेळा थइ,
 गुरु वशिष्ठ वेहेला उठिया, सभामाहे सत्वर आविया
 सुमतने कहे जा घरमाहे, तेडी लाव्य रानाने आहे;
 सुमत चात्यो तेणीवार, आव्यो केकैना भोवनमोझार.
 दक्षरथ राजा पडिया व्याहा, सुमत आवी उभो खाहा;
 प्रधाने चरण वदा नृपतणा, दोठा रायने दुखिया घणा.
 विकळवेश मुके निश्वास, नेत्रेजळ अतिवदन उदास;
 मत्री बोल्यो करी विनती, सभामाहे चालो भूपति.
 सरव साहीम्य तत्पर कर्यु आज, तमने बोलावे गुरु महाराज;
 वचन सुमत तणा साभळी, राये रडया माझ्यु बळी.

अरे सुमत सुण्य कहु आदीश, मारू मरण आध्यु छे शीश;
 ते माटे उतावळो जइ आव्य, तु अही रामने तेढी लाव्य.
 सुणी रायना शोक वचन, सुमतने दव लाग्यो तन,
 पळ्यो त्रास मुख उडी गयु, न जाणे रायने शु दुख ययु
 चितात्तुर यइ मत्री एह, रामधाम भणी चाल्यो तेह,
 जेम कळाहीन ग्रहणे रवी थाय, एम यइ निस्तेजने सुमत जाय;
 ससार तापे तपियो जन, जेम आवे मुमुक्षु सत सदन

बलण

सत सदन आवे मुमुक्षु, आत्मप्राप्ति सुख काजरे,
 एम सुमत आव्यो उतावळो, ज्या निराजे श्री रघुरानरे.

(पनभा ज्वती वेणामानी सुनाइत)

राग गोडी

लारे मात कौशल्याजी बोलीया, हो वालरे,
 हुने नही जावा देउ चन कुवरजी कालरे
 घणी कोमळ ठे ताहरी देहडी, होवा०

मारा लाडकवाया तन कुवर०

तुने गुस राखु मारी वाडीमा, होवा०

बीजु अवर न जाणे जेम कुवर०

मेहे तो तुजविनारे रेवाय नहीं, होवा०

मुने मुकीने जाशो केम कुवर०

पाये ककर कटक खुचशो, होवा०

नहीं चलाये वसमी वाट कुवर०

वेठबी शीत आतप ने वृपा, होवा०

केम ओळगशो गीरी घाट कुवर०

व्याघ सिंह वनमा घणा, होवा०

सर्प सौहरने वृक रक्ष कुवर०

रजनीचर साये पुष थशो, होवा०

कोण करशो तमारी पक्ष कुवर०

वनमा वनकुळ केम पेहरशो, होवा०

तजी वस्त्र आभुषणसार कुवर०
 इहा जमता भोजन भावता; होवा०
 केम करशो वनकछ आहार. कुव०
 तजी सज्जा भमर पलगनी; होवा०
 केम पोहोढशो पृथ्वीमाहे. कुव०
 ताहरि वाळपणामा वनकशु; होवा०
 मारू वचन मानीरहो आहे. कुव०
 मारे कीया जनमना करम हशे; होवा०
 ते आवीने नदिया आज. कुव०
 ते दैवे रगमा भग कर्यो, होवा०
 ठर्यु वन तजीने राज. कुव०
 वात साभळी वन जवा तणी; होवा०
 वेहेरे करयत काळजा माह. कुव०
 दंच लागयो मारा अगमा, होवा०
 हवे नाशीने जइए क्याप. कुव०
 मारो पापी प्राण जतो नयी; होवा०
 हशे कोण करमना भोग. कुव०
 एम कहीने रुवे रुदे फाटते, होवा०
 केम सेहेवाय पुत्रविजोग कुव०
 एवा वचन शुणी बोल्या रामजी, हो मातरे;
 तमे धीरज राखो मन, शुणी सुखदाता रे.
 पाढो आवीश योडा दिवसमा; होमा०
 अपो आज्ञा हु जाऊ वन शुणो०
 मारे आज्ञा पितानी पाळवी; होमा०
 रेहेवु चौद वरश वनमाहे. शुणो०
 अवध वीला पठो नहीं रह; होमा०
 वेहेलो आवीश नीजपुरमाहे. शुणो०
 नव वचन मिथ्या करू तातनु; होमा०
 जो पश्चिम उगे सूर. शुणो०
 जे माता पिता गुरु देवनु; होमा०

नव पाले आज्ञा वचन. शुणो०
 ते प्राणी जीवता मुवा जाणजो; होमा०
 अजाकठे जेवो स्तन. शुणो०
 तेनो मिथ्या धरम सहु जाणजो; होमा०
 जेवु कपटी केरु ध्यान. शुणो०
 जेम अदातानु उच्चु मर्दीर; होमा०
 जेम लोभियानु तत्यज्ञान. शुणो०
 एम मनुप्य देह तेहनो मिथ्या; होमा०
 जेवो उदरमाहे क्रमीजत. शुणो०
 जेणे मातपितानी आज्ञा पाळी; होमा०
 शुभ पुत्र ते सुकृतवत् शुणो०
 ते माटे मेरे रेहेवाय नहों; होमा०
 जाय तातनु सत्यवचन. शुणो०
 हवे आशिष देइ आज्ञा आपो; होमा०
 निश्चे जायु मारे वन. शुणो०

वलण.

वनमा माहारे निश्चे जावु, आज्ञा आपो मातरे;
 एहेवु साभळी कीशल्याये, करवा माझो आसुपात रे.

राग आशावरी.

श्री रामचंद्र आव्या निजमदीर जोयु ज्यानकीये रूप;
 राज्य चिन्ह काइये नव दीठा, उदासी त्रिभुवन भूप.
 कमळनेत्र आरक्त यथाठे करमायु मुख गात्र;
 पठे करुणावचने सीतानी साये बोल्या जनक जामात्र.
 सुणो साधनी केकैये भाग्यु रायनी पास वचन;
 ते माटे अमो वर्ष चतुर्दश जइने रहीशु वन.
 पितानी आज्ञा पाळवी निश्चे मारो एज धर्म;
 ते माटे तमो रेहेजो भदिरमा माता पासे पर्म.
 सर्व मातनी सेवा करजो पाळजो धर्म अशेष;
 केकै कौशल्या सुमित्रामा नव अतर गणजो लेष.

सदा काळ अर्हीं रेहेजो सुदरी न जाशो तातने धेर;
 एहेवां वचन सांभळी ज्यानकी वळतां रुदन करे बहुपेर.
 अहो नाथ हु दासी तमारी विजोग नव सेहेवाय;
 तमविना हु केम रहु एकल्ली एक घडी जुग थाय.
 जळविना जळचर केम जीवे जो करिये कोटी उपाय;
 हुं छाया तमारा देहतणी प्रभु कहो केम अळगी याय.
 कनक कान्ती जेम दीपशीसा रवीरस्मि सदारहे पुरी;
 ते कल्पान्ते विलक्षण न थाय जे परीमल ने करतुरी.
 एम हु तमधी केम रहु वेगळी सुणीये श्री रघुराय;
 जेम सदा विवेक साधुनु रुदे तजी कल्पते नव जाय.
 तमविना मदिरसा हु नहीं रहु स्वामी सुणो सुखराशी;
 ते माटे मुने साथे तेडो सेवा करवा दासी.
 खारे राम कहे तमो आव्येथी मने थाय घणो जंजाळ;
 कोमल चरणे चलाशे नहीं वळी वनमां सिंह ने व्याल.
 आतप शोत वृपागीरी कंटक केम सेहेवाशे दुख;
 सीता कहे तमने दुर्स स्वामी तो मारे क्याथी सुख.
 मन मारु मधुकर हु ते तम चरण कमल अनुराग;
 जो स्वामी साथे नहीं तेडो तो हुं करीश देहनो खाग.
 सीतानां एवं वचन सांभळी संतोष्या मन राम;
 औरे प्रिया तमो पुछो गुरुने जो आज्ञा करे अभिराम.
 गुरु आज्ञाये तेडी जाऊ तो कोइ न करे निंदाय;
 लोकतणो अपवाद न लागे कारज सिद्धी थाय.
 खारे गुरुने कहव्युं जनकसुताए आव्या ततक्षण मुन्य;
 आसन पूजन चरणे नमीने सीता बोल्यां वचन.
 हु स्वामी साथे वनमां जाऊ हु करवा पतिसेवाय;
 माटे आज्ञा आपो गुरु नाथ विजोगे मेरे एकलां नव रेहेवाय.
 एवं सांभळी गदगद कठे थया गुरु आंसु आव्यां लोचन;
 पछे मुनि वसिष्ठ रघुवरनी प्रबो बोल्या परम वचन.
 अहो राम तमो तेडो निश्चे जनकसुताने साथ;
 लक्ष्मणने पण तेडी जाओ निजसगे श्रीगुरुनाथ.

(पछी त्रेणजपुने वनमां भृत्यने सुभत नाभि साँथा खाओ। वज्यो ।)
राग वेराडी.

सुमत सचयेरि, मारगे करतो जाय रुदन;
रथ हाको बल्योरे, पस्ताय छे अति घणु मन.
अरे हु अभागियोरि, वनमा मुकीने आव्यो राम;
मुने जननीए जनम्यो वृथारे, करवा आबु निरदय काम.
देखशे रथ रामविनारे, पामशे मात पिता घणु दुःख;
ज्यारे मने पूठशेरे, लारे हु शुं देखाडीश मुख.
सुमत एम शोचतोरि, रोइ रोइ राता ययां लोचन;
अश्व झुरे घणुरे, पग पाडा पडे दुरब्ल तन.
अवधपुर आवीयुरे, दीठी नगरी प्रेतसमान;
लोक सहु रुदन केरे, जे ज्या ते खा मुकी भान.
ज्यारे राम वन गयारे, पुरमाहे पडी छे हडताळ;
देह जैम प्राणविनारे, एम थइ अवधपुरी ते काळ.
प्रधान परवयेरि, पुरमा ढाकी पोतानु मुख;
केकैने आगणेरे, रथ छोड्यो ययु अति घणु दुःख.
मदिरमा मत्री गयोरे, ज्या छे दशरथ भूप सुजाण;
सहुसाय विटीयक्योरे, रायना कठे आव्या छे प्राण.
सुमते खां जइरे, कीधो रायजीने परणाम,
भूपति बोलियारे, सुमत क्या मुकी आव्यो राम.
लह्मण जानकीरि, प्राणबलभ मारो रघुवीर;
भारु सरवस धन गयुरे, हवे हु केम करी राखु धीर.
सुमत तैं शु कर्युरे, रामने शीद मुकी आव्यो वन;
मदिर मारु ऊज थयुरे, कोणे फोड्यां मारा लोचन.
हु अधनी लाकडीरे, रामने चोरी गयु कोण आज;
दैवे दुःख दीधु घणुरे, मैं शा कीधा हशे कुडा काज.
मुने मुकी क्या गयारे, आबो मारा राम कुवर सुकुमार;
मारी आज्ञा कोण पाल्यशेरे, कोण चलावशे राजवेहेवार.
वैदेही नया गइरे, सुदर चपकछी सुकुमार;
आबो मारी भावडीरे, मैं तने दीधु दुःख अपार.

हवे मुख नथी देखतोरे, लाडकवाया लद्मण वीर;
आबो ढाढ़ा दीकरारे, मान तन मन धन रघुवीर.
हे विधि ते जु कर्युरे, दुटी लीधु देखाडीने सुख,
आवु कोने थाय नहिरे, हाहा दैने दीधु घणु दुख
वाळक वाळपणेरे, मे पापीए काढ्या बन,
सुमत साचु कहेरे, क्या मुक्ती आव्यो प्राणजीवन.
क्या लगी सग कर्येरे, क्याथी तु पाठो आव्यो धेर,
रामे या जु कर्युरे, ते माढी कहे मुजने पैर.
सुमत थयो गळगळोरे, नेत्र सनळ यइ बोल्यो वाण,
महाराज मे घणु कल्युरे, पण पाठा न यळ्या पुरुषपुराण.
हु शृंगवेल सुधी गयेरे, त्रण दिक्षत लगी रख्या निराहार;
मुने पाठो वाळियेरे, गुद्यके उत्तार्या गगापार.
दक्षिण दिशा भणीरे, गगा उत्तरीने गया राम,
तमने घणा करीरे, रघुपतिये कद्या छे प्रणाम
शुणी एवु भूपतिरे, रउरउ लाभ्यो हुताशन,
गाढे स्वर थक्कीरे, राये कीधु शोक रुदन.
कठ मळीगयोरे, अग पठड़े अवनी माहे,
राम विनोगनोरे, अगे अग्नि लाभ्यो साहे
आरत नादवीरे, पोकार्यु राये रामनु नाम,
देह मुको दशरथेरे, प्राण गया कहेता हे राम.

वलण

रामराम रघुवीर कहेता, तज्या भूपे प्राणरे,
हाहाकार हवो तदा, सहु रुदन केरे निरवाणरे

रावणसाथे युद्धनुं वर्णन. राग सोरड.

जीतवा रावण रायने रघुवीर, चळ्या तेणीवारे,
सहु कपि तणो सरदार सुग्रीव, सै यनो नहि पारे.
हनुमत स्कधे राम चढिया, पाच शर ग्रही हाथरे,
जेम गरुडउपर श्रीपती, एम शोभता रघुनाथरे.

अगद क्षेरे स्कध वेठा लक्ष्मणजी तेणीवार;
 जेम ऐरावतपर इश शोभे नदीपर त्रिपुरार.
 विशाळ वृक्ष उपाडीने कपीए ग्रह्णा करमाहे;
 ते छत्र करता रामने नव पल्लव चमर खाहे
 जय बोलावी रघुनाथनी दल चाल्यु दक्षिण देश;
 चि.कार करता चालता गिरिसम कपीना वेश.
 भुभुकार नाद हुकार करता कूदता बळवान,
 करमाहे गिरि उठाळता, ते कुसुम गेंदसमान.
 केटला कपिये वृक्ष ज्ञाल्या केटला पापाण;
 केटला कर नख दत करडे करे महा बुवाण.
 जय जय धुनी कही गर्जता पद प्रहार ध्रुजे धर्ण,
 सिंधुजक उठुक्या सुरज थथो धुधक वर्ण.
 दिग्गज डग्याने शेप सळवयो भूमि न सहे भार,
 एम चाली सेना रामनी कहेता न आवे पार.
 जोजन दश विस्तार पोहळी कपी सेना जाय;
 मारगतणा पापाण तरु ते भागी भूको थाय.
 एक एकना शिर विषे पग देइ कूदता कपीताश;
 को पृथ्वी उपर हिडता को उडता आकाश.
 जयराम जयजयराम कहीने गर्जता महा थीर;
 एम कपि सेनासहित आव्या राम सागर तीर.
 दश योजनमा उत्तरी सेना सोर थाय अमीत,
 भुभुकार व्याप्यो दश दिशा सिंधु थथो भयभीत.
 ते खबर यइ लका विशे ज्या वेठो रावण राय;
 श्रीराम आव्या सागर तीरे लेइ कपि सेनाय.
 एवु साभळीने दशानन तव चमकियो मनमाहे;
 सभाविशे तेडाव्या सहु जे अविकारी त्याहे.
 इद्रजीत आदे पुत्रने यळी प्रहस्त आदि प्रधान,
 ए विना अन्य असुर तेडाव्या सभाभा देइ मान.
 ते सरवसाये विचारवा लाग्यो रावण भूप,
 भाइ आपणे हवे शु करवु ते कहो समे अनुरूप.

दशरथतणा सुत आविष्या उत्तर्या सागर तीर;
 कपी सैन्य ते साथे घणु हनुमतसरखा वीर.
 शत्रु तर्पने अभि-प्रण्ये नव गणया लघु एह;
 करे विम्ब ते क्षणमात्रमा माटे धीरिये नहि तेह.
 एक वानरे लका प्रजाळी अक्षे आदि असुर;
 ते हणी निरभे गयो पाढ्यो मब्यु कपीदल्पूर.
 तेमाटे पुहुँ सर्वने कहो हवे करवु केम;
 निश्चे विचार कहो सहु मुज कुशल याये जेम.
 एवा वचन सुणी रावणतणा पठे बोल्या पुत्र प्रधान;
 महा कोध आणो कहे वाणी करी मन अभिमान.
 अरे राय शु चिंता करो ए रामना शा भार;
 शु जुद्ध करशे कपी ए नर वानर आपणो आहार.
 रामलक्ष्मण मनुष्य वे करी तप थया क्रश काय;
 कपी भालु रीछ मरकट तेयकी शु थाय.
 आज दैवे भोकल्यु घेर बेठा भक्ष आपणु एह;
 तमे निरभे थइ रहो भूपति चिंता न करशो तेह.
 एम शकर्नीत अतिकाय देवातक नरातकनी आद;
 वजटिं महोदर करता घणो वकवाद.
 ते समे सभामा विभीषण बेठा हता ते ठार;
 रामनी निदा श्रवण सुणी जन थयो कोध अपार.
 एवा विभीषण जे विचक्षण तेणे सुण्यो असुर वचन;
 पठे सभामाहे बोलिया घणु कोध आणी मन.

वलण.

मनमाहे आणी कोध बोल्या विभीषण तेणी वाररे;
 ते श्रोताजन सहु साभळो करु सक्षेपे विस्ताररे.

राग विभास.

हे मुरख रावणे तुजने काळ्यो धनुष तळेथी जेणे;
 सर्व नृपनो दर्प हरीने कोदड भाग्यु तेणे.
 ते रामने तु सीता सोपी जइने चरणे लाग्य;
 करी वीनती दीन वचनयो अमेदान तू माग्य.

शरणागत वत्सल छे रघुपति नहि जुवे अवगुण तारा;
 माटे सुण रावण ए परम हितकारी बोल मानजे मारा.
 जेम अधीष्ठ कहु लागे पण टाळे मूळ रोग निरवाण;
 एम हमणां कठीण लागे मुज वायक परिणामे कल्याण.
 आ सरव मब्याछे कतुद्धि तमने करशे विपरित पेर;
 अल्या जाणी जोइने मुरख रावण शोद सापछे झेर.
 एम घणां वचन विभीषणे कद्दां ते नीतिनां जेणीवार;
 यारे प्रधान आदे इंद्रजीतने चटीओ कोध अपार.
 अल्या विभीषण तुं बोल्य विचारी डाहापण उपाण्यु तहासं;
 शुं करिये जों राजवंधु छे नीकर हयडां मारे.
 अल्या वाहालो थइने वेर वधारे जा तुं तारे घेर;
 जीवतो मुकिये जाणीजोइने नहितो हणिये ठेर.
 रावणने कहे जुओ तम वंधु केवळ कहेछे कुहुं;
 शत्रुनी पक्ष करीने बोले आपण इछे भुडुं.
 यारे कहे विभीषण तमे सर्व मज्जीने रावणने कर्यो धट;
 राज बोलवा वेठाठो उपजावी कतुद्धि स्पट.
 अल्या प्रधान रायने नियमे राखे गजने अंकुश एक;
 मंत्र नागने ज्ञान चतुरने ज्ञानीने विवेक.
 स्त्रीने दउजा साधकने गुरु समुद्रने मरजाद;
 एम रायने नियमे राखे निये प्रधान रहित प्रनाद.
 हवे तासं राज नहि रहे रावण निश्चे साचुं मान;
 तुने संगी सर्वे दुष्ट मब्या जेम ब्रकनी पासे शान.
 एवां वचन सुणीने रावण उठयो कोध करी निरधार;
 ढावा पगनी पाढू मारी विभीषणने तेणीवार.
 अन्या मुरख रामनी पक्ष करे तो जा तुं तेनी पास;
 बांयो मारो एवुं कहीने देखाड्यो बहु ग्रास.
 त्यारे तेणे समे मुकाब्यो आवी रावण केरी मात;
 अरे पुञ्च तुं राम शरण जा नहि तो करशे घात.
 यारे रावण कहे जा अहींयी तारूं नयी अमारे काम;
 चढावी लाय बे शीन्य जा शुं करशे तारो राम.

एवं सांभली विभीषण उठचा तत्क्षण तेणीवार;
 चार प्रधान पोताना संगे लोधा ते निरधार.
 रावणने कहे विभीषण तुं छे मारो भात;
 माटे तुज आज्ञायी अमो जाड़लु राम शरण साक्षात्.
 एवं कही विभीषण चाल्या लेइ पोताना प्रधान;
 जेम काया छोडो पंच प्राणते जाय नथा अवसान.
 कल्पाते महाभूत मछे जेम स्वरूपमां निरधार;
 एम विभीषण खांयी उठी चाल्या साथे मंत्री चार.
 जेम बायस केरा मेलामांयी उठी जाय मराळ;
 सळ निंदक केरी मंडळीमांयी उठे साधु दयाळ.
 एम चार मंत्रीगुं चाल्या विभीषण राम शरण निरधार';
 उरध पंथ उड्या पांचे जण आव्या सिंधु पार.
 शृङ्खली उपर उतरी उभा सेना तणे प्रदेश;
 पंचे राक्षसने जोइने भय पाम्या कपी अशेष.

वलण.

अशेष वानर भय पाम्या जोई राक्षस देह दीरघ घणी;
 पछे विभीषण कर जोहीने उभा करे विनति कपिवरतणी.

दाळ.

एवं विभीषणनां खचन सुणी यपा चकीत कपीवर मात्र;
 ततकाळ आव्या खबर कहेवा ज्यो छे शामलगांत्र.
 समुद्र काठे सभा करैने वेठा श्री रघुवीर;
 अष्ट ज्युषपति सुप्रीव आदे सुमित्री रणधीर.
 महाराज रावण तणो वंधु कनिष्ठ विभीषण जेह;
 अति दीन यइ करे वीनती तम शरण आव्यो तेह.
 एवं सुणी जोयुं सुप्रीव सामु रघुवीरे तेणीवार;
 विचार करी रघुवीर साथे नोल्यो अर्ककुमारै.
 ए रावणनंधु कपट करी अहो आव्यो होय आज;
 काँइ दगो आपणझुं करें त्यारे झुं करिये महाराज.

जांबुधान कहे प्रभु शरण आव्यो शुद्ध चित्ते जेह;
 त्यारे पोतानो तेने करोछो वर्द्द तमारुं एह.
 अंगद कहे ए बात खरी प्रण तेडाचो एने पास;
 एने बोलावी ल्यो परीक्षा पछी करो चरणनो दास.
 सुपेण कहे समो कठिण छे माटे करो विचारे काम;
 ए राक्षस रावण तणो वंधु आव्यो आणे ठाम.
 एम करवा मांड्या तर्क बहु बुद्धि तणे अनुसार;
 पछी शेवटिये करी गरजना व्यां बोल्या पवनकुमार.
 हनुमंत कहे हुं गयो हतो लंकामां एने घेर;
 आचरण शुभ छे एतणां हुं जाणु सरवे पेर.
 तमो असुर देखो उपरथी माहे परम साधु इष्ट;
 जेम कणस कंटकनुं भर्यु अंतर मधुर स्वादिष्ट.
 श्री रामचंदरे करी आज्ञा अंगदने निरधार;
 व्यारे तेढी लाव्या विभीषणने कर ग्रही तेणीवार.

युद्ध कांडमांथी.

राग बीलावर.

सभा करीने रघुपति बेठा पासे लक्ष्मण हनुमंत;
 सुग्रीव विभीषण पासे वेसाल्या ने राजनीति गुणवंत.
 श्री रामचंद्र छे चतुर शीरोमणि समरथ राजधीराज;
 राजनीतिनो धर्मज पाळे लोकतणा हितकाज.
 सुणो विभीषण जुद्ध कर्याविण रावण ते नहि माने;
 ए रामजी सीता नहि आपे माटे विलंब करीए शाने.
 त्यारे विभीषण, कहे महाराज सुणो कंइ धीरज मनमां धरिये;
 साम दाम दंड भेद करीने शत्रुने वश करिये.
 साम ते शत्रुने समजावी बात न्यायनी कहिये;
 कोइ शाणा पासे शीखज कहावी धीरज ग्रहीने रहिये.
 ते न माने तो दाम देखाढो करिये लालचथी लाचार;
 ते लोभ थकी वैर जाय बीसरो वश वरके निरधार.

ते दाम थकी वश थाय नहि तो करिये कंइ छळ-भेद
 ते माया जाळमां मोहज पामे शत्रु वश थाय चेद.
 एम कशी वातमां केद न आवे त्यारे देइये दंड;
 ते माने नहि पछे मारविना जे मुखलंपट लंड.
 सभा जोते जेम पेडित तेकी जुकिनु बळ धरिने;
 पापाण नीचे कर आवे ते काढिये कळे करीने.
 माटे साम भेद करीने समजावो रावणने निरधार;
 वष्टि वरवा मोकलो जे होय चतुर शिरोमणि सार.
 वायक एवां सुणो विभीषणनां राघव थया प्रसन्न;
 पचे सुग्रीव सामुं जोइने वोल्या प्रेमे हेत वचन..
 अरे सुग्रीव त्रुवो आपणा साथमां होय चतुर गुणवंत;
 ततक्षण तेने खोल्हो कहाडो जे जाणे कळा अनंत.
 लंकामां तेने मोकलीये शिष्टाइ करवा धीर;
 एकलो जळने पाठो आवे एवो छे को वीर.
 जेम हनुमंत सिंधु ओळंगी सीतानी शुघ लाव्यो;
 अनेक विस्त टाळीने वाटे रशी मुख उपर आव्यो.
 एम वटी करी रावणनी साथे तुरत आवे आ ठार;
 आपणा साथमां होय एवो तेने देखाडो आ वार.
 पछी सर्व परस्पर जोवा लाग्या वानर रहेता जेह;
 त्यारे विभीषणे दीठो वाळी पुत्रने अंगद बेठो तेह.
 जेम रत्नपरीक्षक खोल्हो कहाडे भारे हळबुं नंग;
 तेने जोईने विभीषण वोल्या सांभक्षिये श्री रंग.
 अंगदने मोकलो सर्वथा शिष्टाइ करया त्याहे;
 ए बळ लक्षण गुण संपुरण छे जाणे नीतिमाहे.
 जेम नवग्रहमां दिनकर तेजस्यो शत्रुमां सुदरशन;
 विषधरमां धरणोधर जेवो खगमां हरीवाहने.
 एम वानर भाहे चतुर छे अंगद निश्चे जाणो राम;
 विभीषणनां एवां वचन सांभक्षी हरख्या प्रूणकाम..
 पछी अंगदने आज्ञा करी पोते उठयो तेणीवार;
 रघुवरसनमुख कर जोडीने वचन वोल्यो निरधार.

मुने रावण साथे वष्टी करवा मोकळोठो ते ठाम;
 प्रभु एमा ते शु मुजने वत्ताव्यु भारे मोटु काम.
 महाराज रजा आपो तो वाढी लावु रावणने आहे,
 लका उखेडी उधी करीने नाहु सागरमाहे.
 त्यारे श्री रघुवीर हशीने वोल्या यश चित्तमाहे प्रसन्न;
 रावण पासे वष्टी करवा जा तु वाळीतच.
 जो माने रावण तो सारु कहेता नीति विचार,
 नहि तो जुद्ध करीने मारीशु अते ए निरधार.
 एवु साभळी अगद चाल्यो वदि रघुपती पाय,
 ओँचितो लकामा आव्यो वाळीपुत्र महाकाय.
 सभा करीने रावण बेठो खा आव्यो बळवत;
 अगदने जोईने सहु सभा खळ भळी शु आव्यो हनुमत.

बळण.

हनुमत जाणी भय पाम्या सरवे रावण डरायो मनरे,
 सभा स्थभ पुठे राखी अगद करी बेठो पुढासनरे.

राग आशावरी.

रावण केरी सभा मधे आव्यो वाळीकुमार;
 ते जोइ सहु भय पामिया करे माहोमाहे विचार.
 छन्न मुगट एके पाड्या वाळ्यु नगर हनुमत,
 वळी आ को त्रीजो वानर आव्यो दीसेढे बळवत.
 त्यारे अगद कहे अल्या परजन आवे मळवाने विख्यात;
 ते सभा मुरख जाणजो जे न पुठे आदर वात.
 एम कहीने रावण सनसुख बेठो वाळीतन,
 स्थभ पूठे राखीने कऱ्यु गोळ पुढासन.-
 रावणना करता उचे आसन बेठो यश्ने धीर;
 तृणमात्र लेखवतो नथी ए असुरने महावीर.
 त्यारे रावण हशीने वोलियो कहे कपी छे तु कोण;
 कोणे मोकळ्यो तु केम आव्यो सभामा निरवाण.
 वाळीसुत कहे दशाननने मुज नाम अगद आज;
 हु दूत श्रीरघुवीरनो आव्यो वष्टी करवा काज.

है सीता आपी रामने जो मळो लकाराय;
 मृत्यु तमाह उगरे ने राज नीरभे थाय.
 है दशानन आ देह पामी वरते निरमल मन;
 विस्तार पामे जगतमा जश तेनु जीवत धन.
 सदबुद्धिए सदविवेके धरिये ते अतर ज्ञान;
 सतपुरुषनो सग करीए टाक्कीये अज्ञान.
 नव कहिये कोइने दुष्ट पायक न करिये हेलन;
 सरवेनु रुदु चीतविये जैम सुखी होय जन.
 पराया गुणने वदिये वल्ली करिये परउपकार;
 आत्मा जोइए एक सहु करिये सारासार विचार.
 परनिंदा परहिंसा सुपने चीतविये नहि मन;
 परदारा परधन विश्वे चित नव राखिये राजन.
 सदगुरु वचन विश्वास धरिये राखिये सदभाव;
 सत्तसमागम नीत सेविये भवसिधु तरवा नाव.
 क्लेश काळ दुख आवे पण नव मुकीए स्वधर्म;
 यथा न्याये राज करिये राखिये शम दम.
 दया क्षमा उपरति शाति भक्तिज्ञान वैराग;
 आनंद सदविदा समाधी राखिये अनुराग
 विद्या धनतन रूप धौवन न करिये अभिमान;
 काळे करीने भोग सरवे नाश थाय निदान.
 कोइ समे महासुख पामीये थारे गरव न करिये धीर;
 कोसमे दुख दरीद्र आवे मुकीए नहि धीर.
 ते माटे ही लकापति मुज वचन मानो सख;
 रघुनाथ साथे करो प्रीति एज साच्ची मत्य.
 छे राम केवल गुणनिधि वल्ली दीन वस्तल एह;
 गुण दोष झारणागत तणा मन लावशो नहि तेह.
 माटे करो मैत्री सरलभावे धरी मनमाँ धीर;
 एक बाणने एक पलिव्रत एक वचन श्रीरघुवीर.
 ते माटे आपो जानकी करो रामसाथे प्रीत;
 नीरभे थकी वरतो पछे भोगबो राज अमीत.

एवा विचन सुणी अंगदतणाँ बोलियो रावणराय;
 अल्या कपी हुं सर्वज्ञ हुं मनै शी करे शिक्षाय.
 घणो रामनी मोटम करी नुं वरताणे शुं कीश;
 पण त्रिभुवनमां मुजसमो कोण छे बळियो ईश.
 मैं वैर वांधुं राम साये लाव्यो सीता नार;
 हवे जइने हुं मळुं तो करे सहु धिकार.

कहेशो छन्यो ए रामथी जइ मळ्यो रावण राय;
 जो पश्चिम उगे सूरपण कपी काम ए नव थाय.
 जैम दंत गजना नीकळ्या न चोटे फरी ठाम;
 मैं वैर कोधुं राम साये शीशा साटे काम.
 जैम रूपणधन भोरीग मणि सिंहमुछकेरो बाढ़;
 तै जीवता कर नव चढे एम जाणजे कपीबाळ.
 जइ कहे तारा रामने करगेरे नहि थाये काम;
 हुं जीवता सीतातणुं मुख देखशो नहि राम.

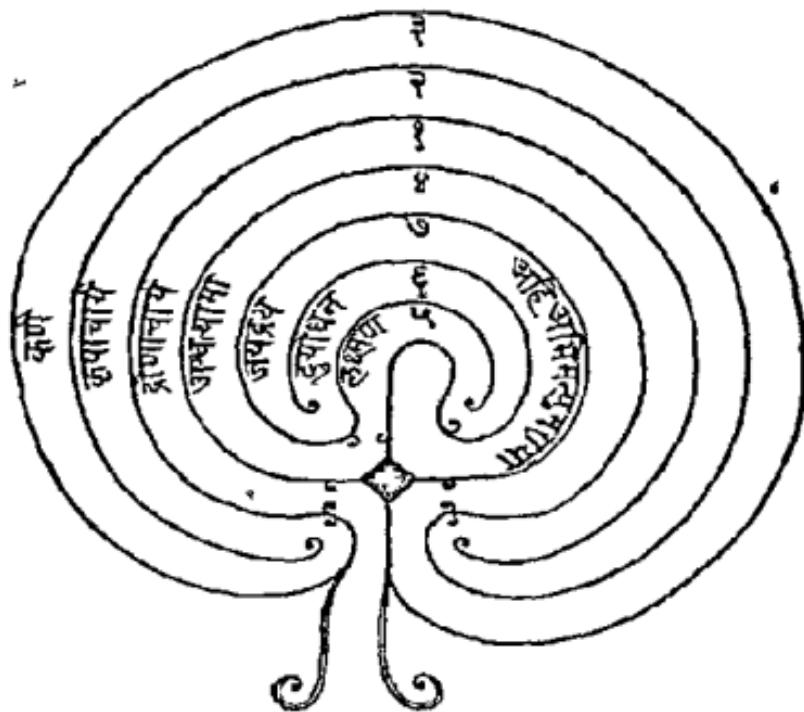
वलण.

एम नहि देसे मुख सीतानुं हुं जीवता निरधारे;
 एवां वचन सुणी रावणतणाँ पछे बोल्या वाळीकुमारे.

Bhupratog

कवि लङ्गनाराम.

अमदावादनो ओदिचब्राह्मण.



अभिमन्युना आख्यानगांधी.

पाडवो दुर्योधन साथे जुगडु रमता राज्य वगेरे वधु हार्या पछी
छेलो ठराव एवो कर्पो के १२ वर्ष वनमा रहेबु अने १३ मु वर्ष
गुस रहेबु. जो १३ मा वर्षमा कोइने मालूम पडे तो बब्ली बीजी वार
तैटला वर्ष वनमा रहेबु. एवी सरतमा पण हार्या एटले वार वर्ष सूधी
वनमा रह्या अने तेरमे वर्षे वेश बदलीने वैराट नगरना राजाना दर-
वारमा कोइ ओळखे नहि तेवी रीते रहेयानो विचार कर्यो ते विषे.

कडबु ९ मुं.

वैशापायन एणी पेर वोल्या, शुण जनमेष्य राय;
विस्तारी तुजने सभलागु, भारतनो भहिमाय.

अर्जुन वाणि बोलिया, साभलो धर्मकूमार;
 तमेज कहो क्यम छाना रहेशो, त्रण लोकमोशार.
 देश देशना राजा आवी, नमे तमारे पाय;
 तमे कोइने नव नमी, अनन्त्र तमारी काय.
 धर्म वाणी एणी पेर बोल्या, साभल्ये अर्जुन;
 मैं भारि जे वात विचारी, तमने कहु वचन .
 ब्राह्मण क्षत्री वैश्य वर्णने, उपवीतनो अधिकार;
 ब्राह्मण वेश धरीने रहीशु, राजसभा मोशम्भ.
 सर्व लोक ते मुजने नमशो, दउ सउने आशीश;
 मुज शिर अवरने नहि नमे, मैं पूज्या श्री जगदीश.
 कक नाम प्रसिद्ध हु कहानु, रायतणु मन रखु;
 मन गमती त्या कहु धरता, सभाराड हु भञ्जु.
 एणी पेरे हु दिवस निर्गमु, ताहु दुख अर्जुन;
 रथे वेसारी लाड लडाव्या, सारथी देवकीतन.
 शीशा नथी नाम्यु तै कोइने, एक विनां भगवत्;
 पराधीन थइ पेटज भरवु, ए दुख नाव्यो अत.
 वचन सुणी बडबीर तणारे, कहे अर्जुन सत्य वाणी;
 धर्मधुरधर दुख न आणो, समर्थ प्रभुने जाणी.
 वर्ष एक त्या वैयडळ थाशु, सगीत विद्या जाणु,
 वैराट रायनी पुत्री भणानु, विद्या सर्व वस्त्राणु.
 भीम अर्जुन मछीने बेठा, बोल्या माहोमाही;
 वहु अहारी ठे भीम महा भड, कहो ते रहेशो क्याही.
 अठक बोलो क्याइ गमे नहि, सासे नहि एक बोल;
 पराधीन थइ पेटज भरवु, नहि बळ बुद्धि तोल.
 वात करे ने सामु जुए, वृक्षोदर रह्यो विचारी,
 आगळ आवीने बोल्यो, चिंता वात करोठो मारी.
 वहु अहारी जे कहोठो मुजने, ते मनमा नव धरशो,
 सुखे दाहाड़ा अमे निर्गमु, चिंता कोइ न करशो.

प्रभुये उयारे वेळा पाडो, सघङ्कु क्यांथी सुख;
 दुर्योधने पुठ नमेली तो, अद्वी बेठिश भुख.
 वैराट रायनो याउ रसोइयो, अन्ज सर्व यां राखु;
 सजने जमतां शेष रहे, ते अन्ज नमुं हुं वाखु.
 ए रिते हुं दिवस निर्गुं, चितातुर न थाशो;
 घंडो घडानो ठामज करशो, पेट भर्येशो साँतो.
 भीम भंड कही रद्धा सांसता, तब पुछया सहदेव;
 तमे कहो केम छाना रहेशो, पर घेर करवी सेव.
 वण पुछे कोइने नव कहेवुं, एह लोक शुं जाणे;
 माया पाली मात न पीरसे, तम दुःख को उर आणे.
 विमासीने कहो गति मननी, पराधीन थइ रहेवुं;
 भुख तरशा ने सुख दुख सहेवुं, वचन कवचन वहेवुं.
 एवां वचन शुणीने बोल्या, सहदेव तेणीवार;
 जे रीते जगदीश राखशे, विश्वतणो आधार.
 एक अमो मन धात विमाशी, ते तम आगळ कहिये;
 जे रीते सुखे दिन लइये, चरण तमारे रहिये.
 वण पुछे उत्तर नव देवो, ते एहज काम करीशुं;
 जोश विचारं गौधन चारं, एमज पेट भरीशुं.
 वंध्या प्रसव वृपभ चिन्ह जाणु, वण मागे वृत्ति आपे;
 कहीश गोप हुं पांडव केरो, गोपालक करी यापे.
 सहदेव कहीने रद्धा सांसता, कहो निकुञ्ज शी पेर;
 गति तमारि कोइ नव जाणे, जड रहेवुं पर वेर.
 पर भूमि पर भूपति आगळ, परगमतुंज कहेवुं;
 पर ओशियाळे पेटज भरवुं, परने दिल न देवुं.
 विनय वचन शुणीने बोल्यो, निकुञ्ज वचन महाशूर;
 शामाटे दुःख मार्ह आणो, तजुं कठण गति कूर.
 मन शुद्धेयो सेवा करशुं, जेवो तमने गमशो;
 तमे जाणो सदा सुखी तन, एवहुं दुख वयम खमशे.
 विकट अश्व हुं कर पाधरा, खरा खेलवी जाणुं;
 अश्व शास्त्र आवडेले मुजने, हुं शुं आप चनाणं.

तुरी तणाजे सळव रोग हे, औषध एनां करशु;
 वैराट रायना घोडा फेरवु, एणी पेरे पेट भरशु.
 एवु काज करीशु भाइ, जेम कोइ नव जाणे;
 दैव तणी लो गति कठण हे, दैव दया नव आणे.
 समाधान सतोखी वेठा, निकुळ तेणीवार;
 धर्म तणु मन विस्मय पाम्यु, उपन्यो वळी विचार.
 दुपदिने देखीने राजा, आणे आंसुपात;
 घडा जेवहु माणेक माननी, कथम रहे छानी जात.
 पुरुष तणी सउ वात पाधरी, ज्यम अम करी निर्वेशे;
 परभूपतिवश पडी प्रेमदा, कोइ पेरे दिन लेशे.
 अप्पी अणद्धता अळगा रहीशु, नहि बोलाये वाण;
 कार्दप कोटी कळा कामनी, मुख शोंभा शशि भाण.
 • ते दुखमाहे वळी दुस मोठु, छानि केम रहेशे.
 सुजे तेम कहे लोक वहिसुख, कपट बोल केम सहेशे.
 एवु जाणी दुखज आणि, मुख्यो मुख निश्चास;
 नयणे धारा निरखी राणी, वाढ्यां रायनी पास.
 कर सपुट करी उभी नारी, केम थया उदास.
 दासिरुप थइने रहेशु, सैरिंघी मुजनाम;
 राणीने शणगार पहेरावु, कर एटलु काम.
 एवु शुणीने पाचे चठचा, पाहु तणा कुमार;
 शब्र आकारे शमिये वाढ्यां, आयुद्ध तेणीवार.
 केडा मेरे चाली आढ्यां, पुर वैराट मोझार;
 अळता थइने त्यां रद्दां, तेनो कोइ न जाणे पार.

साढी.

जे पुधिटिर पङ्क करी, दिधा कनकनां दान;
 ब्राह्मण थइ आशिश दे, रुठचा त्यारे भगवान.
 निकुळ घोडा फेरवे, सहदेव चारे गाय;
 भीम उदरने कारणे, रबो रसोडामांय
 चद्र सूर्यने वश करे, नाम जेनु पाचाळी;
 दासि थइ दिन निर्गमे, वेळाये हृद चाळी.

सकळ उत्रपति वश कर्या, जीयो जराराध राय;
नर फीटी नारी थयो, कर्मगति कहेवाय.
सुख केडे दुःख पामिये, दुःख केडे सुख होय,
तरखा दिन आवे नहि, वृक्ष ठाय सम जोय.

त्रणतालनी चौपाई.

वैश्वपायन बोल्या वचन, शुण जन्मेजय राजन;
त्यार पुठे निपन्नु जेह, तुजने सभलावु तेह.
वैसटपुरमा पाढव रद्धा, हुपदी सुद्धा सुखिया थया;
दूत कौरव केरा जेह, हाँडे पाढवने खोळता तेह.
दुर्योधन मन हरख अपार, राजे हस्तिनापुर मोक्षार;
सभा भरी बेठो राजन, हरख वाध्यो पोताने मन
भीष्म करण द्रोण पावन, अश्वत्यामा आदि महाजन;
सुभट शकुनि ते ला होय, शत भ्रात पोताना सोय.
देशदेशना राजा जेह, सभामाही बेठा छे तेह,
जोइ सभा हसख्यो राजन, एवे आव्या नारद मुन.
दूर धकी दीठा जेटले, प्रणम्यो राय जइ तेटले,
अमपर रूपा करी महाराज, घणे दिवसे पधारी आज.
बळती बोल्या नारदमुन, तु तो साभळरे राजन,
मास सात तो वहीने गया, समाचार तें तो नव रुद्धा
वर्ष पुरुष एक ज्या थशे, छता थइने पाडन आवशे;
सभा जोइ शुरीझ्यो आज, लेशे वेगे तारु राज.
भीम भड सामो कोण भडे, सेना तारी तो रुडवडे;
अर्जुन शुलेशो कोण राड, एवो जोद्धो एक देखाड
निकुल सहदेव धनुष सहाय, छे कोइ जोद्धो जे सामो थाय,
ते माटे तु गर्व मा आण, देख सेन तारु निर्वाण.
मेळी धाडे तो न सरे कान, खोइ वेसशो वेगे राज;
शुणी नारद केरा वचन, जुए सेन पोते राजन.
चेत चेत कहे नारद मुन, तु तो दुर्योधन राजन;
जोवरावो जे छे किये गाम, तो तो थाय तारु काम.

फरि भोगवे ते वनवास, सुखे राज करो आवास,
 तेणे सेव्या छे भगवान, गाझ्या नव जाय ते राजान.
 कदी रहे जीवता ते राय, दीवस चार वेगे वही जाय;
 खोल्ही कटावो करीने भाल, नहि कर जाणजे तारो काल
 पोतानो माटे तुजने कहु, नहितर मनमा जाणी रहु;
 एम कही पाम्या अतरधान, पळ्यो विचारमा राजान.
 हवे करु तेना उपाय, जे यकी तेओ प्रगट थाय.

टाळ.

वैशापायन ईणी पेर बोल्या, शुण बन्मेजय राय;
 खार पुढे जे नोपन्यु, हु कहु तेनो महिमाय.
 राजा वल्तो बोलियो ते, हरख धरिने मन;
 कर ग्रहीने गिडु मुकियु, सभामाहि राजन.
 को ढे लेनार तेहनो, पण पाकीने जाय,
 पाढव केरी सुद्ध रइ आने, सभा माहरिमाय.
 राज तेहने अद्दु सोंपु, हय गज रथ कहेवाय;
 नरपति सधका रघा निहाली, कोइ न वेठो थाय.
 गिडु लइने बधे पेरव्यु, को न करे उचो हाय,
 करण वादिक योद्धा बेठा, मब्दीने सर्वे साय.
 एवामां जीमूतै आव्यो, ज्या वेठो छे भूप;
 भीम समान पराक्रम बलियो, तेवहु तन स्वरूप.
 आवी उभो रघो आगळे, नृपने नाम्यु शीशा;
 कोना उपर धर्मु ढे गिडु, राय चढावी रीशा.
 मल्ह केरा योल्य यकी, ते हरख्यो रथ अपार;
 कटक मारामाहे जोद्धो, तुझ दिसे सार.
 शुभु पाढव गपा महायन, वर्ष वही गपा चार;
 नट चरचा जइ रघा ढे, कोण देश मोझार.
 छुता थाय न्हो सम यकी तो, निर्धन कीने रान;
 तेर पराग तुन भोगवे भट्ठी, सरे अमाव फान.

कहु रायनु शुणि महामल्ले, अहियु वीडु पाण;
 कठ भीडीने उभो रहो चढी, उचर्पो मुखथी वाण.
 गुफा गिरि शोधु नवखडे, नगर परा ने गाम;
 सरोवर सरिता सिंधु शोधु, अगम्य अगोचर ठाम.
 राय अति रचियात थयो, जय सुणिया भल्लवचन;
 विश्वास तारो छे मुजने, मान्यु मारु मन.
 तु निशे एनी सुध लावीशा, वीर वहेलो जाय;
 वहु पसाय करी शिख दीधी, चलावियो क्षणमाय.
 अबनितल्ल पड साते शोध्या, आव्यो अघनीमाय,
 पश्चिम दिशमा परवर्येनि, जीत्या राणा राय.
 उत्तर दक्षिण पुरव चाल्यो, अनत् पुथे एह,
 पर्वत पोटा राय नीतियो, अभग कहावे देह.
 सघब्दी घृथ्बीमध्ये पेख्या, नगर देश परमाण;
 उदयाचल्थी अस्ताचल, जहा लगी भोगवे भाण.
 एम फरता आवी कीधो, वैराट विशे विश्राम;
 एकाते रही लोकने पुछ्यो, पाडवकेरो ठाम
 पछी पुरपतिने जइने मल्लियो, कीधा मुख वचन,
 देशे देश विशे हु फरियो, जीत्या कइ राजन. ।
 एनु सुणिने राजा बोल्यो, तें कहियु ते सव्य;
 भूमि भड सर्वे जीत्या, बोहोतेर देश अधिपत.
 क्याहा बसोछो कोने शरणे, कहो तमारु नाम,
 पृथ्वी सकल वज्ञो तु खोल्दी, कोण सगाते काम.
 मल्ल जीमुत नाम माहरु, धर्म विडु मैं पाण;
 पाहूतन बन गुप रह्या छे, नष्ट चरन्चा जाण.
 दुर्योधन मुख वचनशुणी मैं, जीत्या बोतेर देश,
 कही न लाध्या मुजने ते तो, जोइ तुज सभा नरेश.
 हार्पो कहे तो पुतल्लु आपो, नहि तो तु कच्छ बाल;
 सभामाहीयो बोल्यो सौळो, बोलताँ मुख सभाळ.

मुझ संघाते प्रथम लड़ीने, महावल तुज देखाड़;
 अबर मल्ह छे पोढा ते शुं, मल्हीने करजे राड.
 एम कहीने धाइ वळग्यो, मल्हने ते जोध;
 उंट कोटे अजा बाझी, करी शके शुं कोध.
 घडी वेघडी जुद्ज कीधुं, झुंच्यो रुंच्यो तेह;
 पछी पकड़ीने भिड्यो तेने, कचर कीधो देह.
 वळती राये कंकने पुलशुं, शि करवी हवे पेर;
 बोतेर तेम आपणने जीत्या, वधायुं ते शुं वेर.
 एवुं शुणीने कंकस्पी कहे, तेडाव्य वालुओसार;
 कोठार तारा कीधा खाली, नित करी वहु अहार.
 तां वैराटे कल्हुं रुग्निनी, ए शुं चोल्या आप;
 पर भूमिमां वात जशो, परोणावे मराव्यो साप.
 एम कही मोकल्हियो सेवक, वालुआ केरी पास;
 तमने नृप वैराट तेडे एक, मल्हने करवा नाश.
 कहेतां ते ततखेव उठियो; घडो वृकोदर वीर;
 मुख पस्ताल्ही पाघ बांधी, पींधुं शीतळ नीर.
 जीमुत केरु नाम सांभळ्युं, चढियो कोध अपार;
 वेगे धाइने आवियो ते, राजसभा मोशार.

सामेरी रागनी चोपार्द.

वीरसभा भणी सांचरियो, शिसे पृथ्वी उपर पग धरियो;
 रखे वे पड याये एक, भूमि भार लागेछे वशेक.
 चाली सभा सगीपे आव्यो, राय वैराटने मन भाव्यो;
 महामल्ह ए प्रीढज दीरो, रार्वे सभातणुं मन हीसे.
 अंख्यो दितोछे वन्हिसमान, तन मेथ छे शामलवान;
 वीर भुजा दंड भला सोहे, कर चरण देखी मन मोहे.
 भला योद्ध रथ्या वळ कळीया, वीर आवी सभामाहे मळीया;
 आवी कंक पाये शिर नाम्युं, पछि जोयुं जीमुतना साम्यु.
 आ योद्ध ते व्यांधकी आव्यो, व्यांधी पूतवां वांधी लाव्यो;
 सारे वैराट राय एम बोले, नयी बळियो कोइ एने तोले.

एणे वोतेर देश वश कीधा, जितीने जश मोटा लीधा;
 पछ्यी आणी सभाए पधार्या, कैयो कीचक मोकम मार्या.
 देश जोवा दुर्योधने मोकलिया, एने पांडव कहिं नव मळिया;
 तेने मळ हाँडेचे जोतो, मोटा महीपतिनी पत खोतो.
 एवुं सांभळतां चढी रीस, पगथी ज्वाळा लागी शीश;
 तुं तो घणे ठामे जीती आव्यो, व्येम अहींयी जाइश फाव्यो.
 पगे पुतळां छोडी नंखावुं, कहेशे बीजीवार नहि आवुं;
 ल्यारे जीमूत बोल्यो वाणी, भड तारी वात में जाणी.
 घणीवार तुं आप वलाणे, मळ निवा ते तुं शुं जाणे;
 घणुं खाइ तें तन वधायुं, ते तुं जाणजे सुख पधायुं.
 आवो उभो रघो शुं त्राडे, शुं महीष आव्यो छे भाडे;
 अमे जोध मोटा वश कीधा, मोटा राय जीती यश लीधा.
 कैया कीचकने पुछो वात, जेणे दिठा छे मारा हाथ;
 तुं अण विधाणो शुं जाणे, हजी हाथे तुं न चढ्यो आणे.
 वकारतां तो वीर रीसाव्यो, हो हो कहीने ते सामो आव्यो;
 हाथे मुठिका ग्रही मुकावे, मुखे फोशिया कही बोलवे.
 मळे लीयुं दुर्योधन नाम, वालुओ कहे वैराटनुं काम;
 एम कहेतां बेड भड भडिया, घट कोठे कोशीसां पडियां.
 पग प्रहारे एव्ही भ्रुजे, उडे रज रवि विव न सुझे;
 गडदा पाढु कोणी वाजे, ते देखी कापर चित भाजे.
 माथा मेंदा वणी पेरे मारे, मरडी भागतां कांइ तजगारे;
 जाणे जेम गज मत्त आफळिया, लोक जोवाने टोळे मळिया.
 भड वटतां जेनी दिशा जाय, भाजे लोक नाशानाश थाय;
 वाजे ढोल निशान वे पास, तेनो शब्द गानेचे आकाश.
 वटतां वीर वालुओ वाव्यो, मळ जीमूतने ताणी वांध्यो;
 भीमे कीधो मनमां विचार, हवे मारं एने आ ठार.
 एम कहीने भेलीने दोठ, शाली मळतणी तो कोठ;
 माथे फेरवी भूमि पछाडे, वळतो आखला आकारे त्राडे.
 मळे विचारियुं ते ठाम, आ तो भीमतणुं छे काम;
 भोत मारं छे एने हाथ, एम विचार्युं रुदया साथ.

हवे प्रगट लेउ एनु नाम, मरतां कह एठलुं काम;
 ए तो पाढो भोगवे वन, राज.भोगवे दुयोधन.
 एवुं जाणीने बोले ज्वारे, भीमे शाळ्यो तेने गळे खारे;
 भकार मुखथी निकळ्यो उच्चार, मकार भूलि गयो तेणीवार.
 पछे वाळुए कीधुं काम, महू मारि नाख्यो ते ठाम.

दाळ.

ठाम ठाम ते वातो चाली, वेगे तेणीवार;
 हस्तिनापुरमा जइ सेवके, काहियो सर्व प्रकार.
 अनुचर चार दिशाथी आव्या, तेणे सुद्ध कही सारी;
 पांडव अमे न जाण्या कहिं, पण सांभळ वात अमारी.
 वैराट नगरमांही हवो छे, एक मोटो उत्तपात;
 जीमूत भल्ड भार्यो महामल्ले, एकजणे सांक्षात.
 शुणतां दुयोधन चमक्यो, पांडव काम प्रमाण;
 घडवयो वीर कटक सज कीधुं, वजडाव्या निशान.
 भीम वण जीमूतने कोण जीते, शत कैचक रण मार्या;
 शुं करिये वर्ष थयां पुरण, देवे दीन न उगार्या.
 हवे यां जइ गोधनवाळु, करिये एह प्रकार;
 पांडुतनं ए पतैन हशे तो, मुकावे निर्धार.
 सेन लइ दुयोधन आव्यो, वैराट केरे गाम;
 पछी तेहनी गायो वाळ्यि, कीधुं मोटु काम.
 चार वरजाथी अधिक कहावे, पुरुष जे फहेयाप;
 सठको राजा साये चाल्या, संग्रामे ते जाप.
 फँक मधिने वाळुआने, तंतीपौल गोकर्ण;
 सठ कोने संघाते लीधा, जेना स्टां आचर्ण.
 सेन लैइने राजा चाल्यो, शोधी वीर्या सार;
 नरपतिनु गोपन मुकार्यु, वाळुए तेणीवार.
 पुर्व दिशाथी गोपन वाळ्यु, वाळि दुयोधन राप;
 राजकुंबर लइ यारे धायी, अर्जुन व्यंक्त काप.

धनुष वाण करमाही धरीने, कीधु रुहु जुद्द;
 गोथन मुकाबीने आव्या, नगर वात थइ शुद्द.
 कुवरने अर्जुन केहेठे, न लहश माह नाम;
 दिवस हवे थोडा रहेवु ठे, अमारे तारे गाम.
 राजकुवर आविने नमियो, पिता केरे पाय;
 ओवारणा लीधा माताये, हइडे हरख न माय.
 एम करता ते वात विती, दिन पुठे दिन जाय;
 चरश एक परिपुरण थयु ने, रीझ्या रुदया माय.

राग सामरी.

बैशंपायन बोल्पा वचन, सुण परिक्षत केरा जन;
 खार पुठे निपन्यु जेह, तने कही सभवावु तेह.
 वरस एक खा पुरण थाप, पछि विचारीयु मनमाय,
 एवे निशा पडी छे ज्यार, उठचा पाचे पाहुकुमार.
 साथे तेडी श्रीपदी नार, आव्या कोटकने निर्धार;
 पठे निकल्या नगरथी बहार, आव्या शमी बृक्षने ठार.
 ध्यान ईश्वरनु धरी मन, आयुध उतयाँ पावन;
 पेरो वस्त्र ने तत्पर याय, एने उलट अग न माय.
 काने कुडल हीरे जडिया, तेना मूळ न जावे गणीया;
 कठे मुक्काफळनी माळ, दीसे ओपती शाक झमाळ.
 हीरा साकल्लीने सोना दोरो, केडे बाध्यो सुदर कदोरो,
 पौच्ची जडीत्र सोना साकल्लिये, वेट विटियो छे आगल्लिये.
 पहेयाँ आभरण ओपता सार, उपर गाधिया छे इधियार;
 भाया भिडिया छे कटिसाथ, धनुष गदा ज्ञालिठे हाय.
 सुदर किधो चोतरो एक, माडी पाटच खा करी विवेक;
 विजया दशमी केरे दन, कीधु शमी तणू शूजन.
 पडी जोइने शुभ लगन, पट्टाभिपेक कीधो राजन;
 अर्जुन धरे शिरपर ठत्र, देवता वजाडे वाजित्र.
 राज वेठा युधिष्ठिर राय, पुष्पवृष्टि करे देवताय,
 वन नष्टचर्पा पुरि याय, सौने उलट अग न माय.

एटले गोवाळिया सा आव्या, चारवाने गोधन लाव्या;
 सुभट वेठा दीठा ज्याप, त्रास पामिने नाठा वाप.
 दोळ्या राजद्वारे आव्या, राजा वैराटने जगाव्या;
 करि भजरो ने वोल्या वात, राय सम्भळो ने साक्षात.
 कक व्यडल ने पाककार, तत्तीपाळ गोकर्ण ने नार;
 ए तो तमारे घेर हता जेह, वनमा राजा यइ वेठा तेह
 छुत्र चामर ठोळे वाय, एवो नव दीठो कोइ राय;
 वेठा आयुद्धधारि ते योध, कळो एवो एणे प्रतिबोध
 एवी वात ते साभळी ज्यारे, राजा विस्मय पाय्यो खारे;
 खारे कुवर तोल्यो वाण, राजा प्रख्ये जोडी पाण
 ए तो पाडव कहेवाय जेह, हता आपणे घेरज तेह;
 मायें जीमूतने तो ठाम, ते तो भीमतणु छे काम.
 कंक सूपि युधिष्ठिर राय, व्यडलरूप अर्जुन कहेवाय;
 निकुळ तत्तीपाळ ततरेव, गोकर्ण थया सहदेव.
 सैरभी हुपदीनु नाम, सेवक यइ कयाँ छे काम;
 कीरवे गायो वाळि ज्यारे, तेतो वारे धाया खारे.
 नहितो महारू ते त्या शु जोर, केम मुकाबी लावु ढोर;
 एवी वात ते साभळी ज्यारे, राजा वैराट उठचो खारे.
 दडवत करतो चाल्यो धरण, जइने साहाया रायना चरण;
 मस्तक मूळयु जइने खोळे, वचन दीन धइने वोळे.
 हु तो उजो तमारो राफ, क्षमा करो अमारो वाक;
 नव ओळख्या मारा र्वाम, सेवक जाणी कराव्या काम.
 द्यारे वोल्या युधिष्ठिर राय, धन्य धन्य तमने कहेवाय;
 अमो रघ्या तमारे घेर, सुरा पामिया रुडिपेर.
 वार चरत तो काळ्या वन, एक चरत तमारे भवन;
 हवे पुरण ययो वनवास, ईश्वर पुरझो अमारि आळ.
 माटे जाभो तमारे घेर, सुरा पामजो रुडिपेर;
 एवी वात ते सांभळि ज्यारे, राजा वैराट वोल्यो खारे.
 दासपणु कराव्यु तमने, मोटो दोप वेठोळे अमने;
 माटे गुण ओळिकळ याड, मारी कन्या आपी घेर जाड.

उत्तरा कुचरि आणी जेह, मुकी अर्जुनने खोले तेह;
 व्यारे अर्जुन बोल्या वात, राजा साभळ तू साक्षात.
 पुत्रिने में भणावी सार, माटे केम करू अगीकार;
 ए पुत्रि नहि परणीए अमो, एक वात कहुं मानो तमो.
 सुभद्रातन अभिमन्यु सार, तेने परणावो ए नार;
 एवी वात ते साभळी ज्यारे, राजा वैराठ हरख्यो व्यारे.
 हांजी राय ए कारज करो, पुत्रि मारी ए वेरे वरो;
 अभिमन्यु वेरे विवा कर्यो, श्री फळ रूपैयो करमां धर्यो.
 जय जय शब्द बोल्या ते ठाय, त्यार पुठे शु कीधु काम्
 पृथी जन तेडीने अभिमन्युने परणांयो।

दाल.

अभिमन्यु परणि उठायाने, वर्णो जेजेकार;
 जन्मेजय नृप साभळो हवे, पठिनो कहु प्रकार.
 युधिष्ठिर कहे वैराठने, तमे सांभळो महाराज;
 उत्तरा कुचरी तेढावशु ज्यारे, अमे वैशिश्व राज.
 एम कहीने पांडव चाल्या, हस्तिनापुर भोशार.
 वार दिवसमा फरीने आव्या, क्षणु न लागो वार.
 आवी वाढिमा उत्तरिया, पाहु रायना तन;
 तेणे समे समारिया त्या, वसुदेवना नदन.
 युधिष्ठिर कहे कृष्णने, तमे जाओ दुर्योधन पास;
 विटी जइने करजो वेगे, बोल्या मुख प्रकाश.

(कृष्णे जइने दुर्योधनने कह्यु के)

अर्द्ध राज्य जे एनु छे ते, एने आपो सोय;
 एना वापनु राज भोगवो, मन वीमासी जोय.
 (दुर्योधने कह्यु के सोयनी अणी जेटली पण पृथ्वी आपु नहि
 एम करता जो मागे करगरी, आपु गाम वे चार;
 पण कत्री वटयी पृथ्वी नव, पासे पांहु कुमार.
 आटला दाढा वन रडवडिया, क्यां गइ हत्ती सगाई;
 वटशु के वेचीने लेशु, ए छे अमारा भाइ।

कृष्ण खाँथी परंवरिया, ज्यां पांडु रायना तेन;
वद्या विना पृथ्वी नहि आपे, राजा दुर्योधनं.
युधिष्ठिर कहेछे फरिने, जाओ करो एटलु काम;
पांच गामडां अमने आपे, रेवा केरो ठाम.

त्यारे बोल्या भीम भड तमे, एसुं बोल्या चार;
एम आपणी बुडी बावली, कायर थया अधीर.
कइकतणी रांडो रंडावुं, कइ भागुं घर सूत्र;
दुर्योधनने उभो गळुं तो, पांडु रायनो पुत्र.

कृष्णनो वस्ती सफळ थइ नहि ने लादाई चाली.

कुरुक्षेत्रमां युद्ध मंडाणु, क्षोणी कटक अदार;
सात क्षोणी धर्मकने, अधर्मांकने अगियार.

दश दहाडा तो युद्ध कर्युं छे, गंगा केरे तमै;
पांच दहाडा द्रोणे वल्टतुं, युद्ध कर्युं पावन.

त्रण दाढा तो गया द्रोणना, निपन्यो कोण प्रकार;
चक्रव्यूह रचना कारे बढियो, अर्जुननो कुमार.

अेषामां अेक भीजु वात थर्ह ते अे डे.

राग सामेरी.

आवी ब्राह्मणे कीधो पोकार, कोइ क्षत्री करो मारिवार;
अमने रेवाने आपो ठाम, एह दुष्टनो फेडो ठाम.

व्यारे कृष्ण लां बोल्या बचन, कोण दुष्ट छे ते राजनं;
जालंधरनुं लीधुं नाम, कोप्या अर्जुन तेणे ठाम.

मारी दुष्टनुं तोडुं गाम, कर्ह ब्राह्मण केर्ह काम;
कृष्ण ने अर्जुन बे गया, समाचार दुर्योधने लहा.

दुर्योधन कहे साधु काम, अभिमन्युने माह ठाम;
संजय शकुनी विटिये गया, जुधिष्ठिर पासे जइने रहा.

कहे जीतो चक्रागढ पास, नहीकर जाओ पाढा बनवास;
राजाये अर्जुन पुछिया, गया सांभव्यी विस्मय थया.

वाणे तो जुद्ध करशु सही, एवुं परठीने उठिया तर्ही;
राये तेजाव्या त्रणे भात, पासे बेझाने पुच्छी वात.

सहदेव कहे अविधार, मैं जोग्यणी जीती संसार;
 जाणु चरे वेदना भेद, चक्रागढ नव्य जाणु छेद.
 त्यारे बोलिया निकुळ वचन, सांभव्यो युधिष्ठिर राजन;
 पूर्व पडने पश्चिम करु, पश्चिम पडने पुरव धरु.
 कोठा सात तणो जे धर्म, नव जाणु हुं राजा धर्म;
 तत्क्षण भीम भहा भड भणे, शीव जीत्या मे पराक्रम घणे.
 गदाये करी पाडु ब्रह्मांड, चक्रागढ नव जाणु खंड;
 दुर्योधनने उभो गङ्गु, पृथ्वी बाधी परले करु.
 कोठा सात तणो जे धर्म, नव जाणु हुं राजा धर्म;
 त्रणे भाइ एम कही रह्या, राय युधिष्ठिर दुखिया थया.
 हवे शो करवो उपाय, जोकातुर थइ बेठा राप;
 चिंतातुर थया जेटले, अभिमन्यु आव्यो तेटले.
 उठी कुंपर सभा संचरे, पग मुके धरति यरयरे;
 चाली सभा मध्ये आवियो, मान दइ नव बोलावियो.
 सउको नीनु निहाळी रह्या, आवकार न कोइए कह्या;
 कोधे भराणो तेणीवार, सउने मारु आणे ठार.
 नयो धेर पिता अरजुन, नव बोन्नाव्यो तो राजन;
 पिता धेर होय जेवारे, लाड लडावे सौको ल्यारे.
 पिता यण नव बोलावे हशी, एवी वात तेने दिल वशी;
 दृष्टि भरी सभा सामुं जोय, करमायाँ मुख दीठा सड कोय.
 करी विमासण पाढो फर्यो, भीमसेने जइ कर धर्यो;
 केम रीसाइ जाओ तंन, पुठ न मुके दुर्योधन.
 कहे जीतो चक्रागढ पास, नहिकर पाढा जाओ वनवास;
 चक्रागढ नव जाणे कोय, ते माटे चिंतातुर होय.
 चलती बोल्यो ते अभिमन, काका सांभव्यो मुज वचन;
 छ कोठा हुं जाणु सार, सातमानो न जाणु पार.
 सातमानु न जाणु नाम, ल्यां मरवानो छे मुज ठाम;
 सातमो कोठो आवे ज्यांप, मुजने संभाळने तुं ल्यांप.
 जो न जाणिये तेनो सार, मारी गदा ने नीसरीये वहार;
 एवी वात नकी करी ज्यारे, सभार्मा भीम लड गयो ल्यारे.

जुधिष्ठिर आगळ ते गयो, कर जोडीने उभो रखो;
 हु पुढु काकाजी आज, शामाटे दुखिया महाराज.
 खारे मुखयी वोल्या वचन, तु तो साभळ मारा तन;
 वसमी वात आवी छे आज, नथी सुजतु काम के फाज.
 कोठा जुद्ध तणु छे काम, को न जाणे आणे ठाम;
 खारे अभिमन्यु वोल्या हशी, एतो वात मारे मन वशी.
 छ कोठा तो हु जाणु सार, सातमानो न जाणु पार;
 त्यारे जुधिष्ठिर पुछे वात, साभळ ने भाद तु साक्षात.
 भेद छे छ कोठा तणा, कहो भाइ तमै क्या भण्या;
 त्यारे मुखयी वोल्यो वात, साभळो काका साक्षात.
 हु भण्यो उ माने पेट, छ कोठानी विद्या ठेठ;
 मामे मने भणाव्यो सार, छ कोठाना जाणु पार.
 सातमो कोठो आवे ज्यारे, मारू नव चाली शके त्यारे;
 त्यारे भीम तो वोल्यो गाजी, सातमो कोठो नाहु भाजी.
 सातमो ढाण माटीनो होय, ते तो भागी हु नाहु सोय;
 एवी वात तो साभळी उपारे, जुधिष्ठिर मन हरख्या खारे.
 धनधनरे वावन वीर, तैं राख्यु सभानु नीर;
 एम कही पोते ततकाळ, कठे आरोपि छे रणमाळ.
 राजा सउको विस्मय थया, रणमाळा पहरी घेर गया,
 मावडी घेर करे पोकार, कठ दीठी ज्यारे रणमाळ.
 पिता जाळधर हणवा गयो, वाळुडो रण वाधियो;
 मोडे आवेछे थान धावण, क्यम आगमशो सुत रण.
 वसमा डे कीरवना पुत, क्यम आगमशो नाना सुत;
 जेटला तरण धरती जाण, तेटला धा पडे निवाण.
 ते माटे कहु वारवार, ठाडो अभिमन्यु रणवट माळ;
 तु डे लाडकवायो तन, अलगो नथि कयों एक दन.
 तुज विना रहिश हु केम, ठोळा वसुटी हरणी जेम;
 सिंह देखी पशु पामे गास, त्यम साभळी हु यझ निराश.

खोळे बेसारीने हु वाळ, भोजन करावु ततकाळ;
आखयी अळगा थाओडो वाळ, प्राण हरी जाओडो ततकाळ.
फरी शु कहेवरावे तुय, रणे नहि जावा देड हुय.

पद राग मेवाडो.

माने बालुडो न कहेशो मारो मावडीरे. टेक.
मा वाळे काने जळमां पेशी नाथ्यो काळी नागे;
मा वाळो बीडो केटलो, वधे अगे उठे आगे वा०
मा वाळो मेघन केटलो, ते तो नीर भेरे नवखडरे;
मा वाळो वज्जन केटलो, ते तो पर्वत करे शत खडरे. वा०
मा वाळो दीनकर केटलो, नधो अधकार पामे नाशरे;
मा वाळो सिंहज केटलो, तेथी हस्ति पामे त्रासरे. वा०
मा वाळो मकोडो केटलो, ते तो खीजो करडी खायरे;
मा मुकाव्यो मुके नहि, ताण्यो तुटी जायरे. वा०
मा वाळो हीरो केटलो, पण तेतो एरणने वेधरे,
मा वाळो नोळज केटलो, बडा विशियरने ते छेदरे. वा०
मा वाळो अभि केटलो, ते तो दहे गाधु वनरे;
मा वाळो ते नव जाणिये, जे आखर कत्री तनरे. वा०

साखी

अति खेहने वहु रणी, जेने वेर घणाय,
सुखे न सुए मावडी, ते तो त्रण जणाय.
निर्धनने वळी वहु धनी, जेने वेर घणाय;
सुखे न सुए मावडी, ते तो त्रण जणाय.

चौपाई ३ तालनी.

न सुए चाकर न सुए चोर, न सुए घन गांजते मोर;
न सुए जेने पुत्रियो घणी, न सुए ने नारिनो घणी.
न सुए निर्धन ने घनवत, न सुए राजा राज करत;
न सुए जेने सुप नहीं घेर, न सुए जेने माये वेर.
न सुए जेनो गयो आत, न सुए रणधी पळ्यो जास;
सुखे सुए मणिधर साप, सुरो सुए जेने माये बाप.

सुखे सुए जोगी अवधूत, सुरे सुए राजानो पूत;
 सुखे सुए गुफामा सही, सुरे सुए चिता जेने नहीं.
 आज घेर नथी अरजुन, सुरे सुए क्यायो अभिमन.

टालः

सुभद्रा मुख वाणि बोल्या, साभल मारा तनरे;
 तुजने जावा नहि दउ, गानो मुज बचनरे.
 एक पुत्र माता हती ते, कालुडे रोई राधीरे;
 अरजुन गयो जाळधर नीतवा, वालुडे रणचाट साधीरे.
 वालो भोलो तु नानडियो, तु रणचाट केम ज्ञाहेरे;
 रणशुर केरा शब्द साभलो, पेसण परदल पाक्षेरे.
 कोमळ काति काया मनोहर, मुखहु पुन्यम चदरे; ५
 ते रणमा जइ केम घा खम्भो, माता करे आकदरे.
 उष्ण सजाये ज्यारे पहोडतो, उभा थता लारे रोमरे;
 ते जुधे जइ केम घा खम्भो, कठण छे रण भोमरे.
 दश मसवाडा गर्भ धर्यो तो, मैं तो मारे पेटरे;
 पाली पोपी मोटो कीधो, ते मरवे उठी वेठरे.
 तारे हाथेथि मीढ़ल नथी तूच्यु, नथी आवो घेर नाररे;
 तेने मौं जोयानो रहेशो ओरतो, साभल मुज कुमाररे.
 सुधिटिरने शु थयु जे तने, मोकले रणमोजाररे;
 भीम निकुल सहदेव वेठे केम, जाशे मुज कुमाररे.
 घरडा यइने काइ न जाणे, शि किधी ए पेररे;
 बुद्धे मारा पुत्रने मोकले, पिता नथी एनो घेररे.
 यारे अभिमन्यु एणो पेरे बोल्यो, साभल मारी मातरे;
 दुर्योधने कोठा बुद्ध रचियु, मने कह्यु साक्षातरे.
 ते बुद्ध तो कोइ नथी जाणतु, तुजने कहु निर्धाररे;
 जाणेढे मुज पिता ते तो, गया रणमोजाररे.
 छ कोठानु बुद्ध हु जाणु, घाली ठे मैं हामरे;
 रातमो तो भीम भागी नालगे, रात्तु पितानु नामरे.
 त्यारे सुभद्रा एणी पेरे नोल्या, साभल मारा तनरे;
 तैं तो जवानी हामज घालो, उत्तरा नथी भवनरे.

उत्तरा उत्तरा शुं कहे माडी, सांभळ तुं निर्धारे;
तेडाववी होय तो तेडावज्जे, रही छे आडी सवारे.

साखी.

उत्तरा उत्तरा शुं करे, सांभळ मारी मात;
रणमां ज्यारे घा पडे, त्यारे नहि दे उत्तरा हाय.
उत्तरा उत्तरा शुं करे, घेली थइ मुज मात;
दैवनु तेहुं आवशो, नहि आवे उत्तरा साय.

राग कालिंगडी.

सुभद्रा वळती चाली आव्यां, युधिष्ठिरनी पासरे;
कुंवर माराने युद्धे मोकलो, तेडावो उत्तरा वासरे.
राजसभामां राजा बेटा, रायकडा तेडाव्यारे;
रतनो, रुपो, राजो, काजो, रायकडा सउ आव्यारे.
शुं छे राजा शुं छे राजा, शुं छे अमां कामरे;
शाने काजे शुं करवाने, तेडाव्या आ ठामरे.
वळती राय युधिष्ठिर बोल्या, रायका प्रत्ये वाणीरे;
कोइ एक पहोरमां तेडी आवे, अभिमन्युनी राणीरे.
राजो रायको एणीपेर बोल्यो, राजाजी अवधाररे;
चार हजार खांडेरुं मारे, कहेतां नावे पाररे.
स्वामी सुरजने परतापे, पिये पाताळनुं पाणीरे;
कही तो चार पहोरमां तेडी लावुं, अभिमन्युनी राणीरे.
त्यारे काजो रायको बोल्यो, राजाजी अवधाररे;
आठ हजार खांडेरुं मारे, कहेतां न आवे पाररे.
ते उल्लब्धी आकाश शुं चाले, पिये पाताळनुं पाणीरे;
त्रण पहोरमां तेडीने लावुं, अभिमन्युनी राणीरे.
रुपो रायको एणी पेर बोल्यो, राजाजी अवधाररे;
वार हजार खांडेरुं मारे, कहेतां न आवे पाररे.
स्वामी सुरजने परतापे, पीए पाताळनुं पाणीरे;
वे पहोरमां तेडीने लावुं, अभिमन्युनी राणीरे.
रलो रायको एणीपेर बोल्यो, राजाजी अवधाररे;
सोळ हजार खांडेरुं मारे, कहेतां न आवे पाररे.

स्वामी सुरजने परतापे, पिये पाताळनु पाणीरे;
एक पहोरमा तेढीने लावु, अभिमन्युनी राणीरे.
राजापे तेने आधो तेड्योने, दीधा आदर भानरे;
सुदर वाधा पहेरण आप्या, आप्या फोफल पानरे
सांट लइने साचरियो ते, पवन वेगे जायरे;
तेणे समे उत्तरा राणीने, स्वप्नु केवु थायरे.
आजनो दाढो धुधळो दीसे, अवळा वहे नदी नीरे,
आज स्वमामा पञ्चो दीठो, जोद्दो बावन बीरे.

स्वमा दोहलारे टेक.

हवे स्वमापञ्चीनी वात.

राग कालिंगडो

साढे चढीने रायको आव्यो, पुठे समाचारे,
पाढव राजा कुशल फहाने, कुशल अर्जुन कुमारे.
स्यारे रायको मुख्याणी बोल्यो, साभळने तु नारे;
कौरव पाढवने जुझ्ह मडाणु, हस्तिनापुर मोझारे.
अभिमन्यु राजा रणवट साचरे, तेडावी पुत्री तमारीरे;
रायका केरा बचन शुणीने, धरणी ढक्की ते नारीरे.
मारी उत्तरा नानु गळक, कपम जाशो अवतारे;
मोटाना राज्या वेठवा दोहला, कुवरी छे सुकुमारे.
उत्तरा कुवरि याणि बोल्या, साभळ मारी मायरे,
मारा करमना काळा उघङ्या, हवे रोये जु थायरे.
सवालाखनो सासर वासो, करती रुदन करे मार्डीरे;
अधलाखनो सासो रही जापे, आगळी रहे उघाडीरे.
उत्तर कुवर एणी पेरे बोल्यो, साभळ मारी मायरे;
दीकरियोना न पडे पुरा, ल्लेशरी जो थायरे.
उत्तरा त्याथी परवरी, ते पवन वेगे जायरे;
अर्द्ध पथ तो व्यारे पोत्या, चितानुर वहु थायरे.
अभिमन्यु मुख्यी जोलियो, तु साभळ मारी मायरे;
उत्तरा तो आवी नही मारे, जुद्धनी वेळा जायरे.

मारे दुर्योधिन जीतवो रणे, चक्र हवुं चकचूररे;
 उतावळ अधकी करो मारे, रणमां थाप असुरे.
 त्रांवा कुँडी नळ भरीने, नाय अभिमन्यु वाढरे;
 सोना केरो वाजठीयोने, रूपा केरी थाढरे.
 खाजां लाडु अने जलेबी, मगदल अने मोतीचूरे;
 घृत विशेष मुके मांहि माता, करमलडो ने कुरे.
 त्यारे अभिमन्यु मुखथी वोल्यो, सांभळ मारी मातरे;
 छेली वारनुं भोजन कीजे, पासे वेशी साक्षातरे.
 त्यारे सुभद्रा मुखथी वोल्यां, सांभळ मारा तनरे;
 पुत्र जातां नीर न भावे, क्यम जमुं भोजनरे.
 छेली वारना हाथे कोळिया, करी जमाडे मापरे;
 वीजणलो करमांही ग्रहीने, माता ढोळे वायरे.
 जमी करीने उठचा अभिमन्यु, रथे थया अस्वारे;
 ते आठ पङ्डे चालतो तेणे, अश्वो जोङ्ड्या चाररे.
 शास्त्र थकी भेदाय न एवुं, वस्तर पेर्यु शरीरे;
 भभकादार त्यां भाया भीङ्ड्या, जोङ्डे वावन वीरे.
 छत्रिश आपुद्ध भरी कर्णीने, रथे थयो अस्वारे;
 तेने सुभद्रा वल्लवा चाली, नेत्रे जळनी धारे.
 सुभद्रामुख वाणी वोल्यां, सांभळ मारा तनरे;
 लाडकवाया क्यारे आवश्यो, कहोने मुज वचनरे.
 अभिमन्यु मुखथी एणी पेर वोल्यो, सांभळ मारी मातरे;
 गुद्ध करवाने सांचर राय, दुर्योधिन संघातरे.
 माताज्ञी दुर्योधिन जीतवो, चक्र हवुं चकचूररे;
 दुधनां कुँडां भरिने मुकँजो, आवुं आयमते सूरे.

टाल २ जो.

त्यांयी आज्ञा भागवाने जायरे, ज्यां हुतां कुती मापरे;
 कुंतीज्ञी वोल्यां वाणरे, कुंवर मानजे परमाणरे.
 तारे संग्रामे सिद्धि थायरे, घेर कुशळे आयो रायरे.

दात्र १ नी देशी.

हवे रायको कहे राणीने, हेठा उतरो धर्ण;
 पेला तमारी सासु उभा, जइ नमोने चर्ण.
 उत्तरा कुवरी हेठा उतरी, नम्या सासुने पाय;
 द्रौपदीजीने वेगे नमिया, नमिया कुता माय.
 सुभद्रा कहे वहुअर मारी, ओ पेलो भरथार,
 मारो वार्ये नव रहियो ते, चडियो रणमोझार.
 हाव भाव कठाक करती, मनाव तु स्वामीन;
 उत्तरा त्यायी परवरी व्या, उभो छे राजन.
 अभिमन्यु कहे धन्य पुरुष, जेनी हशे आ नारी,
 का राजा तमे नथी जाणता, वैराटनी कुमारी
 उत्तरा कुवरी कहे धन्य नारि, जेने आ भरथार;
 का राणी तमे नथी जाणता, अर्जुननो कुमार.
 उत्तरा तेने आवी मचीने, बोली मुखयी वाण;
 मारा स्वामी रण विचरो तो, इश्वरनी छे आण.

राग परजनी साखी

उत्तरा मुखयी उचरेरे, साभळ मुज भरथार;
 जो तमे रणवट साचरो तो, मारो मुजने ठार.
 उत्तरा मुखयी उचरेरे, साभळ मारा नाथ;
 तमे तो रणवट साचर्या, मने सौंपो केने हाथ.

राग वैराडी.

तमे चालो तो रावजीनी आणरे, हो सुभद्राना जाया;
 तमे चालो तो काढु मारा प्राणरे, हो सुभद्राना जाया टेक.
 वैराट मारो पिता कहिये, सुदर्भना मारी भात,
 मैं तो तमने ओब्बरिया, ज्यारे शाल्यो चोरिमा हायरे. हो सुभ०
 अर्जुन सरसो ससरो मारे, सुभद्रा सरसा सासु,
 कृष्ण समा मामोनी मारे, रणवट नाओ ते फासुरे. हो सुभ०
 अर्जुनना तनज कहायो, वमुदेवना पुत्रोज;
 कृष्णना भाणेन कहायो, भीम तणा भगीजरे. हो सुभ०

सोळ कळानो चंद्र शोभे, तेवी शोभा तमारी;
जेवुं हस्तिनापुर बैसुणुं तेवी, हुं अर्द्धांगा नारीरे. हो सुभ०
राजहंस तमने जाणी में, कर्यो तमारो संग;
जो जाणत वग वापडो, तो केमे न अरपत अंगरे. हो सुभ०

राग वेराडी देशी वीक्षी-

गोरी मेलो घोडीलानी वागरे, कुंवरी रावतणी;
खसो स्थ तणो दो भागरे, कुंवरी रावतणी. टेक.
माहं मांस शियाळ नखायरे, कुंवरी०—

गोरी हने रह्युं केम जायरे, कुंवरी०—

हुं तो अर्जुन केरो तनरे, कुं० केम युद्धयी केरवुं भनरे; कुं०
मारो लाजे अर्जुन तातरे, कुं० भारी लाजे सुभद्रा मातरे. कुं०
मारे शुकने कोइ न जायरे, कुं० गोरि लोक हसारत यायरे; कुं०
मारी जाणत आवी नाररे, कुं० नव जात हुं रण मोक्षारे. कुं०
एकवार लावे जगदीशरे, कुं० हुं तो छेदुं मामा केम शीशरे; कुं०
मने सौटी कही ती नाररे, कुं० आपण मळशुं पेले अवतारे. कुं०

राग परजियो.

मने भारीने रथडा खेडरे, वाळा राजारे.

मने जुद्धे साये तेडरे, वाळा राजारे.

आपण सरखा सरखी जोडरे, वा० मने जुद्ध जोयाना कोडरे, वाळा०
लावौं हुं धार्ण हयियारे, वा० कर्ह कौरवनो संहाररे, वाळा०
छाँडी जुद्ध वज्जो धेर आजरे, वा० मारा वापनु अपावुं राजरे, वाळा०
नारिकेझ समुच्चा कहाडरे, वा० रथउपर देह पछाडरे, वाळा०
माहं जोवनोपुं भरपुररे, वा० मने मेलीने चाल्या दूररे, वाळा०
मे तो झोरे कीधो अधर्मरे, वा० मारे किया जनयनां कर्मरे, वाळा०
मे तो वेलो^१ वाधतां तोडीरे, वा० मे तो धावती धेन वछोडी रे, वा०
मे तो वेती नीके दीधो पागरे, वा० लीला वनमां मेली आगरे, वा०
मे तो सुतां गाम वळाव्यारे, वा० मे तो कुडां कलंक चढालां^२
वळती वोल्यो अभिमनरे, धेली राणीरे;
तमे यात यिमांसो मनरे, पेली राणीरे.

१ कोइना वंदनो वेलो यधता तोडो. २ कोइनी आजोविका वंध वरी.

दाढ़-

उत्तरा कुवरी वाणी बोली, साभळ मुज भरथार;
 तमे बुद्ध करवा सच्चरोठो, चक्रव्यूहमोक्षार.
 मरजो के मारजो तमे, नव देशो पुठ लगार;
 सहियर मेणा मारी कहेशो, कायरनी आ नार.
 अवनीपर जे अवतर्यो तेने, मरवु एकज वार;
 मैतथकी डरिये नहि, तेमाठे भरथार.

राग कालिंगडो.

उत्तरा त्याथी साचरीने पठो, आवी सुभद्रा आवासरे;
 सज यइ अभिमन्यु चाल्यो, जुधिटिरनी पासरे.
 सभामध्ये चाली आव्यो, कुवर यइ सावधानरे;
 अभिमन्यु आकतो देखो राये, दीधा आदर मानरे.
 कर जोडी मुखवाणी बोल्यो, काका केरे साथरे;
 छ कोठा हु हवणा जीतुं, मानो साची वातरे.
 आगळ हु काइ नयी रेतो, सातमा कोठानो र्घरे;
 ते यानक मारू मृत्यु जाणजो, वेगे काका र्घरे.
 भीमसेन मुखवाणी बोल्यो, धाली मुठे हाथरे;
 सातमो कोटो हु भागी नारु, हु छु लारे साथरे.
 मुज छता दुख पमाडे, तेना तो लेउ प्राणरे;
 गदा लेइ एक मेरथी आवी, करू कचर घाणरे.
 एवुं साभळी अभिमन्यु लायो, युधिटिरने पायरे;
 आज्ञा मागीने निसरियो, त्या गोव्या र्घरायरे.
 कुवर मारा जोइ विचारीने, सग्राम करजो त्यायरे;
 अर्जुन आवी पुठे अमने, उत्तर जो दद्दए द्यायरे.
 त्यारे त्या अभिमन्यु गोलियो, राखशे श्रीजगदीशरे;
 एम कहीने साचरियो पठो, जेगे नमावी शीररे.
 रथउपर आवीने बेठो, पाख्यनो पुमारे;
 चतुरगी सेना सज यइ तेनो, गणता न आवे पारे.
 मतवाला मल पता हाँडे, मुख चाव्या तेंबोलरे;
 मद माता ने हाँडे धाता, रगे राता चोक्करे

आभरण पेयां ओपता ने, माथे राती चोळरे;
 साथी दीसे शोभता तेने, वर्ष यया छे सोळरे.
 लुदे शूरा रणे पुरा, चाले अटपटी चालरे.
 धनुष वाण करमा धरिया ने, ढलकती मुकी ढालरे.
 कठारी केडे वाकडीने, वळी करमा वाण कमानरे;
 साग फरशा खजर गुसी, दीसे शोभायमानरे
 भाया खडग कटिमा धरिया, तरकस ताता तीररे;
 छुरीस आयुध अगे सजिया, जोद्धा बाबन बीररे.
 हाथी घोडा रथ पालखी, कहेता नावे पारे;
 इरानी कडी मुलतानी, शोभिता हय सारे.
 खुरासानी ने विलापती वळी, बगाळी कहेवापरे;
 पाणी पथाने पाखरिया, उज्ज्वल जेनी कायरे.
 देववदी ने दानववशी, उत्त्यया ओब्ला ओवरे;
 दीला धोळा काला काला, रगे राता चोळरे.
 वाकडिया वेडागे चडिया, सजी सर्वे हथियाररे;
 ठामठामयी जोद्धा चाल्या, कहेता नावे पारे
 बुद्ध करवाने अभिमन्यु चाल्यो, हइडे हरत न मायरे,
 धजा फरके ने नेजा झळके, नीशाने वळीया धायरे.
 अभिमन्यु कहेडे सास्यीने, रथ हाक मारो यायरे;
 चक्रव्यूह गढ भेदबो छे ज्या, द्रोण गुरु छे त्यायरे.

चोपाई त्रण नालनी.

अभिमन्युने आवतो जोय, सौं कौरव विस्मय होय;
 माहोमाद्य करेडे वात, आव्यो अर्जुन ए साक्षात.
 चक्रव्यूह तणो जे उेद, तेनो सड लेडे ए भेद;
 आपण सर्वने एतो सहारे, बदता कोइने नव उगारे.
 पठी जुए धारीने चित, धजाये न दिसे हनुमत,
 एतो अर्जुन सरिखो दीसे, कोइ आकेडे गळियो अतीशे.
 कर्सु छे त्या अहुत काम, कोठा सात छे तेणे ठाम,
 द्रोण गुरु छे बळिया जेह, प्रथम कोठे मुक्या तेह.

विजे कृगचार्य त्या होय, त्रिजे कोठे कर्ण जोय;
 चोये अश्वत्थामा सार, पाचमे कोठे लक्ष्मण कुमार.
 बीना बळिया राजकुमार, सुत दुःशासननो चार;
 छठे छे दुर्योधन राय, सातमे जयद्रय कहेवाय.
 अग्यार क्षोणी जोद्धा जेह, गढने कागरे उभा तेह;
 पच शब्द वाजिच्र वजाडे, अभिमन्यु उपर ते गाडे.
 गुर्ज गुम्पी गदा छे हाथ, फरशी त्रिशूल मूशूल साथ;
 खडग काती कटारी पाश, देखी शत्रु पामे त्रास.
 नम आयुध ते त्या करी, उभा जोद्धा करमा धरी;
 एवे आव्यो अभिमन्यु जोध, आणी अत.करणमा क्रोध.
 प्रेर्या अश्व चारने सग, जाणे पडिया दीप पतग.

साखी.

पडे दीप पतग तेम, अभिमन्यु रण माजी रह्यो;
 नमस्कार गुरुने कर्यो, तेणे आशिस्तवाद हेते कद्यो.
 द्वाळ.

गुरु द्रोण मुखथी बोल्या, साभूल अभिमन्यु चात;
 रीसाइने शु आविष्यो, घेर वाट ज्ञाए तुज मात.
 माते वोळाव्यो आविष्यो, हु कहावु अर्जुन तन;
 गुरु आणोज पितातणा, करवा आव्यो पूजन.
 वैशापायन एणीपेर बोल्या, तुण बन्मेजय राय;
 विस्तारी तुजने सभलातु, भारतनो महिमाय.
 पेहेले कोठे चाली आव्यो, अर्जुन केरो तन;
 साथे राधी एवा चडिया, जाणे चडियो घन.
 दुष्याधनना जोद्धा सर्वे, धारे चिता मन;
 शके अर्जुन आविष्ये, के अर्जुन केरो तन.
 द्रोण गुरुने सामुख आवी, उभो अभिमन;
 पारय सुतने जोइने पढी, बोल्या द्रोण वचन.
 तु वाळकने जोई दया, आवे ओसरु मनमाय;
 युधिष्ठिरने शु यसु, जे तने मोकल्यो द्याय.

नारे वाळक बहुआ तुं, मोकल तारो तात;
 अहिं समतनु काम नहि, हु करीश तारी धात.
 एवी वाणी साभळतामा, कोप्यो अभिमन;
 वालक तो नव जाणिये हु, क्षत्री केरो तन.
 कौरवरूपी काट केरा, वृक्षो उग्या वन;
 तेमा हु अभिरूप थइने, सर्वे करु दहन.
 ते माटे हु तमने कहुलु, साभळिये महाराज;
 हु ब्राह्मण जाणी ओसरहुयु, नहिकर लोपु लाज.
 पहेलो धाव करो मुजउपर, हरस आणी मन;
 द्रोण गुरु कहे केम करु हु, तु छे नानो तन.
 अभिमन्युए एक वाण काढ्यु, जोता तेणीवास;
 मन भणी गुरु उपर मेल्यु, आणी हरख अपार.
 वीजु वाण वेगे काढोने, मेलियु रणमाय;
 द्रोणे वळतु छेदियु, ते क्रोध आणी त्याय.
 द्रोणे वळति वाण मेलिया, वेगे काढी चार;
 आवता ते छेदीने नाह्या, पारथने कुमार.
 अन्यो अय घेडे वे एपण, कोइने न वागे वाण;
 समर्थ त्या जोद्वा उभा, आश्वर्य थया निर्वीण.
 वैशापायन बोलिया तु, शुण जन्मेजय राय;
 अभिमन्युए सभारी त्यां, कृष्ण तणी विद्याय.
 क्रोध करीने करमा लीधां, वेगे सातज वाण;
 मन भणि रण मध्ये मेल्या, पारथ युत्र सुजाण.
 गर्जना करता ते आव्या, क्षण नव लागी वार;
 आवी रणमा भेदिया छे, तेणे जोध अपार.
 अश्व गज रथ छेदिया त्यारे, द्रोण कोप्या मन;
 दशा वाण काढीने मेल्या, रक्त करी लोचन.
 अभिमन्युना सारथिने, रथ सहित कर्यो पतन;
 विजो रथ भगावी वेठो, पारथ केरो तन.
 तेणे समे त्यां अभिमन्युने, चढो अतिदो रीस;
 कोप करीने वाण मेल्या, वेगे काढी वीश.

विजे रुपाचार्य त्या होय, त्रिजे कोठे कर्ण जोय;
 चोथे अश्वथामा सार, पाचमे कोठे लक्ष्मण कुमार.
 वीजा उळिया राजकुमार, सुत दुश्शासनना चार;
 उठे ठें दुर्योधन राय, सातमे जयद्रय कहेवाय.
 आगार क्षोणी जोद्धा नेह, गढने कागे उभा तेह;
 पच शब्द वाजित्र वजाडे, अभिमन्यु उपर ते नाडे.
 गुर्ज गुप्ती गदा छे हाथ, फरशी त्रिशूल मूशूल साथ;
 खडग काती कटारी पाश, देसी शत्रु पासे नास.
 नम्र आयुध ते त्या करी, उभा जोद्धा करमा धरी;
 एवे आव्यो अभिमन्यु जोध, आणी अतःकरणमा क्रोध.
 प्रेर्ण अश्व चारने सग, जाणे पडिया दीप पतग.

साखी

पडे दीप पतग तेम, अभिमन्यु रण गाजी रह्यो;
 नमस्कार गुहने कर्यो, तेणे आशिरवाद हेते कह्यो.

दाक

गुरु द्रोण मुखयी वोलिया, साभूल अभिमन्यु वात;
 रीसाईने शु आवियो, घेर वाठ जुए तुज मात.
 माते वोलाव्यो आवियो, हु कहावु अर्जुन तन;
 गुरु जाणीज पितातणा, करवा आव्यो पूजन.
 वैशापायन एणीपेर वोल्या, शुण जन्मेजय राय;
 विस्तारी तुजने संभलासु, भारतनो महिमाय.
 पेहेले कोठे चाली आव्यो, अर्जुन केरो तन;
 साथे साथी एवा चडिया, जाणे चडियो घन.
 दुयाधनना जोद्धा सर्वे, धारे चिता मन,
 शके अर्जुन आवियो, के अर्जुन केरो तन.
 द्रोण गुरुने सन्मुख आवी, उभो अभिमन;
 पारथ सुतने जोइने पठी, वोल्या द्रोण वचन.
 तु बाळकने जोइ दया, आवे ओसह मनमाय,
 युधिष्ठिरने शु धपु, जे तने मोकल्यो श्याय.

मायुं अर्द्ध चद्र ते वाण, कीधा शत्रु कचरधाण;
 वाध्यो जुद्ध विषे अभिमन, लपाचारज ओसर्या मन.
 गढ बीजो लीधो तेणीवार, गाजो रहो अभिमन्यु कुमार;
 कोठा बेषनु कीधु काम, आव्या त्रीजा केरे ठाम.
 कर्ण उभो दीठो ते ठार, कुवरे कर्पो नमस्कार;
 तमो अमारा पूज्य छो स्वाम, घटो अर्जुन केरे ठाम.
 प्रहार पहेलो करोजी तमो, घणु शु मुखे कहिये अमो;
 पछे जो माने मारु मन, तो हु सेवा करु राजन.
 कर्ण कयन एवा साभली, अतःकरण गयु परजली;
 कर्ण वाण मेल्यु यइ क्रूर, अभिमन्युए कीधु चूर.
 अर्जुनसुतनी करवा घात, कर्ण वाण मेल्यां पछि सात;
 पारथसुते साच्चव्यो देह, कर्या रजरज कटका तेह.
 वाण काढी मेल्या पछी सोळ, अभिमन्युए जोयु जोर;
 आवता ते अभिमन्यु छेदे, एके वाण तेने नव भेदे.
 वेल्यो अभिमन्यु त्यां तत्काळ, चुकवी मे तारी त्रण फाळ;
 हवे जाने पराक्रम मारु, वृद्धपणु उताह तारु.
 एम कहीने मेलियु वाण, आव्यु कर्णउपर निर्वाण;
 कर्ण उठलीने पड्यो धर्ण, जाणीये तेतो पाम्यो मर्ण.
 पाढ्यो सावधान ते यइ, अभिमन्युसामो उभो जइ;
 आव्यु नेत्रविषे बहु झेर, वाण मेलियु रुडीपेर.
 आवी भेदियु अश्वने काप, त्या रुधिर खलके जाप;
 वाण ते समे मेल्यां कर्ण, अश्व चार पमाड्या मर्ण.
 वाहनविना अभिमन्यु कीधो, प्राण सारथीनो त्या लीधो;
 अर्जुन सुतने चढी त्या रीस, वाण मेल्या छे त्यां चीस.
 मायों कर्ण तणो मातग, रथतणो त्या कीधो भग;
 कर्दम रुधिर चर्ण चपाप, देरी कापर नाशी जाप.
 कुडे करे अर्जुन कुमार, देतो शतुउपर मार;
 कीधी वाणतणी त्या वृष्ट, कर्ण पामियो मनमा कष्ट.
 कृष्णतणी जेने विद्याय, केम ए यकी हायों जाप;
 कर्ण गयो नौसरी त्याय, अभिमन्यु गयो गढमांय.

द्रोण कीधा आकलाने, दीधो छे ओसार;
 अभिमन्यु आवी भडियो, ते करतो मारेमार.
 शोणितनी सरिता बहेने, हय गज पाडे चीस;
 हाथेयरो हाथीने ठेले, छेदे जोधनां शीश.
 तेणे समे दुर्योधन आवी, नम्हो द्रोणने पाय;
 कहो गुरुजी केवी रीते, करशुं शो उपाय.
 द्रोण कहेछे जयद्रथने तमे, तेहावो ने झाय;
 जयद्रथने तेढीने लाव्यो, एक पलकनी माय.
 सामासामु जुद्ध मंडाणुं, केतां नावे पार;
 अश्वे अश्वने गजे गज साँ, कोइ नव दे ओसार.

राग चोपाइ नृण ताळनी.

प्रथम गढ करीने हाथ, बोल्यो भीमसेनने साथ;
 काका जुओ पराक्रम मारु, गुरुजीनुं तो मान उत्तर्यु.
 भलो भलो तुं अभिमन, नाम राख्युं तें अरजुन;
 एम कहेतां चाल्या त्यांय, आल्या विजो गढ छे ज्यांय.
 रथा कृपाचार्य ते ठाम, करवा मांड्यो खाँ संग्राम;
 आव्यो दुर्योधन त्याँ राय, कृपाचार्यने लाग्यो पाय.
 बोल्यो मुखधक्को ते बचन, तमो करजो ए बाल पतन;
 गढ द्वार पासे तत्काल, मुक्षो जपद्रथने रखवाल.
 पछे बीजे कोठे राड मांडी, कोय खस्ते नहि जाग छांडी;
 मांहोमांही देछे भार, कोइ दे नहाँ त्याँ ओसार.
 मैल्युं अभिमन्युए एक बाण, लेया शत्रु केरा प्राण;
 कृपाचारने आवतुं छेयुं, बाणे तो कोइने नव भेद्यु.
 रुधिये करी जोध अपार, काढीं मेलियाँ रयाँ बाण चार;
 अभिमन्युए ग्रही शर पाण, आवर्तान हयाँ निर्वाण.
 पछे चक्रने फरशी साही, आव्यो अभिमन्यु त्याँ धाइ;
 पग प्रहारे जोद्धा नासे, अभिमन्यु तणो धरि त्रासे.
 कृपाचार्य अभिमन कुमार, मांहोमांहि साँ देता भार;
 योद्धा कइक कर्या पृथ्वीपात, ते तो चालिया जम संघात.

मार्यु अर्द्धे चंद्रे ते वाण, कीथा शत्रु कचरधाण;
 वाध्यो जुद्ध विषे अभिमन, रूपाचारज ओसर्या मन.
 गढ बीजो लीधो तेणीवार, गांजी रह्यो अभिमन्यु कुमार;
 कोठा बेयनु कीधु काम, आव्या त्रीजा केरे ठाम.
 कर्ण उभो दीठो ते ठार, कुवेरे कर्यो नमस्कार;
 तमो अमारा पूज्य छो स्वाम, घटो अर्जुन केरे ठाम.
 प्रहार पहेलो करोजी तमो, घणु शु मुते कहिये अपो;
 पछे जो माने मारु मन, तो हु सेवा करु राजन.
 कर्ण कथन एवां सांभली, अतःकरण गयु परजली;
 कर्ण वाण मेल्यु धइ कूर, अभिमन्युए कीधु चूर.
 अर्जुनसुतनी करवा घात, कर्ण वाण मेल्यां पछि रात;
 पारथसुते साचब्यो देह, कर्या रजरज कटका तेह.
 वाण काढी मेल्यां पड्ही सोळ, अभिमन्युए जोरु जोर;
 आवतां ते अभिमन्यु छेदे, एके वाण तेने नव भेदे.
 वैल्यो अभिमन्यु त्यां ततकाळ, चुकवी मे तारी त्रण फाळ;
 हवे जाने पराक्रम मारु, वृद्धपणु उतारु तारु.
 एम कहीने मेलियु वाण, आव्यु कर्णउपर निर्वाण;
 कर्ण उछलीने पड्हो धर्ण, जाणीये तेतो पाप्यो मर्ण.
 पाढो साधधान ते थइ, अभिमन्युसामो उभो जइ;
 आव्यु नेत्रविषे वहु झेर, वाण मेलियु रुडीषेर.
 आवी भेदियु अश्वने काप, त्यां रुधिर खलके जाप;
 वाण ते समे मेल्यां कर्ण, अश्व चार पमाड्या मर्ण.
 वाहनविना अभिमन्यु कीधो, प्राण सारथीनो त्यां लीधो;
 अर्जुन सुतने चडी त्यां रीस, वाण मेल्यां छे त्यां वीस.
 मार्यो कर्ण तणो भातग, रथतणो त्यां कीधो भग;
 कर्दम रुधिर चर्ण चपाप, देरी कायर नाशी जाप.
 कुण्डे फरे अर्जुन कुमार, देतो शत्रुउपर मार;
 कीधी वाणतणी त्यां वृट, कर्ण पामियो यनमां कट.
 रुण्णतणी जेने विद्याय, केम ए यकी हायो जाप;
 कर्ण गयो नीसरो त्यांय, अभिमन्यु गयो गढमांय.

द्वाळ.

त्रीजो गढतो हाथ आविषो, गयो ते चोथे ठाम;
 रथविना अभिमन्यु पालो, करे महा सग्राम.
 भीमसेन पाठळ थको ते, रका करे निर्बाण;
 एनी दोषमा जे चढि आवे, तेना ते ले पाण
 एम करता चाली आव्या, चोथा गढने द्वार;
 अश्वत्थामा देखी कुवरे, कीधो नमस्कार.
 चृद्ध जाणी दया आणी, बोल्यो मुख्यी वाल;
 त्राहण जाणी मन ओसरु, केम करु पेहेली घात.
 अश्वत्थामा कहे अभिमन्यु, शो करे विचार,
 बालक माटे ओसरुहु, नहिकर करु प्रहार
 एम कर्हाने वाणज मेल्यु, अभिमन्यु उपर एक,
 आवतु ते छेदियु, अभिमन्युए करी विवेक
 पारयपुत्रे वाण मेल्या, काढीने त्या त्रण;
 कइकनी छेदी नासिकाने, कइना छेदा कर्ण
 हाथ चरणविना कया कइ, मुसधी पाडे चौस,
 उजाता मारग घसे की, धडिनाना शीस.
 अश्वत्थामा कहे अभिमन्यु, रहेजे आणे ठार,
 दश वाणो काढीने मेल्या, वेगे तेणीवार
 आवता अभिमन्युए दीठा, चढी अतिशे रीस,
 पार्थपुत्रे छेदिया काइ, वाण मेली चोड.
 अश्वत्थामा ओसरपर्हाने, करे ते चिंता मन;
 चोथे गढ ते गाजियो, अर्जुन केरो तन.

चोपाइ चण ताळनी

गढ चार अभिमने लीधा, शातु शीरपर पापज दीधा
 घणा मृत्यु पमाड्या जोघ, अत.करणमा आणी क्रोघ.
 पछे पाचमे गढ ते आव्यो, सेनसहीत रुडेरो भाव्यो;
 दुर्योधनसुत ते ठाम, लक्ष्यण कुवर ठे नाम.
 महा पराक्रमी बळियो फहावे, अभिमन्यु सामो ते आवे;
 मब्या सरखासरखी जोड, पोत्यां मनडा केरा कोड.

देखी जोद्ध करे हुंकारा, मद माता करे खुंखारा;
 नेन रक्त कर्यां वहु रीसे, करडे दांत अधर वहु पीसे.
 बोल्यो लक्ष्मण मुखथी वाण, अभिमन्यु छेदिश तारो प्राण;
 तु तो जोने मनमां विचारी, हवणां तने नांलुलु मारी.
 एकलो आब्यो आणे ठार, केम जाइग अहियी बहार;
 हवणां वाणे मारी पाहु, नमपुरी तने देखाहु.
 तु तो जीव्यो चारे कोठा, यां तो हता वृद्ध मोठा;
 मनमां जाणी नानो बाळ, मुकियो जीवतो तत्काळ.
 हवे आवियो मारे साथ, केम मुकु आणे हाय;
 तु तो जोने पराक्रम मारू, भीम सहित तने संहार.
 यारे बोल्यो अभिमन्यु जोध, आणो अंतःकरणमां क्रोध;
 तुं ते शुं रद्धो आप वत्वाणे, हाय नर्थी चव्यो तु आणे.
 कौरवस्पी काट छो तमे, तेमां वचुकुठार ते अमे;
 खोदी काहु हुं सौनां मूळ, सात कोटामां उढाहु धूळ.
 कौरवस्पी काट अंवार, वाढी भस्म करु निर्धार;
 हस्तीनापुरने मोशार, राज करशे पांडुकुमार.
 पापी जाणजे सुख पधार्यु, हवे तारूं तो मान्य उत्तारूं;
 एवी वात ते सांभळी ज्यारे, लक्ष्मण कोप्यो तेवारे.
 करमां लइ धनुप ने वाण, मेलियां छे त्यां निर्जाण;
 वाण मेलियुं करमां साइ, अभिमन्यु उपर आव्युं घाइ.
 अभिमन्युए आपतुं छेतुं, तेणे कोइने नव भेद्युं;
 लक्ष्मण उपर मेल्युं एक, अभिमन्युए करी विवेक.
 ते तो आपियुं गर्जतुं वाण, तेणे कफ्कना लीधा प्राण;
 लक्ष्मण कोप्यो मन साथ, पांच वाण लीधां नीज हाथ.
 ते ज्ञो आढी सेनामां भेद्यां, कै जोधत्तणां झीझे छेद्यां;
 अर्जुन पुत्रे लीधां सात, करी शातु उपर घात.
 जोधा कफ्कनां छेद्यां शीशे, अभिमन्यु वहु चक्ष्यो रीसे;
 रीसे ययो छे रातो चोळ, कर ग्रद्धां वाण त्यां सोळ.
 ते त्तो धनुप चटापी मेल्यां, मोठी नदी तणी पेरे रेस्यां;
 पछि लेइ खडगने धाय, कई जोधा नाटा नाय.

कइ कीधा पृथ्वीपात, ते तो चास्या जमने साथ;
 कइ पड़ा मृतक थइ रूप, ते तो गणे त्रास मन भूप.
 कइ शीशा बिना रडबडता, ते हींडे घणु आथडता;
 कइ कायर थइ नासे, ते तो भरिया हइडे श्वासे.
 एम जुद्ध थयु ते ठार, जोधा पडिया अपरम पार;
 पगापाले अभिमन्यु धसे, लक्ष्मण पर महा झेर वसे
 रीसे रक्त थया लोचन, कयां लक्ष्मण कुवर पतन;
 थयो गढमा हाहाकार, नाठा जोद्धा तेणीवार.
 पठो चढी अभिमन्युने रीस, छेदा दुर्योधनपुत्रना शीशा.

साखी.

पुत्र केरु मृत्यु जाण्यु, दुर्योधन राजन,
 त्राहा त्राहा मुखयो बोले ने, घणु करे रुदन

टाल.

हायेशु हइयु हणे, बुटे पोतानु शीश;
 कुवर मारे मृत्यु पान्यो, शु थाडे जगदीश.
 अभिमन्युए वाण भार्यु, कोध करीने त्याय;
 दुःशासननु रुदय मेदीने, गयु ते पृथ्वीमाय.
 पछि तेणे अभिमन्यु उपर, पाच मेल्या बाण;
 आवतो कटका कर्याते, खड़ ग्रहीने पाण.
 चार वाणे अभिमन्युए, बाल्यो रणसहार,
 पाचमे गढ ते गहनीयो, अर्जुननो कुमार.
 पाचमे गढ अभिमन्यु गाजे, कृष्ण चितातुर थाय;
 रते गढ साते जीतीने, आवे जीवतो ध्याय.
 जदुपतिए मनमा बिचार्यु, भीमसेन छे पास;
 त्यार गुधी ते अभिमन्यु तो, नर्धी पामवो नाश.
 एवु धारी परवरिया, व्या पाहुकेरा तन;
 भदो मत्त मातग बलियो, छोडियो पावन.
 पुरमा जइने छोडियो, मातग बलियो जेह;
 प्रजा लाग्यो फोर्डना रघो, भवन भाजे तेह.

हाहाकार थइ रह्यो था, लोक नाठा जाय;
 को बळियो जोद्दो नहिजे, गजने जहने साहाय
 जुधिष्ठिर कहे भीम होय तो, वेगे एह झलाय;
 सेवकने दीधी आज्ञा त्या, भीमने तेडवा जाय.
 अभिमन्यु कहे काका मारा, शु हशे सेना माय;
 सबळ सोर त्या थइ रह्यो, आक्रद करे सौ त्याय.
 सेवक त्यायी परवर्यो ते, आव्यो भीमसेन पास,
 स्वामी तमने तेडेठे त्यां, युधिष्ठिर आवास.
 अभिमन्युने भीमसेन कहे, कहो हवे कैम काजे;
 युधिष्ठिरे तेङु मोकालियु, शो उत्तर त्या दीजे.
 अभिमन्यु कहे काका मारा, रह्यो छे कोठो एक;
 सातमो तो हु नयी लेतो, तमने कहु विवेक
 माटे कुवर कहे काकाजी, पढशे हवे तमाह काम;
 वेगे जइ वेला आवो अहीं, धशे महा सग्राम.
 त्यारे वृकोदर कहे कुवरने, आरीश क्षण एक माय;
 निश्चे कारिने मानजे तु, मारो प्राण छे ह्याय.
 आज्ञा मागो निसरियो, भीमसेन तेणे ठार;
 रुणे एम प्रपञ्च करीने, काढ्यो तेने गहार
 छुठे कोठे चाली आव्यो, अर्जुननो कुमार;
 दुर्योधन त्या सामो आव्यो, करग्रही हथियार
 सामासामु सुद्ध मडाणु, क्षणु न लागी वार;
 सेन सहित सबळो बढे त्या, कौरवनो कुमार.
 अभिमन्युए काढी मेल्यु, क्रोध करो एक वाण;
 दुर्योधननी सेना माहे, कर्यो ते कचर घाण
 दुर्योधन मुख बोलियो, तमे साभळो सउ वात,
 अर्जुनसुत छे एकलो, तमे करोने एनी घात.
 एवी वाणी साभळीने, योध धशा चोपास;
 अभिमन्यु उभो नयी गणतो, सदये कोनो ज्रास.
 चोपासेयी सबळ मारे, कुवर वचमा एक;
 सर्व मळी कौरवो चढ्या पण, न गणे कोने छेक.

कुवर सर्वने पडियो पुरो, समुद्र पेरे जाण;
 आवता सर्वे चुकावे, फरीने भारे बाण.
 शल्य मूँछित थइ पड्यो, ने पडियो तेनो भात,
 अभिमन्युए बाण मेलीने, कोधी तेनी घात.
 त्रणबार सामो धश्यो ते, आणिने मन रीस;
 खड्ड लइने अभिमन्युए, दुष्टनु छेवु शीश.
 अभिमन्यु भेदावो थको पण, उपन्यो महाकोथ;
 बाण त्या असख्य मेली, नसाड्या सर्व जोध.
 धडीने अतकनीयेरे, ग्राण लेढे एह;
 सहींयकी जेम शेर नासे, तेम नासे तेह.
 अश्व गज रथ सारथी, चोपास नाठा जाय;
 सर्वे सुभट ते जाय नाठा, अभिमन्यु पुठे धाय.
 नीरसहित ज्यम कमळ शोभे, पड्या पृथ्वीमाय;
 तेम मस्तक रडवडेछे, मुगटसहित त्याय.
 वैशापायन बोलियो, तु शुण जमेजयराय;
 देशादेशना नूप हता ते, सर्वे पथ पळाय.
 पारय पुत्रे सेन सहार्यु, कर्यो ते अवनी रोळ;
 रुधीरनी त्या नदी चालीने, गीध करे कलोळ
 सातमे गढ कुयर आव्यो, करे महा सप्राम,
 सुभट सर्वे रक्षा छाना, कोइ न घाले हाय.
 मस्तक मुगट ढक्की पडे, हथियार न थभे पाण;
 शरीरनी शुद्धि विसरीने, मुखेन बोले चाण

साखी

सर्व वखाणे त्या कने, अभिमन्यु गाजी रद्धो;
 दुर्योधन ते देखीने, क्रोध मन साथे ग्रह्यो

चोपाइ

ठ कोटा कोधा छे हाय, पठी आवियो सातमा साथ;
 भीमसेन तणी जुए चाट, मन साथे करे उचाट.

छ कौठानी हु लेतो वात, ते तो जीवा करी मे घात;
 काके आप्यु तु वचन जेह, सातमें तो आव्यो तेह.
 एवो करेछे चित्त विचार, दुर्योधन आव्यो ते ठार;
 दीदु दुर्योधने दब्ल पात, तेड्या पोताना शत भात.
 औरं वीरा सड आ समे, करो सुद्ध एकठा यइ तमे;
 सोळ वर्षनो बाल्क एह, रण जश लइ जाशो तेह.
 अही गदा ने मारो प्रहार, नहितो राज गर्यु आणे ठार;
 शत बाधव रणमा रही, सुद्ध करता अधर्मे सही.

विकारे दुर्योधन राय, लाव्या कुवरने व्युहमाय;
 अरजुनसुत मेले दोट, करे कौरव उपर चोट.
 पड्या सुभट्ना हथिआर, लइ अभिमयु मारे ते ठार;
 प्राण तजिया ने पडिया शरार, चारि पासे नाठा बीर.
 पट्ट जोद्वा छे महारळी, तेणे घेया अभिमयु वळी;
 हुटा प्रहार गदाना करे, एकी बारि सो सो पडे.
 अभिमन्यु कहे पापो साभळो, तमे सो अने हु एकलो;
 एवु सुणी दुर्योधन राय, मारे गदा अभिमयु काय.
 पड्यो मूर्ढा यइ शुद्ध टळी, पड्यो मुगट¹ माथेथी ढळी,
 शत वक्तु दुर्योधन तणा, पापी ते तव मारे घणा
 स्वम हवु उत्तराने जेम, अभिमन्युने त्या हवु तेम,
 वळी उठयो अर्जुन कुमार, धरी कोथ से अपरम पार.
 सर्वे कौरवना हर प्राण, कस मारिने कचरघाण;
 तेनो मनमा आणीने त्रास, कौरव कोइ न आवे पास.

राग मास.

सातमे गढ अभिमयु आव्यो, जुए भीमनी वाट;
 शामाटे आव्यो नहि, एम करे उचाट. काका आव्यनेरे. टेक.
 वचन दइ मुजने गया, जुधिष्ठिरनी पास,
 सातमे गढ मने घेरियो, त्या हत्ती तारी आश काका०
 माताये मने वारियो, वार्यो घरनी नार;
 वेर हवु शु काका भारा, लाव्यो आणे ठार. काका०

युधिष्ठिरे ना कही, कही नौकुल सहदेव;
 वचन दइ उठाड़ीयो, भीम वलो तुज टेव. काका०
 कोण जनमनु वेर हतु जे, मनमा राख्यो आठो;
 एकलो मूकीने गपा नाशी, कढाव्यो मारो काटो. काका०
 काल जालधर जीती आवशो, पीता मुन अर्जुन;
 त्यारे तमने पूछशो, क्या गयो सुत अभिमन. काका०
 त्यारे त्या शो उचर देशो, मने मरावी ह्याय;
 आवी तमने पूछशो जे, कुवर मारो क्याय. काका०

साखी.

काका काका कही रए, मुके मुख निश्वास;
 पड हारे जडे नहि, जीव्यानी शो आश.
 कुहु कीधु भीमडा, मने नाख्यो अरिदल पास,
 वचन दीधु करमाहरे, अति अहारीनो शो विश्वास.
 अहारी व्यसनी अल्लसु, लपट हरामी जेह;
 परदु लें दाझे नहि, तेने बालो निज देह.

चोपाई त्रण ताजनी.

अभिमायु करे विचार, गढमध्ये तेणीवार;
 नीकलबाने धणु तरफडे, मध्य कोठानु ढार न जडे.
 अरोपरो यइ शोधे हार, देखे नहि जे नीसरे बार;
 अकल्यायो मेली मन आश, हवे भीमनो शो विश्वास.
 मे तो जाप्यु वेलो आवशो, आम शु ए डाट वाल्शो;
 केम गम्यु काका तने, सत्य वचन आप्यु जे मने.
 वलो मनशु आणी धार, चाध्या आयुध बावन वीर;
 चक्रागढ तल्पवानु करे, पौचे नहीं जे डगलु भेरे.
 कृष्णे एनी रर्म नव कद्दो, अभिमन्यु गुचाइने रक्षो;
 भीम भीम कही पाडे साद, कौरव धणा बजाडे नाद.
 जोरे भीम साभल्शो एह, तो त्या वारे धाशो तेह,
 सारे नथी आपणनो ठार, करे कौरव एवी विचार.
 पच शब्द बजाडे सही, कान पड्यु सभलाय नही;
 दुख पामियो मनमा धणु, हवे वळ कशु विजा तणु.

पोतानाविना जूठी आश, एवुं कही मेल्यो निश्चास;
 पछे घालीने मनमां हाथ, अभिमन्यु उठचो ते ठाम.
 धनुषबाण लेइने हाथ, बढवा उठचो कौरव साथ;
 धर्यो अवनीमां अवतार, मरवु छे एकज वार.
 हवे थनार होय ते धाय, दो अर्थे आवे आ काय;
 सुरो थइने जे सामो मरशो, तैने इंद्रनी अप्सरा वरशो.
 एवी घालीने मनमा हाम, अभिमन्यु करे संग्राम;
 सामसामां बाण त्या मारे, कौरव जोधाने सहारे.
 नासे घालीने दांति तर्ण, जोढ्हा जाणे जे आव्युं मर्ण;
 अभिमने मार्युं मोह बाण, कौरव मोह पाम्या निर्वाण.
 हता दुयोधनना शत भात, पड्या मूर्छियि पृथ्वीपात;
 जोढ्हा ज्यां त्यां नाठा जाय, अभिमन सामो कोइ न थाय.
 कौरवने नसाडी लांय, अभिमन्यु उभो गढमांय;
 आ गढ केरो नव जाणुं भर्म, न भाग्यो भेद ने पड्यो भर्म.
 अरे दैव हवे जु कर्ण, क्यां थइने वार नीसर्ह;
 एवो मनशुं विचारज करे, वाट न सुझे चिंता धरे.
 धनुष एक छेडो मेल्यो धर्ण, वीजो ग्रीवा आगळ कर्ण.

अवाभां दैवपेति पशुम तूष्टि तेथी पनुभ्यनो छेडा गणाभां पेशी
 गेपे। तेथी अभिमन्यु भरणु पाम्यो।

जयदृथ केरुं प्रेरायु मन, आव्यो खङ्ग लङ्ग ज्यां अभिमन;
 तेणे मनमां आणी रीस, छेद्युं अभिमन केरुं शीशा.
 दुंदुभि नाद हवो ते दन, हरखो मन दुयोधन;
 कलो विशेशा कोठामां थयो, सांभळी भीम धाइ गयो.
 गदा लङ्ग आव्यो गढमांय, दीठो नही ते वटतां त्यांय;
 वात शुणी अभिमन्यु तो ढब्यो, दीगम्बूढ येह पाढ्यो वळ्यो.
 आव्यो भीम मुधिटिर पारा, शुणो वात मूक्यो निश्चास;
 स्वासि सूतनो आव्यो अत, कहेतां मांही कर्यो कल्पात.
 जुधिटिर दुख पाम्या धणु, शुणी मर्ण अभिमन्युतणु;
 वांक नहिं ते कुवर तणो, चढ्यो दोप आपणने धणो.

हाये करीने मराव्यो बाल आप्यो बोल न लीधी संभाळ,
चारे वीरा कुताना तन, दुख आणीने करे रुदन.

दाळ.

वैशापायन बोलिया, शुण जमेजय राजन;
सुभद्रा कुता आविया, ज्या पडियो अभिमन.
उत्तराये साभळीयु जे, रण ढळियो भरथार,
शरीरनी शुद्ध विसरीने, चाली तेणीवार
रुदन करती साचरी, अगळा ते बाळे वेश,
आकद करे अवनी ढळे, ने फाढे समूळा केश.
ग्राह त्राल मुखयी करे, आवी अभिमन्यु पास;
ब्रतक शब पडियु देसीने, मुके मुखनिश्वास.
नगर समीपे अर्जुन आव्या, शब्द सुण्यो ततकाळ,
वात शुणी अभिमायु ढळियो, उठी अरजुनने झाळ.
उत्तावळो धक्कीने आव्यो व्या, हस्तो पौतानो तन;
अर्जुन दुख पाम्यो घण, जोइने करे रुदन.
मूर्छा शु अवनि ढळ्यो, नहि शुद्ध शरीर लगार;
हाये शु हइयु हणे, ने रुदन करे अपार
पुत्र पुत्र मुखयी करे ने, अवनी पढाडे अग;
आळोटे अवनी विषे ने, थयो ढे गतिभग.
रुदपा साथे चापीने, आकद करे अपार,
शामाटे नवी बोलतो, मुज प्राणतणा आधार.
काळ चक्क्यो अर्जुनने, रस्तो पर्ण करे सौ माय;
आज हणु ए दुष्टने हु, सध्या पेलो त्याय
नहीकर भारी देह प्रजाळु, अस्मिमा केवाय;
उगते दीन सध्यासुधी, जो दुष्टने नव मराय.
जयदयने मार नहितो, नव वाधु हथियार;
अर्जुने त्या एम कहीने, पण कर्यु ते वार.

चोपाद.

दिठो दियस घटिका चार, अर्जुने बोध्यां हयिआर;
 विकार्यो जयद्रथ रणमांप, फरि युद्ध मंडाणुं त्यांप.
 अर्जुने मनं आणी रीस, मेल्युं वाण जई छेशुं शोश;
 दुंदुभि नाद हवो पावन, हख्या पुधिटिर राजन.
 सुभद्रापे कीधुं स्नान, प्रतिज्ञा पाळी भगवान.

दाढ़.

वैशंपायन एणी पेर बोल्या, शुण जन्मेजय राय;
 विस्तारी तुजने संभवाव्यो, भारतनो महिमाय.
 आद्य कभि मोटा रुपियो, हुं तेने नमु कर जोड़;
 अक्षर के पदवंथ नव लहुं, कोइ न देशो खोड़.
 उदीच्य ब्राह्मण सहस्रज्ञाति, अमदावाद नीवास;
 सुखराम सुत लजाराम, कहापे हरिनो दास.



शामळभट.

श्रीगोड माळवी व्राह्मण.

भगदावाद पासे वेगणयुर लेने हाल गोमतीयुर कहेते त्यांनो.
संवत् १७८१ सने १७२५ मां हतो.

—४३३—

तेना प्रसिद्ध ग्रंथ.

सिंहासनबत्रीशी, शिवपुराण, शुकवहोतेरी, रणठोडजीना
खोको, रेवासंड, वैताळपचीशी, नंदवत्रीशी, वगेरे.

रामश्याओ विषे छपा.

राठ नारिए नैरं, नार आठे नैर जाणु;
आठ नरे नरै एक, पुरुष ए त्रीश प्रमाणु.
वार पुरुष बळवतं, एक नरै नरपति जेवो;
एवा नर दशाहस्र, तरतिवे भोगव्य तेवो.
स्वामी जे सत्यांवीजनो, कश्यपि सुत जुग जोगवे;
शुभ आश्रिय शामळभट भणे, भूपतीनुं सुख भोगवे.
पैळ, घेडी, पैहोर, दिवर्ते, मासे, संवत्सर, चंडे, सूर्य.

त्रण अक्षर निज नाम, पग विना छे पांगलियो;
वै छे बाहु विशाळ, अंगमां नहि आंगलियो.
शीशा विना छे शरिर, मोज शाक्षिरी महाले;
अचनीयी अतरिक्ष, चरणविना ते चाले.
छे सूख करण संसारमां, लक्ष वसा शुभ लाज छे;
दाता आपे जन दीनने, कटनिवारण काज छे.

उत्तर-डगलो.

चूक्ष एकनां डौळ, वार भलि भात भणीजे;
पाँखिंडि त्रणसे साठ, गुणीजन जोइ गणीजे.
चतुर जुओ चोबोश, सरस फैळ तेने फळियां;
एकविस सहस्र छुसे, पैत्र कविलोके कळियां.

पण चौथ र्भाग ए पत्रनो, गृहस्थ शिर शोभित घणो,
ते आपे मागणने अधिक, वेणिदास रखियल तणो

उत्तर—पाघडी

वैर्ध, महिनौ, दिवैस, पखवाडिया, घंडी, पाघडी

भातभातना रग, लिलो पीछो के रातो,
लोह लकड वृक्ष बेल, राव रक दुर्बल मातो
कनक कथिर मणि रत, मेर मोटम तुछ तरणा,
जीव जनु पशु पक्षि, सिंह नर हस्ती हरणा
बळि जड चैतन नर नारियो, लायक जन लेखो लियो,
शामळ कहे चेतो चतुर नर, एक रग सीनो कियो

उत्तर—पड़छायो .

तरणी अक्षर त्रण्य, पातको सोटा सरखी,
रसमय रुडु रुप, पडिते प्रीते परखी
सपुत्र त्रण्य सतान, देवने टुर्लभ दीठा,
त्रण्य लोकमा तच, महोना अमृत माठा
माननि मन माने ते थकी, आण आणरे आ घडी,
शामळ कहे सहेजे समजनो, कहेशो कामनि शेलडी

शेलडी

नव अहमाही नाम, काम काशदनु करतो,
पूरण जन्मा परताप, तापनी हरकत हरतो
भागपश्चात्तिने भोग्य, रोग दुख दाझे देहे,
सारग नाम सरदार, सारगपर वाहन देहे.
तेने नामे जे नाम छे, ते आव्याधी दुख जशे,
ए शीघ्र स्वामीनी लावजो, तो वलती सोळे थशे

चादलो

कण रुडा कहेवाय, जमे नहि जन पण कोइ,
मरद वधारे मान, माननी रहे मन मोही
सार गणे ससार, भूप पण गणे भलाइ,
अतिशे उज्ज्वल अग, सग शोभीत शादाइ.

गोळाकरे गुणवत्त छे, प्रसन्न मन पूरण करे,
जो स्वामी शाश्वते लावशो, शामल कहे सोळे सरे
मोती

नार मळी दश बीश, पुरुष परठाणो जेनो,
सुरपति वाहन जात, तात जाणे सउ तेनो
नाम एक नर दोय, आवरदा वेनो सरखो,
वसे वेगळे वास, पडिते पूरे परट्यो
ते तालेबत तरुणी तणे, हस्तक स्डो नर हशे,
पड्याजी पेहेलो लावजो, लारपछी सोळे यजो

चूडो

समुत तणु छे नाम, सभामा शोधे सेहेलो,
रजना केरु रूप, पूजन शिव करता पेहेलो
नेह करे नर नार, देह शुभ आपे दाखे,
तस्करने मन ताप, भला जन तो शुभ भाखे
ते नरना तनथी नीपने, करुप कहेठे कामनी,
शामल कहे स्वामी लानशो, तो भजशे शुभ भामनी.

दीवानुं काजळ अथवा मेशा

साठ नारिये नार, नार आठे नर जाणु,
आठ नरे नर होय, पुरुष जो त्रीश प्रमाणु
वार नरे नर नाम, भाग त्रीजो ले तेनो,
अख मध्य ने आद्य, अमल जोरावर जेनो
हरघडि तेने हरनार ठे, टुख टाळे जे देहनु,
बळि जे माढे कौरव हण्या, तरत काम छे तेहनु

चीर.

काया कृष्ण रवृप, सुधड पण सारो सउथी,
भोगी नरने नाम, रिझे ते वेहेक वहूथी
पाखडिये परवेश, करे अतरिक्षथी आपे,
पस्ती गूण गणाय, पाय खटनी छे छापे

ए नर जेने अडके नहि, भाव धरीने नम भजे,
ते लाव कथ लेखाविना, तो सुदरि सोळे राजे.

चंपाना फूल.

त्रण अक्षर तरतीव, तेर गुण शोभा सारी,
राजद्वार सनमान, मान दे नर ने नारी
नपुसक छे निज नाम, पुरुष वे शोभे सगे,
काम वधारण काय, रजित ते सौने रगे
फल फूल विना छे फूटडू, कथ लाव कहे कामना,
तो शामळ कहे सोळे सजे, जोख करता जामनी

ताबुल

सरस सरोबर एक, भर्यु छे निर्मल नीरे,
पिये नहि कोइ पथि, हस नव बेसे तीरे.
ते सर समिप जाय, बुडे जन जोता जाशा,
दु ख न पामे देह, रहे तरतीवि ताजा.
कभि शामळ कहेछे कारमु, होशी जनने हित हशे,
स्वामी लावो सोहामणु, तो सोळे पूरा थशे.

दर्पण

चढ़ विव आकार, नाम वे अक्षर नारी;
स्त्री शृंगार शोभीत, बहू गुणनी बलिहारी
मुख भडन महारप, अनूपम दीसे देहे,
तेयी शोभे नार, कान शुणी नर नेहे
लक्ष्मी खरची ते लावजो, ए वण अडमु दीसशे;
शामळ कहे शामा जो सने, तेथी हड्डु हीसशे.

काननी आल

चार पुरुष परमाण, नेहे परण्या वे नारी;
तेने वे नपुसक तन, वपूर लुओ विचारी.
ए आठेनो टाठ, पुरुष परमाणो एके,
नारे विध्यो नरदेह, सुखे नीहाळो नेके.

ते लाव कथ कोडामणा, स्थिर थावर निस्त थोभशो;
कवि शामल भट साजु कहे, सोळ सज्या ते शोभशो.
पलंग.

बाला अक्षर वेज, नार नीची ने नानी;
नहि करपद नहि नेन, सरखकोने मन मानी.
नारि साथे नेह, रहे नारिने सगे,
उदर एहने गर्भ, राचे सी तेने रगे.
ते नारी नारीने गळे, तो दज रुडी दीपशो;
बृगार सोळमा शोभशो, तो जशा तारो जीतशो.

बीटी हिरा सुधां.

सरोवर सुदर सार, नौतमे नीर भयु डे,
नहि आरो नहि पाल, स्थार पण ठाम ठयु छे.
वनस्पति स्थिर वेल, विना पग मृग चरेछे,
विना धनुष ने बाण, विना कर चोट करेडे.
ते मारनार नयि दीशतो, मृग तेने मारी मरे;
ते लाव्य कथ कहे कामनी, देसी मन मारू ठरे
दीवो पवनथी ओलगायडे, ते

काळी नार कुरुप, अनुपम ओपे जाक्षी;
मौघी मौघे मूळ, त्रणे परख तेनी ताजी
नरयी उपजी नार, अरण्यमा एतो नरसी;
महिप सभामा मान, पवित्र पडिते परखी.
ठानी राखी जो छुळ करी, प्रसिद्ध पोते थायडे,
शामल कहे स्वामी लावजो, ए राया शिर राय छे.

कस्तूरी.

जीवविनानो साप, नेय पासेथो सरसो,
जराय मुराय नहि झेर, पडिते तेने परख्यो.
नर नारीनी कमर, रहे बीटी ते बास;
बख्त तणे वीवेक, सुशोभा सधब्बी सास.

वे दर तेनां वे पास छे, वहार गयो दीठी बहू;
शामल कहे समशा सेहेल छे, शुण्या थकी समजे सहू-
नाडुँ.

एक नार मुख दोय, भूप सभामी भाढ़ुँ;
गीर वरण मुख एक, एक कुरुपी काळुँ.
नहीं हाथ पग नहीं, घणेरी तरतिव तोले;
मारे महोकम मार, बूम पाडी ते बोले.
बछि झुडुँ अच भावे नहिं, काचुँ कचर्युँ खख करे;
डाक्षा दाता मनमाँ धरे, महिपति केराँ मन हरे.

पावाङ्ग.

वाहन वृपभ वहंत, पराकम अधिकुँ ओटे;
खंटभाल विशाल, कारभी दीठी कोटे.
भस्तक गंग तरंग, चहूपासे ते चाले;
करती हणहणकार, भूप सड नजरे भाले.
ए रामशा छे पण गिव नहिं, समजूने मन सेहेल छे;
जो बाटे घाटे दश दिशो, महिपति केरे मेहेज छे.

पाणीनी घटमाङ्ग.

चो मुखवाला चार, पुत्र पराकमी परख्या;
न को उच्च के नीच, शोभिता चारे सख्ता.
चार बचे वे नार, प्रीतनी रीते परण्या;
वेष नपुंसक तंन, आठ ए वेगे वरण्या.
थांय एके अलगुँ आठमाँ, तो साते नदि कामनी;
नर एक थाय ए आठथी, कहो अरय ए नेमना.

पलंग.

नामे कहिए नार, अधर अपनीयी सांधी;
वनिताने वण बांक, लोहने पाशे बांधी.
मानवि जण वे चार, चडी रुदयापर वेसे;
आधी पाठी जाय, ठरी ठेकाने वेसे.

चीसो पाडे चारे मुखे, दया न आवे देहमां;
शामळ कहे पंडित पारखो, नर नारीना नेहमां.

हिंचोलाखाट.

गुणमय गोल्कार, अधिकं अमृतनो भरियो;
ख्रीयो सहस्र दशा वीस, कबुल ते नरने करियो.
जो कोइ पासे जाय, नार दुःख तेने देढे;
अहो निश आठे जाम, अधर रस तेनो लेढे.
ते नरने मारे पारधी, रुधिर सरब जन खायछे;
शामळ कहे मांस रुधिर सदा, चौटामां वेचायछे.

मध्यपूडो.

मोतीने अनुमान, एथवीपर आवी पडियो;
को जाणे केनो माल, कंथ माराने जडियो.
सौंप्यो मारे हाथ, भला भोजनमां भलियो;
चोरि गयो को चोर, कोइ नर नारे गलियो.
फारि कोटि जतनयी नव जड्यो, लखजन जोतां लीजीए;
शामळ कहे शोध्यो नव मळे, तो शो उत्तर दीजीए.

पाणीनो करो.

अचरत सरखुं एक, सांभल्यु छे सी करणे;
जता दिठा जशवंत, तोलयी जन तो त्रणे.
खट पग ने खट हाथ, नेत्र बे दैवत देखे;
बे चरणे चालंत, ललित लक्षणयी लेखे.
ते कानने नामे नाम छे, सतयादी ज्ञोभित सदा;
कापि शापज्ज कहे शोषी जुझो, झूड जवन न जहुं जदा.

श्रवण कावडवाळो.

वृक्ष नही नहि बेल, नही पत्रे नहि फूले;
नही बीज यावेत्र, कहे कण असी अमूल्ये.
गुण जश अपरमपार, देश बाधामां दीठो;
देव दनुज नृप रंक, गणे अमृतयो भीठो.

छे मौंधा गुण मोती थकी, सौंधामां सौंधो सदा;
कवि शामळ कहे शोधी जुओ, कोइए नव तनियो कदा.

लचण अथवा मीठुं.

नारी निरखी नीच, जुओ लक्षण कहुं जेनां;
अंगे उबल्ही आप, वाप मा कालां तेनां.
नहीं हाथ नहि पाग, कुलक्षण तेनी कापा;
मुख नासा छे नेण, नहि ममता के माया.
ते नहि पशु पक्षी मानवी, नहि जीवा जोनी जदा;
शामळ कहे सुमति सलक्षणा, ते शोधी जोशे सदा.

सर्पनी कांचली.

एक बाल बे मूल, एक उपर एक हेठुं;
उपर पातळुं छेक, केडथी पहोळुं पीठुं.
तके मुख तैगां जीभ, तेह बोलाव्युं बोले;
हलावतां हालेंत, बली ढोलाव्युं ढोले.
इधर आगळ अधिकुं रहे, गुणवंता जनने गमे;
शामळ कवि कहे ते ऊचरे, जगत लोक तेने नमे.

देवनी घंटा.

रथ दीठो समरथ्य, अधर अवनीमां चाले;
ब्रह्मा नामे नाम, मंदिर तेनामां माले.
अपरमपार अपार, प्रजा पेदा त्वां थाय;
वेठे अग्नि आंच, मार पण शाशो खाय.
आवे अमुल्य कामे अरथ, मूल अल्प माटे भळे;
शामळ कहेछे शोधी जुओ, कनि रुडा ते तो फळे.

कुंभारनुं चाक.

नीच धेर छे नार, देश बाधामां दावे;
मुखमां मोटी जीभ, रीशधी बाहार राखे.
नहीं हाथ नहि पाग, शीशविना मुख बोले;
फेरे छुव ते शीश, नमे कण अधिक अतोले.

घरधणि तो गीतो गायच्छे, पवित्र नर पुठे फरे;
शामळ कहे एठु एहनु, मोटा जन भस्तक धरे.

घाणी.

चातुर नर तु चेत, एक अचरत में दीठु;
सुदर सूप स्वसूप, अधिक अमृतयी मीठु.
काया उपर हाड, हाडपर गाल भणीजे;
वाल उपर छे रधिर, सुगुण तेनाज गणीजे.
खरि ते उपर तो साल छे, खाल उपर बाल्जन नथी;
बळि मुखमांथी अमृत झारे, शामळ कहे कहीं कथी.

केरी.

प्रमदा एक प्रचड, अधर अवनीपर राचे;
उपर उभा वे चार, जेम नचवे खम नाचे.
ज्यम होय जेही मल्ह, जोर आशेयी झूँझे;
बोले बोल बलवत, धरा बाधी त्या ध्रूजे.
पाणी तो तेह पिये नही, अन्न अलेखे खायच्छे;
बळि चरण नथी पण चाच छे, एठु एनु सौ चहायच्छे.

जे वडे पुंवा खंडायच्छे ते ढींकणी.

भयुं नारिमा नीर, पुरुष एक पीवा साध्यो;
वे नारिये बळवत, अवळा समळी बांध्यो.
अवनीयी अतरिक्ष, नार नचवे खम नाचे;
वारु उत्तम वश, रिद्धि रुडीथी राचे.
परभाति राग रुडे स्वरे, गुण रुडेरा गायच्छे;
शामळ कहे घेर श्रीमतने, जहर एह जणायच्छे.

बलोणु.

कहु वरतुल आकार, छन जेवी छत ठाजे;
शान्तु सरीखा साल, भामनी देखी भाजे.
बख्खाभरण विवेक, फूल भरिया भली भाते;
मोघी छे महामुल्य, जोइ जोरावर जाते.

शूरामांहि शूरी घणी, सौथी आगळ संचरे;
अरिंगंजण रक्षण देहनी, अर्थ कवी शामळ करे.

टाल.

मस्तक पाखी मूळ, दिठो में तेनो डंमर;
झुंडाळो समरथ्य, हस्ति नहि काळो भंमर.
प्रोहुं दीझे पुळ, लांबि एक पासे चोटी;
मेह समोवड मान, मूल मर्यादा मोटी.
आहार अन्ज ओपे नहि, पेठ भरी पाणी पिये;
शामळ कहे व्रत घणां करे, कहो अरथ कारण किये.

पाणिनो कोस.

चतुर चैत मुख चार, नहीं न्रज्ञा व्रह्णाणी;
वृषभारुद वाहन, नहीं रुद्रे रुद्राणी.
जल पूरण जशवंत, नदीज नवाण नवाणी;
सेवक शोभे साथ, नहीं राजा के राणी.
ए अकल्पवंत अंतर धरो, झुं बळि बळी नखाणिये;
छे समशा कवि शामळ तर्णा, जशवंता जन जाणिये.

परणीनी पखाल.

रत्नधी रुडो अमुख्य, फूल फल सफले फळियो;
करे कथिरनुं कनक, बहु गुण तेथी बळियो.
साग शिशाम वृक्षवेल, भार अटारे भारी;
अमृतफळ सहकार, तेथी शुभ शोभा सारी.
छे लाज रखण सौ लोकनी, चहाय देव ने दानवी;
कवि शामळ कहे शोधी झुओ, महासुख देयण मानवी.

कपास.

पांखाळो परतापि, नहीं पंखीमां पूरो;
धंध मचे त्यां धाय, नहीं शामद कै शूरो.
गानंतो भंभीर, मेहमां कोइ न प्रमाणे;
छे पातळियो छेक, झुए ते तो जन जाणे.

लाडकडो ते रिपु लोकने, जे छे जमकिंकर जसो,
कवि शामळ कहे शोधी नुओ, कहो अरथ ए ते कशो.
तीर.

मुके काट फळ लाग, तेनि शोभा छे सारी,
ब्रण अक्षरमा तोल, नाम कहेतामा नारी
लावि पातळी लाठ, कलक कायामा कुडी;
जुवानिनु छे जोर, बहु जन कहेछे बुडी
झाझु ते फळमा झेर छे, चपळ लोक शु चापछे,
शामळ ते फळ आरोगता, जन जमलोके जायछे
दरछी

लापड पुऱ्ह लखाय, नहीं वादर दूकडियो,
राती माजर शोश, नहीं माझड कूकडियो
अतिशय झेरी अग, नहीं बीठी नहि सापे,
नृष्टि समे वाधत, तरुण तो थाये तापे
बनमा वस्तीमा पण वसे, तोऽन काई तेमा नयी,
कवि शामळ कहे जे समजशे, कहु डाख्यो तेने कथी.
काचडो.

नारी एक अनुप, सरस शोभती सेहेली,
बे अक्षरमा नाम, भूढ रुदयामा मेली
उदर वचे एक शाग, एक आखे दिल देसे,
पवित्र सग पोसाय, डाहि दुनिया पुर पेखे
ते मुखयो नळ प्राशन करे, शिंगेथी आखे जारे,
कवि शामळ कहे शोभे तहा, ज्या वरने काया वरे
शारी

ठेल कुदतो ठेक, एक कहे ए तो धोरी,
शिंग नयो ते शीश, कहे त्यारे तो तोरी
पीठे नयी पलण, सारे तो मेडक माणी,
नयि रहेतो ते नीर, जहर कोइ शशलो नाणे.
पण शशलाने पग चार छे, पग विण आतो परबरे;
शामळ कहे अर्ध सहेल छे, रुडा जन रुदये धोरे.

चाचड.

पुण्य सुपात्र पवित्र, कूल एवानी कन्या;
 किधो पितानो काळ, एह पण भोटो अन्या.
 वरी बडाउवा साथ, जात रुडो ते जाणी;
 काइ न चड्यु कलक, बडा लोकोए वसाणी.
 कहो कवण नार पीता कवण, कवण बडाउवाने वरी;
 वळि कवण कूल पेदा थइ, शामळ कहे ते सुदरी.

छात्रा.

नही नपुसक नार, नकी नरने छे नामे;
 अमृत तुल्य आहार, करता न ठरे ठामे.
 निर्मळ नीर झरत, पूर्ण गुण अपरम पारी;
 दुर्लभ जाणे देव, सकळ गुण शोभा सारी
 छे तता तेह प्रण लोकमा, भाग्यशाळि जन भोग्ये;
 शामळ कहे तेथी नीपजे, जे जर गाठे जोग्ये.

कोळ, शेलडी पीलवानो.

बळमा रहि जीवत, नही मेडक नहि मच्छी;
 चारे दिश चालत, नही पशु के नहि पक्षी.
 पग विण वहे प्रवाह, पवन पण वहि नहि पाणी;
 लक्ष्मी लीला लेहेर, नही राजा नहि राणी.
 छे तत्व तोल तारण तरण, बुडताने राखे बहू;
 वळि पार उतारे पलकमा, शामळ कहे समजो सहू.

नाव.

एक भात सतान, नपुसक ने एक नारी;
 ते बेना सतान, अलेखे अपरम पारी.
 नपुसकना सतान, अरथ अधिके नव आवे;
 वडे मूळ बेचाय, भूप जेवाने भावे.
 बाळक जे तेनी बेहेनना, सर्व अरथ तेथी सरे;
 शामळ कहे पण सौंधा सहु, कोडि कोडि करता फरे.
 सोनुं अने माटी.

शामा छे शामली, स्वरूपे पण शोहती;
 भमराळी भरपूर, मरद मोठम मोहती.
 वपु वरणागणी वेश, वळी वळवाळी वकी,
 दुशमन गजण दाख, सार शोभित सिंह लकी
 ते नार वडे नर शोभशे, ते विण मुख लनामणा;
 कहे शामळ ए समझा कहो, भलि रीते लेज भामणा.

मूळ.

पखणि एक प्रमाण, कोडथी नारि कहावे,
 ज्या मोकलिये जाय, आप तेढावी आवे.
 ऊडे ते आकाश, नहीं समळी नहि गरजण,
 सूत्रसहित शोभत, नहीं दाइ के दरजण
 गमीर घोषथी गरजती, धजा फूके वारणे,
 शामळ कहे शाणा समजजो, कवण नार ते कारणे.

पडाइ

प्रतापवतो पुरुष, जनोइ अग धरेछे,
 प्रौढ पेसिये पेट, शिंग एक शीशा सरेछे.
 चरतो साते चाच, कोटिधा नृथ करेठे,
 वाळक तेझु वाह, ठामने ठाम ठरेछे
 फरि जाणेठे ते फूदडी, धोर स्वरे गुण गायठे,
 शामळ कहे तेना सगथी, वधते मुल वेचायछे

रेशमनो रेंटियो.

अचरत एक अपार, वपु जोता वाकडियु;
 पाठळ पुठ विशाळ, शोभतु मुख साकडियु
 रुप वहू वहु नाम, धणी वावत मुख बोले,
 छुत्रिश गगनि ऊय, दशो दिशमा ते डोले.
 बोलाव्यु बोले नीच घेर, उच अमिरने वश करे,
 शामळ कहे समशा शोभती, धारक खडा मन धरे.

दारणाई, त्रूट, वणगुं

निरसी नहानी नार, काइ उजळी काइ काली;
 कपटी कूड़ कलक, पड़मा पोढ़ी पाली.
 पग लाजा वै बाहु, बध बाधी छे बेडी;
 अनमो नर अहकार, टेक रासती टेढी.
 ते भामनि भौंडर भोगचे, भूपतिनी पासे भजे;
 दुशमन तेने देखी डरे, शामळ कहे शोभा सजे.

कटारी.

शीश विनानी नार, मूल मोटु सुख माणे;
 भोरिंगनो जे भक्ष, जमा ते शाङु जाणे.
 पलक न राखि पेट, वळी ऊठे वळि प्रेसे;
 पातळु थइने पेट, तेह एथ्वीमा प्रेसे.
 वाका कदुणने वश करे, वळताने वळे बहु;
 समज्या केडे तो सेहेल छे, शामळ कहे शोधो सहू.

धमण.

नौतम निरसी नार, जुलमवाली झळकती;
 नही हाथ नहि पाग, लाड शाङ्के लळकती.
 मदिरमा भाल्त, ओपती ओढी पेहेरी;
 नासे थइ निरमाल्य, बाद करतो जे वेरी.
 छे नारि जात निरबळ नही, काळि करुप काया थकी;
 शामळ कहे शाणा समजशो, कहु डाढ्या तेने नकी.

तरवार.

आव्यो सोदागर एक, माल लाखेणो लाव्यो,
 गरथ कमावा काज, भलो सउ जनने भाव्यो
 हय हाथी सुखपाल, लक्ष्मा लाखे लेखे;
 जेने जेनु काम, दृष्टिए दुनिया देखे.
 पुठि तेज घडीने ते दिवस, रखो न पैसे रोकडो;
 हुड्डी पत्री तो होयशी, दिशो न गाठे दोकडी.
 माटीनां रमकडां पर्खाथी भागी गयां.

नहीं पुरुष छे नार, निहाली जोता नामे;
 चद्रिंग आकार, नथी ते ठामे ठामे.
 राजद्वार रहत, अधर अवनीधी बाधी;
 ज्योतिप विद्या जाण, समय देखीने साधी.
 ते मार ताय महोकमपणे, बूम पाडी बोले बहू;
 नाना भोटा नर नारियो, शामल कहे शुणे सह.

घडियाळ.

एक नारि निर्माण, प्रमाणिक जने प्रमाणी,
 वीश पुत्र बळवत, निनिध शु कहु बस्ताणी.
 तेने सुत चच्चार, सुता वे वे वळि तेनी;
 पुत्रीनो परिवार, जगतमा शोभा जेनी.
 चच्चल सुत तो चच्चार छे, तेह सबाया शेर छे;
 कवि शामल कहे शोधी जुओ, भद्रिमा मोटो मेर छे
 दीश मणनी खाडी.

पुरुष एक वयचृद्ध, खरि तेने खट नारी;
 तेने वे वे तनुज, तनुजने सुदरि सारी.
 एक श्वेत एक शाम, पुत्र पछि तेना आशा;
 पदर पदर प्रमाण, तेह बळी कहिये ताजा.
 जे नाममात्रनो नाश छे, कोड शास्त्र कहेउे कथी;
 पण शामल ए परिवारनो, नाश काइ काळे नथी.

संवत्सर अयवा वर्ष.

पुरुष एक पवित्र, पराक्रमि दीठो पोढो;
 चच्चल चाहु चाल, जाण जशवतो जोडो.
 राजमारगे रोज, मोज जाक्करी माले;
 जर विद्यानी जोस, चहि चोसुटे चाले.
 नर एक नारि वे निरसिये, अधर उपाडीने लिये;
 छे नाम एक वे नारनु, कहे शामल कारण किये.
 पावडीनो बोढो.

व्यदल मली दश वीशा, नपुसक टोळु कोधु;
 सोयक नानी नार, बधने बाधी लीधु.
 नवरात्रु धरि नेह, रुदेमा रात्रि रमाड्यु,
 परमेश्वरथी प्रथम, जुगतथो तेने जमाड्यु.
 तेनु जूठू सौ को जमे, गुण तेना पण सउ गणे,
 शामळ ए समशा शोधशो, घटमा जे डहापण धणे

पत्राङ्कुं.

नारि छे नव रग, नहि मा बापनि सृष्टी;
 नही बीज बावेत्र, नही निपनावे वृष्टी.
 नहि अबनी आकाश, नही कोई तेनु जोडु,
 छे मुख नासा नेण, पुछ पण परठयु पोडु.
 ते नारि नारिये नथि जणी, स्वरूप उजळे साचली;
 पररो तो पेहेरो पाघडी, नही तो पेहेरो काचली.

सर्पनी काचली.

अतिशय मोटू भूख, बेय पासाथी सरखु,
 एकज सोंग अनूप, विना पाणी ते परख्यु.
 लक्ष हजारो लोक, सौ रहे तेने शरणे;
 निरमळ साथे नेह, चाल चाले यण चरणे.
 समशा छे सागर जेवडी, अकल्यवत कहे आवड्यु,
 शामळ कवि कहेछे शीखयु, नको कहो जो नावड्यु.

नावडुं.

नहि नर के नहि नार, नपुसक सरखु नामे;
 देश देश प्रवेश, घणा गुण गामे गामि.
 ज्योतिष निदा जाण, वात वनवानी बूझो;
 खटू शास्त्रो भणनार, तेने पण तेथी सूजे.
 अजवाळु एथो अवनिमा, जे भविष्य जाहेर करे;
 आवरदा ओछो एहनो, वर्ष जीवि वळती यरे.

टीपुं.

गोळ पुस्तप गुणवत, दिठो मे गामे गामे,
दशशिर मल्लतु नाम, नहीं राखण ए ठामे.
ए थाए असवार, धरे वाहन शोभाते;
चतुर चूकवे न्याय, पूछे जो मानव जाते
या कोइनु महो राखे नहीं, लाच कोइनी नव लिये,
शामल कहे ते सतवादियो, देसे तेवु कहि दिये.

दशशेरो

खट पुरुषे एक नार, नार त्रणे नर जाणु,
सोळ नरे नर होय, पराक्रमि ते परमाणु
वे पुरुषे एक पुस्तप, भाग द्वादशने नामे,
करी वायदो कथ, गया गुणवता गामे
यधता तो बीशक वही गथा, बस्या तहा के वाटमा,
शामल कहेछे ते सुदरी, अति दीठी ऊचाटमा
(छ चौबानी रती त्रण रतीनो बाल सोळ बालनो
गदियाणो वे गदियाणानो तोलो तोलानो

बारमो भाग भासो. एटले महिनो)

खट पम तो छे खरा, भमर तो नहि ते भाइ,
एक वासो वे जीर्ण, कहु शी तेनो कमाइ
विधि बने गम नाक, नाथ घाली घणि मोटो,
जुओ करमना जोग, चोटि वासा चच मोटी.
ताजु कहेछे सी तेहने, छे जुनु जो जोएमा,
शामल कवि कहे सदा चसे, साहुकार धेर शोखमा

ताजयु

अतरिक्ष नार अनूप, तेह डोलावी डोले,
महोकम खाये मार, बहू बकवा करी बोले.
मुखविण मोटु शीश, जनोइ कठे घाले;
बाधेली बलधाति, मोज मदिरमा माले
ते हस्त प्रहरे जेहने, ते शोभावे सर्वने,
शामल कहे ए शमशा कहो, के मूको मन गर्वने.

पोजारानी तान

मस्तक मोटु हीय, मूख तेनु नव दीटु,
अज्ज नीर नव खाय, बदे अमृतथी मिठु.
पोढा पग ने पेट, प्रीतधी पच प्रभाणे,
राजद्वार रहत, कदी मोठा परमाणे
सारग नाम शोभीत छे, वरसे सारग वाणिये;
समजे समशा शामळ तणी, ते जशवता जाणिये.

तंबुरी.

बसें हाथनी बाळ, कहु शी तेनी करणी;
पाच हाथनो पुरुष, प्रीतधी तेने परणी.
कामनि वश करि कथ, बळ करी बाधी लीधो,
सारे पाप्यो मान, कुल सउ लोके काधो.
नर नारि विजा ते भोगवे, लपट कोइए नव कहे,
कवि शामळ भट सानु कहे, रुचि सौकोने निय रहे
खट्टलो अने भरवानी पाटी.

एक नार खट चरण, पारवाळी रस राचे,
जात जोरावर जाण, नदनथी अमृत साचे.
उत्तम अघम अहार, उच नीचे नइ पेसे;
दिवसे ते देवत, निशा अधी यइ बेसे.
कोइ एनी आभड्हेटने, गणे नही भमता भयन;
समर्प्या केडे तो सहेल छे, कहो नार ए ते कवण.

माल्ही

नारी नहु बल्हरत, रहे पोढी पुर प्रीति;
करे अहार अपार, नहो ते रुडी रीते.
पुठळ आख ने कान, बहु जोरावर बोले,
शूरु केह सार, देत्ति तेने दुर डोले.
ते राजद्वार रास्ते रहे, अजित कहाने आपमा;
शूर पण कायर थायछे, ते नारीना तापमा

तोप

नपुराक सरखु नाम, महिपने मदिर महाले;
नर नारी चनोड, पडी बाहा ते चाहे.

शाह सुबा सुलतान, मान पामे ते महिमा;
 त्रिविधी पाडे पास, शूर सामदा ने सामा.
 छानु राख्यु ते नव रहे, बोलान्यु बोले बारणे;
 शामळ कहे समजे सुलक्षणा, कवण अर्पे ए कारणे.

नगारुं.

वृक्ष उपरे वास, मान पदवी छे मोटी;
 जटा ब्रिराजे शीप, चारु ते उपर चोटी.
 त्रण नेत्रो तनमाहि, नही शिवजीनो सगे;
 अमृत सरखु नीर, नही गुणवती गगे.
 ते जगन जागमा नश लिये, ओळु भगलमा अती;
 छे नरम हाड काया कठण, शामळ कहे शोधो सती.

नान्दिएर.

नगर एक नवरग, दिसे चारे दरवाजा;
 वरण चारनो वास, जगत नश महिमा जाझा.
 भद्रिर छनु महान, पडे पादर त्रण पासा;
 करे राज वे वीर, क्षत्रिवटयी ते खासा.
 सुदर साहेली सोळ छे, रमत रमे तेशु निये,
 ते कवण नारिने नगर शु, चातुर जन चेतो चिते.

सोगटावाजी.

अग्नि तणी वहु आच, एक मरदे शिर माणी;
 गीजे हीमे हाड, गाल्या वरवाने राणी.
 त्रिजे करवत लीभ, कपावी कष्टे काया;
 त्रण पाम्या एक नारि, माननी उपर माया
 उे जण नाम ते नारिना, नपुसक नर ने मेरिओ,
 कवि शामळ भट सचु कहे, लक्ष्मीवतनो लहेरिओ.
 पान, तंबोळ, नागर्त्तेल, चूनी, काथो, अने फोफळ.
 अतिशे उन्नल अग, यपो काळो ते करमे;
 खट् दर्शन रट शाल्ल, धरे अतरमा धरमे.
 पोते जात पवित्र, न्हाया धोयाथी नासे,
 जळ पिधे जीवे न, परक न रहे जळपासे.

परमार्थीं पराकमी घणो, पर मूलकमा परवरे;
शामळ कहे शाह सुलतान सउ, अधिक आश एनी के.

कागळ.

अभागिया विपे छपा.

निर्भागी जाय गग, कट पामे कूटाय;
जौ ते रळवा जाय, लाभ सुद्धा लूटाय.
अभागि परणे नार, नाय निसरी के मरशे;
अभागि पामे गरथ, चोर के हाकम हरशे.
निरभागी बेसे घोड़ले, पड़शे के पग भागशे;
निरभागीने मदिर भळे, पड़शे के दब लागशे.
अभागि जमवा जाय, भुरयो रहे के बळे वासी;
वेद सरस जो वात, लोक फरशे सउ हासी.
अभागी डाढ्यो थाय, घणा जन तो कहे घेलो;
जो नव बोले बोल, कहे हइयानो मेलो.
सउ कर्महीन कूटायठे, गरय ज्ञाननी गूटको,
शामळ कहेठे निर्भागिनो, कशि वाते नहि ढूटको
अभागि बहु आदरे, थयो कहेशे हडकायो,
जो उदाम नव करे, अकरमी ए कहेवायो.
जौ ते ज्ञानु खाय, थयो कहेशे अकरायो,
जौ ते गाणु गाय, थाय विस्तारे वातो.
आपे को सिधु अकर्मिने, पडियो काणो नीकळे,
शामळ कहे सउको समजजो, खोट अकर्मिने खळे.

धनवादी अने विद्यावादीनो संवाद.

प्रथम धनवादी बोल्यो.

छपा.

जरने वश छे जगत, राय पण जरयी रीझे;
जुक्ती जर वश होव, लाभ पण जरयी लाजे.

जर सज्जनं सनमान, जरे जशवंत कहावे;
 जरथी पामे जोख, सती शुभ कुळनी आवे.
 जरनुंज जगतमां जोर छे, दुरिजन जरे नमे सहू;
 शामल कहेछे जर जोरथी, बापो एम कहे बहू.
 जर माता ने तात, जात ते जरथी जाणो;
 डहापण पण छे दाम, दाम राजाने राणो.
 सगां सहोदर सर्व, द्रव्य वणजे बेपारी;
 रंग ने रूप अमूप, द्रव्य ते धोरज धारी.
 सौ जगत वस्युं छे जर थकी, गरथमांहि गुण चहु गणुं;
 शामल कहे स्वर्गे संचरे, जोर होय जो जर तणु.
 विप्र भणेछे वेद, जंड जरने ते जाचे;
 साधक ने बळि सिद्ध, रुदे जरथी से राचे.
 शूरा वांधे शख, जरथकी ते कर जोडे;
 अनमी ने अहंकारि, हाथ जर आगछ ओडे.
 गमी नामी ने महिपती, जरने वश वरती रहे;
 शामल कहेछे संसार सौ, दमडाने डाढ्हो कहे
 जरथी पामे जोख, जरे इंद्रासन आणो;
 जरथी जग जीताय, जरथकी मोटम माणो.
 जरथी लाख करोड, होड सठोला हारे;
 जरथी राज्य थपाय, जरे ज्ञाज्ञाने मारे.
 एम जगत वश्यं छे जरतणे, चितवे तेवा गुण गणे;
 जगदीश ईश वश जर तणे, शामल भट साचुं भणे.
 घणो जेह घर गरथ, रूप तेने घेर रहेछे;
 घणो जेह घर गरथ, कुलिन पण तेने कहेछे.
 घणो जेह घर गरथ, रहे वश तेने राजा;
 घणो जेह घर गरथ, सुजश बोले जन ज्ञाज्ञा.
 जर तो छे जीवनथी अधिक, बुद्धि निधान प्राक्रम बहू;
 शामल सेवक श्रीमंतना, शात प्रकार शोभित सहू.
 जर विना जे जोख, शोख ते तो नहि साचो;
 जर विण तनमां प्राण, कहु करतु ते काचो.

जर विना जे रूप, देह कूरुषी कूडो;
 जर विण मंदिर माल, भर्म राखे ते भूंडो.
 जर विण डहापण छु जेटलुं, ते घेलापण जाणवुं;
 शामळ कहे सधली चोन तै, जगमां जर परमाणवुं.
 जरथी शीभे सर्व, वेदना जरथी वामे;
 जरथी झीते न्याय, जरे मन वांछित पामे.
 जरथी सगपण साथ, करे जरथी सौ काजे;
 जर ओढावे हाथ, जर थकी सरवे लाजे.
 जर तरणानो मेह करे, राज्य अपावे रंकने;
 कवि शामळ कहेछे जरथकी, पामर लूटे लंकने.
 गाठे जेने गरय, भली ते विद्या भणियो;
 गाठे जेने गरय, रहे नहि कोइनो रणियो.
 गाठे जेने गरय, तेज पंडित छे पूरो;
 गाठे जेने गरय, तेज छे सामद शुरो.
 वलि गाठे जेने गरय छे, पराक्रमी परमाणवो;
 शामळ कहेछे संसारमां, जर विण मूरख जाणवो.
 जर छे सौनो जीच, जरे ले महासुख माणी;
 करे पराणे प्रीत, रंक राजाने राणी.
 नर वश वधु जगत, जरे जुवती वश थाय;
 जर आगळ कर जोटी, रहे भोटा ऋषिराय.
 जर जंगलमां मंगळ करे, जुगती सरवे जोगवे;
 शामळ कहे धनथी धनपती, भारे सुख ते भोगवे.
 डहापण दमडामाहि, रहे दमडामां यारो;
 दमडामाहो स्प, भेद दमडामां भारो.
 जो दमडामां जोर, रहे बज याइने राजा;
 दमडे उच अधिकार, गुण दमडामां शाशा.
 दमडो छु मौथो देवने, वण दमडे सौ यामणां;
 शामळ कहेछे दमडातणा, भात भात लेउ भामणां.
 जर देखी जशवेत, गूण ने जान गमावे;
 धन देखी धनवंत, नीचने शीश नमावे.

सोनु देखी श्रीमत, कपटनु काम करेछे,
 गरय देखि गुणवत, हेतथी हाथ धरेछे
 राजानी के शु राकनी, निर्मल कुछनी मारियो;
 शामल कहेछे सत्य नाणजो, जर देखी करे जारियो.
 शूर कपावे शोश, चतुर चाकरी चहाये,
 नाचेछे नृत्यवत, गीत गुणिजन यह गाये.
 विद्यावत विदेशा, जाचवा कारण जाये,
 मजुर वहे शिर भार, कष्ट काशद सहे काये.
 जे जे उपाय आयाय जे, रिद्धि वगाडे वारणे;
 शामल कहे शाणा समजजो, द्रव्य कमावा कारणे.
 जर पाखी जगमाहि, मोज एके शी माणे;
 जर पाखी जगमाहि, आप अक्ल शी आणे.
 जर पाखी जगमाहि, स्वाद एके नव सूजे;
 जर पाखी जगमाहि, बडाई कशी न वूदो.
 जर पाखी तो जख मारता, फेरे विजु दूँझे बहू,
 शामल कहेछे जर जोरथी, शुभ वातो सूजे सहू.
 दमडा पाखी दरिद्र, कुलिन ते किंकर कहावे;
 रिद्धिविना ते रक, प्रतिष्ठा मान गमावे.
 विद्या अने विवेक, दाम आगळ सी झूल्या;
 जे जे करवा जाय, भरमयो सरवे भूल्या
 जे शूर पूर शाणा घणा, वपु वरणागी वाकडा;
 शामल कहे रौ ससारमा, रिद्धि विनाना राकडा.
 जेने जरनु जोर, जुल्म जाईयो करि झूसे,
 जेने जरनु जोर, विजाने ते नव वूँझे.
 जेने जरनु जोर, अहपद अविशे आणे;
 जेने जरनु जोर, जगत उजड ते जाणे.
 वलि जेने जरनु जोर छै, छाक्यो रहे अमले अती;
 शामल कहेछे सदबुद्धि वण, सहु न याय तेथी रती.
 वे हाथीनु जोर, बाहु वे माहि विराजे,
 वाघ सिंहनी पेर, गरय गाढे ते गाजे.

भूख तड़को के टाढ, नहीं जर पासे जाय;
 व्यतर भूत के प्रेत, कदी चैटक न चहाय.
 मन मदीरा शेर सवातणी, केफा रादा आवी बसे;
 शामल कहे दुखियो दुःख कहे, जरवालो हैडे हसे.
 निरधन बोले सख, कहे जरवालो जूठी;
 निरधन गाणु गाय, जाय जरवालो ऊठी.
 हाहा करे सउ लोक, बदे जरवालो जूँहु;
 रिद्धि उपर सउ राजी, रिद्धि पाखी सउ रुँहु.
 चौदे विदानी चातुरी, गरय साथ बासो रहे;
 वक्ति कर्म धर्मने शर्म सउ, कवि शामल जरने कहे.

दोहरा.

देशधा दरिद्र घर विधे, दरिद्र घर घरतू़न;
 अर्थ सरे कपम गर्थ विण, परणे क्षयाथी पू़ग.
 शु करे विदा बापडी, शु करे रुँहु रुप;
 लक्षण सी लक्ष्मी विना, पडे कारमे कूप.
 शु करे विचारु शाणपण, करे शु बारु वर्ण;
 धन विना धातो फरे, तुच्छ छेक व्यम तर्ण.
 जेबु सुख शमणा तणु, नहि मूळ नहि डाल्छ;
 मनोरथो निरधन तणा, सरव आळ पपाळ.
 दरिद्र सरखु दुरय नहि, श्रीमत समु नहि सूख;
 लक्ष्मीवत लीला नहि, भागे भारे भूख.
 लायक सी लक्ष्मी बडे, लक्ष्मी पाखी लीन;
 जर विण जश जीते नही, देह दामणा दिन.
 लक्षण वत्रिश लक्ष्मी विना, शब्दत् सर्वे शून्य;
 बोतेर कळा वेशी रहे, निर्णय करता नुन्य.
 दरिद्र होय डाल्हो घणो, गाता आवडे गान;
 ए गुण कोइने नव गमे, कहे शीद फोडे कान.
 मेलो मलिन हिडे घणो, दृढ गाठे होय द्रव्य;
 विश्व वराणे तेहने, सादो कहे जन सर्व.

कोशरियो ने कुलक्षणो, कायर कपटी कूड़;
जर होये जश दे सउ, पराकमी ए प्रौढ़.
वेद पात्र विद्या निधी, सकळ शोभावे साथ;
लक्ष्मीवंत आगळ नड, हेते ओडे हाथ.
जोराळा जम दुतथी, धाराळा महा धीर;
जर कारण जश गायच्छे, सौंपे शीर शरीर.
कविता होय सविता समो, नौतम नाम गणाय;
लोभे लक्षपति कने, जर जाचण ते जाय.
नगर तणो होय नरपति, अनमो करे सहु अर्ज़;
क्रोडपतिने करगरे, काढवा मागे कर्ज.
कळावंत कळा करे, गुण खडा सहु गाय;
राग संभळावी रीझवे, जरपति पासे जाय.
वांका ने वरणागिया, फोगट भारे फूल्य;
मुके पूत्र मोताळमां, धन चिण डहापण धूल.

हवे विद्यावादी वोल्यो.

विद्याविषे छपा.

सदविद्याज सुवर्ण, शरण सद्विद्या सव्ये;
सदविद्यायी स्वर्ग, वीस ऊतारण वित्ते.
सदविद्यायी सिद्धि, फळे चचनो वर वाणी;
सदविद्यायी रिद्धि, जगतमां सघळे जाणी.
सदविद्याने वश सर्व छे, सदविद्या खां शी मणा;
शामळ कहे सदविद्या विना, भटके गुणहीणा घणा.
लक्ष्यतों तो लाख, दिठा निर्माल्य प्रमाणे;
जाय रायनु राज्य, रूप पण रहे न टाणे.
कुळ पण होय कलंकि, जोर जोताभां जाये;
जोबन पण वहि जाय, वंश निवंशी थाये.
नहि राज चोर के अभि भय, माग मुकावे वहु थकी;
मोठा पुर्हपो मन मानजो, सदविद्या शुभ सहु थकी.

मुकावे विद्या माग, पूर्ण जश्च विद्या पामे;
 विद्या शोभे वान, नृपति विद्याने नामे.
 विद्यामांहि विनेक, विमल विद्याथी जाणी;
 विद्याने वश विश्व, जगतमां मोहनि जाणी.
 सदविद्या रत्न विशाल छे, विद्याथी बडु नहि कशुं;
 सदविद्या आगळ धन कशुं, विद्याहिन जन ते पशु-
 पंडित आगळ मूढ, हंस आगळ ज्यम बग्गी;
 पंडित आगळ मूढ, कोकिला आगळ कग्गी.
 पंडित आगळ मूढ, राय आगळ ज्यम राँकां;
 पंडित आगळ मूढ, सिंधु आगळ ज्यम टाँकां.
 छे पंडितमां प्राकमै धणां, पंडित सठ शिरमोर छे;
 शामळ कहे पंडित आगळे, मूढ तो चाकर चौर छे.
 मूरखने वाहन, पंडित अणुवाणो चाले;
 मूरखने मोतिहार, पंडित फुलमाला घाले.
 मूरखने बहुमान, पंडित कदि गरीब कहावे;
 मूरखने अलखत मोज, पंडित खड धान्यज खावे.
 पण मूरख काच कथीर छे, दीसंता तो दिल हरे;
 पण पंडित रत्न अमूल्य छे, शामळ जो परिक्षा करे.
 मूरखने नहि मान, मूर्ख शाजामां झूरे;
 दे न मूरखने दान, मूर्खमां अकल अधूरे.
 मूरख हलको होय, वहु गुणवंतो बोले;
 मूर्ख न लेखामांहि, नहि पंडितने तोले.
 चे हंस मध्य वगलां पङ्चां, कारण शुं जाणे कशुं;
 कभि शामळ कहे साचुं कहुं, विद्या वण ते नर पशु.
 पंडित जाय निदेश, तीय जश्चाथी जाणीतो;
 पंडित प्राकम पूर, महीपतिनो मानीतो.
 पंडितने परणाम, करे जन सी कर जोडे;
 पंडितने सनमान, मान अनमोनां गोडे.

जे अगम निगम छे मुण घणा, लक्ष कोटिधा ते लहै;
छे विदा मोटी विश्वमां, शामळ भट साचुं कहै.

वचन पाळवाविषे छपा-

बहु करे जे वाप, वचन बदलीने बोले;
बहु करे जे वाप, खोटुं मुख वायक खोले.
बहु करे जे वाप, आपने खूब वस्त्राणे;
बहु करे जे वाप, आप आप्युं घर आणे.
करथी जीभा भलि कापवधी, मोत भलुं महा मूल्यनुं;
शामळ कहे भुंडुं सर्वथी, वचन जाय तृणतूल्यनुं.
वचन न पाळ्युं जेण, तेज सुकृत व्रत हार्यो;
वचन न पाळ्युं जेण, कमोते तेने मार्यो.
वचन न पाळ्युं जेण, तेह नर दैवे दंज्यो;
वचन न पाळ्युं जेण, तेह शिर अमी मंड्यो.
जो वचन व्यर्थ जेनुं थयुं, तो दैवत तेनुं गयुं;
कवि शामळ भट साचुं कहे, वचन गयुं तो शु रह्युं.
पाळे वायक सूर, जेह रणमां वहु झूझे;
पाळे वायक सिद्ध, जेहने आगैम सूजे.
पाळे वायक भक्त, करे इश्वर वश आपे�;
पाळे दाता वचन, वृष्टि जेने परतापे.
पाळे जे वायक प्रेमथी, वेदे विविध वस्त्राणियो;
शामळ वायक संभाळतां, जशे जगतमां जाणियो.
वचन पळे ते राय, वाकि तो रांडि रांडो;
वचन पळे ते शाह, वाकि मुणहीणो गांडो.
वचन पळे ते विप्र, धर्म शुभ धार्यो तेणे;
वचन पाळ्युं ते वीर, जगत् जश लीधो जेणे.
पाळे सद वायक प्रेमदा, पांचे पूरण पक्षणी;
शामळ कहे वचन न साचवे, ललना एज कुलक्षणी.

पेट भरवाविषे छपा.

पेट करावे बेठ, पेट वाजा बजडावे;
 पेट उपाडे भार, पेट गुण सैना गावे
 पेट भमे परदेश, पेटथी पाप करेहे;
 पेट करेहे जार, पेट तो सत्य हरेहे.

बळि सत्य प्रपञ्च अधिक करे, पेट काज नरके पडे;
 शामळ कहे साचु मानजो, पेट पाप नरने नडे
 विप्र पेटने काज, शास्त्र वाचे ने शीखे;
 विचरी बळी विदेश, भणेला थइने भीखे.
 वणिक पेटने काज, चाहिने बहाण चडेहे,
 भजुर उपाडे भार, घणा जन घाट घडेहे.
 बळि करेहे काशद काशदु, शिर कपानि तस्कर मरे,
 कहे शामळ पेटने कारणे, कुन्नाचार सौंको करे.

पेट चडावे चाश, पेटथी नरतक नाचे,
 पेट काज गुण गाय, उच नीचाने जाचे.
 पेट करे ठळ कपट, पेट रणमा रसडावे,
 पेट करे विखवाद, पेट तो शिश कटावे
 चोरी चाडी ने चाकरी, अर्हम सौ आखेटना;
 शामळ कहे साचु मानजो, प्रपञ्च पापी पेटना
 किया धडकण ने धीर, किया गुणहिण ने जाता,
 किया कृपण ने कर्ण, किया दभी ने दाता.

किया रक ने राय, किया अकरमी इद;
 किया पापि पुण्यवत, किया चतुहिण ने चद.
 बळि अण पडित पडित किया, तेजि पारके बारणे;
 शामळ कहे मान गमायिया, बुडा पेटने कारणे.
 किया दरिद्र दिवान, किया कुरुप रुपाव्या;
 किया जुधिथिर जोर, किया भिकुक भूपाळा.
 किया बुद्धि बज्जवत, किया गद्दा ने धोडा,
 किया कपूत सपूत, राम रुद्रमणना जोडा.

नर नार जार ने सति किया, जाऊ जेने वारण;
 शामळ कहे मान गमानिया, कुडा पेटने कारण.
 किया नीच ने उच, किया रोगी ने साजा;
 किया अबळ ने सवळ, किया दुर्वळ ने ताजा.
 किया अजाण ने जाण, किया पथ्थर ने हीरा;
 किया अजा गजराज, किया वेरी ने वीरा.
 जूठा बौला साचा किया, नीचबुद्धि करे नेटने;
 शामळ कहे मान गमानिया, प्रपञ्च पापी पेटने.
 कइ लऱ्ठ ने अलऱ्ठ, कइ रजित ने रगा;
 कइ स्वप्निण रत्न, कइ गदी ने गगा.
 कइ मृगनेणी नार, कइ बळि आखे काणी;
 कइ दासी देखीये, रीझवाळी कइ राणी
 जे लघोडशख लेखा विना, दक्षणावत वळी कद्या;
 शामळ कहे कवि कोविद पण, पेट तणे वश सउ रस्या.
 पेट करावे पाप, पेट परदेश काढे,
 पेट करे प्रपञ्च, चलावे मारग आडे. .
 पेट करे पाखड, पेट बण बाके दडे;
 पेटे सकट थाय, पेट महेनतमा मडे.
 सति नारिने गुणका करे, शा अवगुण कहु शेठना;
 शामळ कहेठे सौ जाणजो, प्रपञ्च पापी पेटना.

कुर्मातिविषे छणा.

करे नीचनो सग, नीचनी बुद्धि आवे;
 करे नीचनो सग, सकळ सदगुणो गमावे.
 करे नीचनो सग, नीचनी भाषा भुत्ते;
 करे नीचनो सग, नीचनी रीती राखे.
 बळि नीच काम नोचा करे, निच कहेयाये ढन्ह न्द
 शामळ कहे सगत नीचनी, कोद न नम्हाँ बोद इच
 पढित पढित पीत, मूरगने दूरन्द बहाना;
 रुडो रुडी रीत, चतुर चतुराई द्वा चाल्या.

सुमने बहाली सूम, बहाल दाताने दाता;
 जारने बहालो जार, गुणो जनने गुण ज्ञाता.
 शूराने बहाला शूर नर, कायरने कायर गमे;
 नशवत गमे जशवतने, शामळ कहे सदा समे.
 मळे उचने उच, मळे भगीने भगी;
 मळे नीचने नीच, मळे रागीने रगी.
 मळे भगतने भगत, मळे पापीने पापी;
 मळे ज्ञानिने ज्ञानि, मळे जापकने जापी.
 वळि व्यसनीने व्यसनी मळे, मळते मळता गुण मळे;
 उयम लवण मळठे तकमा, शामळ पय शाकर मळे.

मोतविषे छपा.

कोइ कहे आव्यो ताव, कोइ कहे थयु कोगळियु;
 कोइ कहे करड्यो नाग, कोइ कहे वासी वळियु.
 कोइ कहे वाव्यो रोग, कोइ कहे शखज वामयु;
 कोइ कहे मारी मूठ, कोइ कहे पापज लायु.
 ईश्वर माये लेतो नथी, जगतमाहि महिमा झुओ;
 शामळ कहेछे सौ सामळो, मोत आव्यु तेथी मुओ.
 पेसे अरण्य नीर, तीर गगाने वेसे;
 चडे जो पर्वत मेर, कदी पाताळे पेसे.
 पर्वतमाहि प्रवेश, करे आपे एकाते;
 ओषड अमृताहार, भमे भूला वहु भाते.
 किंकर राखे कइ कोटिधा, सच प्रपञ्च घणा करे;
 शामळ कहेठे सौ सामळो, मोत आव्ये निष्ये मेरे.
 मात तात ने मित्र, पुत्र परिवारज पोढा;
 अलरसत अपरमपार, घणा हस्ती ने धोडा.
 सेवक साये शूर, परीपूरण परतापे;
 चळवता वहु बाहु, ठउ ठाये ठत ठापे.
 अधिकार अयुत लख इडनी, कोडवार शु कहु कथी;
 पण मोतश्वकी मूकायवा, शामळ कोइ समरथ नयी.

नाठे न मुके भूख, दुःख नाठे नव जाय;
 नाठे न मुके भोग, रोग नाठे पण याय.
 नाठे न मुके ताव, पाप नाठे नव छूटे;
 नाठे न रहे लाढ, चोर के हाकम लूटे.
 कदि नाठे मोत मुके नही, प्रसव्यो त्यांथी पास छे;
 कवि शामल भट साचु कहे, नाम सर्वनो नाश छे.
 जे जायुं ते जाय, जेह फूल्यु ते खरशे;
 भयुं तेह ठलवाय, चड्यु ते तो उतरशे.
 लीलु ते सूकाय, नवु ते जूनु धागे,
 आयुर्दा वश सर्व, काळ सौकोने खाशे.
 जो किनर जक्ष ने राक्षसो, देव गार्घव ने दानवी;
 मधवादिक पण मोते मरे, कोण मात्रमा मानवी.
 गया इद्र कइ क्रोड, गया ब्रह्मा कइ भूल्या;
 गया करोडो काम, महाशूरा पण ढूल्या.
 गया देव दिगपाल, गया माधाता महिपत;
 गया दिलिप हरिचंद्र, गया छाकेल छत्रपत.
 वळि गया जनक ने जादयो, जे वळि लाव्या जाहवी;
 स्थिर स्थावर कोइ रह्या नही, कोण मात्रमा मानवी.
 मारु मारु कहे मूढ, कारमी काया माया;
 अज्ञाने आरुढ, अध वइ धंधे धाया.
 आ मारु घरसूत, पुत्र मारो परणावु;
 घडपण पाले मने, आज भलि भात भणावु.
 पण दीपक वश छे वायुने, काचो कूपो काचनो;
 शामल कहे मुढ ममता करे, एवा शरिर असाचनो.
 कोइ आज कोइ काल, कोइ दिवसे कोइ राते;
 कोइ जोवन कोइ वृद्ध, वाळ जन जुवती जाते.
 कोइ तावे तरफडी, आप धाते कोइ मरता;
 कोइ भोग कोइ रोग, कोइ तो सरप करडता.
 कोइ वाशि विकार के हडकवा, कोइ ममते लडिने मुओ;
 पण काळ न मूके कोइने, शामल कहे समझी जुओ.

राखे लख रखवाळ, लोह पिंजरमा पेसे;
 अरणव निच आसन, बालीने जो कोइ बेसे.
 वज्र गुफा गभीर, माहि कोरावी माणे;
 इद्धजाळ विद्याय, जुगतथी जो बळि जाणे.
 सभाळि साचबी साचरे, कोटि जतन कोडे करे;
 जालबता पण जीवि नहीं, गोत बखत निश्चे भरे.
 चिरजीवि नहि कोइ, गया मनु जेवा महिपत;
 चिरजीवि नहि कोय, गया वहि अगणित अहिपत.
 चिरजीवि नहि कोइ, गया कइ सूरज चढ़े.
 वळि गया राम ने रावणा, गया देव ने दानवी;
 सतवादी सलक्षणा गया, कोण मात्रमा मानवी.
 कोइ आज कोइ काल, कोइ मासि खट मासे;
 कोइ वर्षे दशा वार, कोइ पचीस पचासे.
 कोइ साठ शीतेर, कोइ पोणोसो एशी;
 जे जायु ते जाय, नथी रहेवानु बैशी.
 जे नाम तेहेनो नाशा छे, धर्मज एवो धार्मो;
 कवि शामल कहे भूरत करे, गदी देहनो गारौवो
 घडी पळक के पहोर, साज सवार के वहाणु;
 ए दीपक ओलाय, न आवे साथे नाणु.
 रहे घरमा के गाम, देश परदेशे पड़शे;
 जळ परपोटो जेम, एक दिन निश्चे नड़शे,
 राखी कोइनो रहेशे नहीं, दिवस नकी नहि देहनो;
 शामल कहे काचो कुभ छे, तो भरुसो शो तेहनो.

खीना गुणविषे छपा.

रामा रत्नि खाण, जाण ए रभा रुडी;
 धरे सोळ शणगार, हार कठे कर चूडी.
 शोभे जळ हळ गेह, देह कोगळ शुभ साजी;
 शोभा केह सदन, बदन हशि राखे राजी.

भड भोज करण विकम अने, हरीचंदनी हारना;
 पंडीत चतुर पुर पाटवी, नृपति नेट सुत नारना.
 जे घरमां घरनार, दाम उधारे देशो;
 जे घरमां घरनार, पिंड पित्री पण लेशो.
 जे घरमां घरनार, तोज मेणु शिर टळशो;
 जे घरमां घरनार, मान माणसमां मळशो.
 घरनार जेहने घर हशो, शोभित साह सरस जसो;
 घरनार विना नर निर्बलो, शाह तोय तस्कर तसो.
 नार विना नर रंक, शंक राखे नहि कोइ;
 नार विना नर चोर, जोर जर वेसे खोइ.
 नार विना नर निर्वल, सबछ राखे नहि तंगे;
 नार विना नर दीन, हीनसुख एकल अंगे.
 चतुरां विन तो चाले नही, जगतमांहि रहे जाहरे;
 शामल कहेछे शाया कशी, तजे जगत तो ताहरे.
 बालपणे थइ मात, मटाडे पीडा भननी;
 जोवनमां दे रंग, संग सुख टाढक तननी.
 सुख दुस्तमां समझाग, राग रुडे गुण गाती;
 चतुरां चित हरनार, सार उरमां मद माती.
 वळि वृद्धपणे सेवा करे, देख्याथी दिल दुख टळे;
 ए अंतकाळ अळगी नहीं, वहु जेह साथे बळे.
 मात आपाडो भेह, तेहने विश्व वसाणे;
 पाठ्य पडे दुकाळ, कोण ते जुगती जाणे.
 मोती मोघे मुल्य, वेह पांडतां तूटे;
 करपण होय कतौर, शालभै खातां ते खूटे.
 पण लाभ गरभ गोधो तनुज, चढु वठेरो जाणिये;
 वळि भेह मोति ने मेदनी, नव नीवडे वखाणिये.
 पशु चरेछे तरण, रहेछे रणमां रमतां;
 नर नारीनी जोड, भाळिये साथे भमतां.

उडे पत्ति आकाश, जुओ तेनु पण जोहुं;
 कोण उच्च के नीच, गधाहु के का घोहुं.
 सुर असुर नाग किंनर विषे, देवी, नागण, दानवी;
 मन गरद क्यञ्छे मेरिये, कोण मात्रमा मानवी-
 नारी विना नर रंक, दामणो दीसे देहे;
 नार विना नर रक, दिशे गुणहीणो गेहे.
 नार विना नर रक, नहीं धन धीरे कोय;
 नार विना नर रक, हरी पूजन नन होय.
 निर्वल्ल छे नर नारी विना, भोग कशा ते भोगवे;
 अवगुण अदका अयुतो गणा, जुवती वण नर जोगवे.
 नारी नरनु अग, सूख देयण करसेवा;
 भळे पुण्यमा भाग, लाभ जश लाखो लेवा.
 शामाथी सतान, धर्म बुद्धी ते धारे;
 प्रगटे पुत्र सपूत्र, कूळ इकोतेर तारे.
 कुळ शुद्धे भळे जो कामनी, स्वामीने सुख दे सती;
 हु एम विचार आपथी, पुण्यवत तेनो पती.
 माननि मोटे मुल्य, महाभाया ए मोटी;
 जितवा इछे जेह, तेहनी खातज खोटी.
 स्वर्ग मृत्यु पाताळ, भैद भारत जे भणिया;
 उच्च नीच ने अमिर, सर्व जुवतीए जणिया.
 स्त्री खरा रत्ननी खाण छे, मोटि पुरुपथी प्रीछजो;
 सउ शास्त्र साक्षि शामळ कहे, अतरमा सउ इछजो.
 निर्वल्ल मननी नार, स्वामिने स्वर्ग पमाडे;
 जुवती जोवनमाहि, रीझथी रग रमाडे.
 ढाके फूळ कल्क, सरस चलवे धरसूत्र;
 वधे तेहथी वश, परसवे पुत्र सपुत्र.
 वल्ल होय सती शुभ सान्वी, पुण्यगति ते पारखी;
 छे नीच कोइकज नारियो, स्वभावे सउ नहि सारखी.

जुवानीना जोरविषे छपा.

जेने जुवानी जोर, पुष्पदनी बात न प्रीछे;
 जेने जुवानी जोर, इश अर्चन नहि इच्छे.
 जेने जुवानी जोर, परत्ती उपर प्रीती;
 जेने जुवानी जोर, रुडी नव राखे रीती.
 छे जोर जुवानी जेहने, अंय से आडे आंक छे;
 शामल कहे चूक्या चतुर नर, वण बुद्धिनो शो वांक छे.
 हस्ती जोवन होय, ज्यारे मदमातो महाले;
 अखनु जोवन होय, भशाला चरि ज्यां चाले.
 भैशनुं जोवन होय, भलो ज्यारे भादरबो;
 नरनुं जोवन होय, पुत्र दोलत तन नरबो.
 राजानुं जोवन राज्य छे, परिपूरण समरथपणुं;
 कामनिनुं जोवनं कंय छे, शामल कहे शुं कहुं घणुं.
 कइ जोवनने जोर, जगतमां बनिया जोगी;
 अडसठ तीरथ अटन, भाव भरपूरे भोगी.
 कइ जोवनने जोर, प्रसिद्धि पाप्या प्राणो;
 कइ जोवनने जोर, भप्या विदा रस वाणी.
 जे सत्य असम भुंडुं भलु, जोवनमां स्थिर यायछे;
 शामल कहे जोवन जोरमां, वेगे जन वहि जायछे.
 धोळा याशो केश, डाहि कहेवाशो डोळी;
 विपरित याशो वेश, तनू पाळीने पोपी.
 यरथर भुजशे थुळ, नमी जाशो बै नेणां;
 पडे देहमां वेह, बदाशो विपरित वेणां.
 चलि लीट चुशो यहु नाकथी, वैप कान बेरा थशो;
 सेवो प्रभुने शामल कहे, जोवन जोर वही जशे.
 ज्यम वादल्लनी ढाँह, चार पल्लनो छे चटको;
 मनमां चितो मनुप्प, खरो राखीने खटको.
 राख्युं तो नहि रहे, रुप ने जोवन रुडुं;
 बृद्ध थइ जशे वैप, कलंक रहेशे कुडुं.

छे कोण रंक के राणियो, रूप वृद्ध ने वालनुं;
 शामळ कहे राख्युं नव रहे, सर्वे चेष्टुं कालनुं.
 हस्ति सिंहने प्रीत, प्रीत वाघणने हरणी;
 गरुड सरपने प्रीत, प्रीत तीमर ने तरणी.
 उंदर बलादी प्रीत, प्रीत मीनी ने शान;
 प्रीत सरपने नोळ, प्रीत लंपटने ध्यान.
 बळि प्रीत विप्रने वरतिया, प्रीत असुर सुरलोकनी;
 शामळ कहे तेवी प्रीत सड, सकळ सृष्टिमां सोक्यनी.
 प्रीत तेतरां बाज, प्रीत कागळ ने पाणी;
 प्रीत सती गुणिकाय, प्रीत आटो ने धाणी.
 प्रीत अभिने नीर, प्रीत साचा जूठानी;
 प्रीत चोरने शाह, प्रीत रिक्षवण रुठबानी.
 ए प्रीत वैर लाखो गमे, कहे शामळ कहुं शुं कथी;
 सौ दुखमां दुख संसारमां, सोक्य समान कशुं नथी;
 अंधाने दुख आंख, सार्व नरतुं नव देखे;
 वेराने दुख कान, राग पूरण नव पेखे.
 रोगीने दुख रोग, भोग एके नव भावे;
 भिक्षुकने दुख एक, छेक भीखारि कहावे.
 एवां तो दुख अनेक हे, पंगाने दुख पग तणु;
 शामळ कहे स्त्रीने सोक्यनुं, छे दावानळ दुख घणु.

पतिना विज्ञोगविषे छपा.

पिता घेर जे पुत्रि, होय रिद्धि पण रांडी;
 बोले पुंठळ लोक, कहे जे कंये छांडी.
 पिता घेर जे पुत्रि, कूटूब कहावे खोटी;
 भोजाइ बोले भुङ, कहे आ करमे चोटी.
 धनहीन होय धरनो धणी, पिता होय पृथ्वीपती;
 पण स्त्री ते शोभे सासरे, शामळ कहे ते तो सती.
 नर पाखी जे नार, छेक हळबी ते तरणुं;
 नर पाखी जे नार, होय रणमां व्यंग हरणुं.

दिव्य देवाशी देह, मेह जेवो मन गहवो;
 करण समो दातार, सात सागरवत सहचो.
 निर्मल शशिवत नाम, काम हरिचद्रज सखे;
 पूरण रवि प्रताप, आप राजा बळि व्रते.
 छे जोड जुधिट्ठि र सारिखो, लायक जन लक्षमा लहे;
 ते भोज भलो भड भूपती, कवि शामल कोडे कहे.

पिताना हैतविषे छपा.

पुत्र करे जो पाप, पिता ते पुण्यज जाणे;
 पुत्र कदि दे टुख, पिता ते सूख प्रमाणे.
 पुत्र करे जो हाण, पिता ते लाभज लेखे;
 पुत्र वदे जो जूठ, पिता दिल सखज पेखे.
 अवगुण असख्यधा पुत्रना, पिताने मन तो लाड छे;
 शा युण ओझीकळ कीजिये, पूर्ण पितानो पाड छे.
 पुत्रतणो बीजोग, तेथि दावानळ रुडो,
 पुत्रतणो बीजोग, तेथि शुभ जळमा चूळ्यो.
 पुत्रतणो बीजोग, तेथि शुभ डसवी सापे;
 पुत्रतणो बीजोग, तेथि शुभ तपवु तापे.
 महादु.ख नहीं मरवा तणु, दु.ख नहीं तन रोगनु;
 पृण कोड दु.ख शामळ कहे, पोदु पुत्र विजोगनु.
 प्रीती भलेरी तात, महाप्रीती मातानी,
 प्रीती सगा समस्त, प्रीत भारे भातानी.
 प्रीत घण्णि पोशाळ, प्रीत पण खसुर पखानी;
 प्रीत घण्णि प्रिय नारी, प्रीत शुभ स्नेहि सखानी.
 छे प्रीति अधिक प्रकारनी, कहे शामळ कोडे कथो;
 पण अधिक प्रीत अतरतणो, सपुत समान सरस नथी.
 जेणे चडाव्या आळ, बाळ रमता रोवरान्या;
 खीवध गोवध ब्रह्म, हल्यादिक पाप कराव्या.
 प्रिय साथ करिने वेर, झेर देइने जर हरिया;
 कर्पा गर्भ कइ पात, घात कूटवे कंसियां.

पाढ्या विच्छोह नर नारिने, भंग कर्यो घरसूत्रनो;
पामे पोते ते पापथी, विजोग प्यारा पुत्रनो.

मोटा लोकविषे छपा.

मोटा केदं छिर, काढशो ते दंडाशो;
मोटा साथे वेर, करे तो स्त्री रंडाशो.
मोटा साथे प्रीत, पिडा कोइक दिन करशो;
मोटा साथे ममत, किधे बण मोते मरशो.
वळि मोटाने जे गुण करे, ते आटालूणे जशो;
रंकनि किरति राजा कने, करशो ते दुखियो थशो.
मोटा पासे गेह, किजे तो घोडां बांधे;
सगपण मोटा साथ, किजे तो काळजुं रांधे.
मोटा अज्ये घेर, सकारयने तो ताके;
मोटाथी वेहेवार, करे ते आखर याके.
जे मोटा जन मूरखमना, ते साथे नव खोलिये;
शामळ कहे एवा आगळे, मन पडदो नव खोलिये.
मोटा साथे वेर, करे ते कारज कूड़;
मोटा साथे वेर, करे तो भाग्यन भुँड़.
मोटा साथे वेर, यरुं तो जीवज लेशो;
मोटा साथे वेर, करे ते केद रहेशो.
मानिये वात मोटा तणी, कदि निदा नव कीजीये;
शामळ कहे प्रीती पूर्ण जो, पण मोटाथी वीजीये.
करे चोरि जे चोर, एक दिन शीश कटावे;
करे जारि जे जार, मान मरजाद मटावे.
करे चाडि जे चाड, सुन्नश जोतामां जाय;
निर्धननो वेपार, कदो देवाळुं थाय..
जे मोटा साथ ममत करे, मोत विना निश्चे मरे;
नीराश रघायी पण नकी, केम अस्थ एके सरे.

सहज वेरविषे छपा.

वेर रूपण दातार, देखिने दीलमां दाशो;
वेर ब्रतिकने तिप्र, परस्परना मत भाजे.

वेर श्वान माजार, वेर तो गहड अहीने;
 वहु सासुने वेर, वेर गजराज सहीने.
 वळि वेर पापि पुण्यवतने, वळि ओरमाया भाइने;
 ए सहज वेर शामल कहे, वेहेन अभागणि बाइने.
 वेर भर्मने कर्म, वेर शोकयो च्या सरखी;
 पाटीदार पटेल, वेर इजारा करसी.
 वेर बणज अविनेक, वेर भिक्षापर भिक्षा;
 वेर भूखिने मित्र, शाणपणथी दे शिक्षा.
 एवा वळि वेर अनेक छे, नाइ उपर नाइ जशे;
 वळि सदा वेर शामल कहे, सदगुणने दुर्गुण विषे
 पिता तणो हणनार, एह पण वेर अनेह;
 हणे नारि के पुत्र, तेह पण वेर धणेह.
 करे निय अपमान, कलक चडावी कोपे,
 हरे भूमि घरसूत्र, लाज लोकोमा लोपे.
 पण हाडवेर एथी अधिक, शामल भट साचु भणे;
 जे जुलम वेर तो जारिनु, हवा करता नव गणे.

देशी राजाविषे छपा.

राजानो विश्वास, करे वण मोते मरजो,
 राजानो विश्वास, करे धन धीरज हरजो
 राजानो विश्वास, करे तो रामज मठयो;
 राजानो विश्वास, करे तो काळज खूटयो
 राजाने मित्रज मानशो, कहु ढहापण तो शु कथी;
 कवि शामल कहे ठे कोइनो, महिपति मित्र शुण्यो नथी.
 रुठयो विष्र दे शाप, रुठयो किंकर कर जोडे;
 रुठयो शातु दे दाव, मान मरजादा मोडे.
 रुठयो पडोशी पाप, खोटि चुगली जइ खाय;
 नारि रुठे जो नीच, भरे के नीकली जाय.
 राजा रुठयो रिद्धि हरे, जश जरनु जोखम फरे,
 ते धरम शरमने नव गणे, दुख देता दिल नव। ढेरे.

कहे दिवसने रात, रातने दिवस कहेछे;
 हाहा कहेछे सर्व, लक्ष सउ लाजे हेछुं.
 जलस्थाने स्थळ कहे, कहे स्थळस्थाने नीर;
 वीरने वेरी कहे, वेरीने कहेछे वीर.
 चपटीओ बजाडे लाख जण, बलिया बोले बळ करो;
 कहे खरु खरु खोटु नहीं, कोइ न खां पुछे फरी.
 तेहु भलु शत्रुनुं, दाम कामे दंडावे;
 तेहु भलुको दुष्ट, देश छळ करी छडावे.
 तेहु भलु यमराज, जीव जलदी लइ जाय;
 तेहु भलु लेणदार, लेणु लइ मारग थाय.
 शुभ तेहुं ताव तरिया तणुं, सिंह सर्प विषपाननुं;
 शामळ कहे भूडु सर्वथी, दुख तो तेहु दिवाननुं.
 कोइ समे दे इव्य, कोइ वेला मन मेले;
 कोइ समे करे कोप, कोइ वेला खुशि खेले.
 कोइ समे शिरपान,' कोइ वेला ले लूटी;
 कोइ समे रहे राजी, कोइ वेला रहे रठी.
 जुदा घडी घडीमा गुण घणा, शामळ सब्य कहे सही;
 वहु दीठा ने वहु सांभव्या, नृपति भित्र कोना नहीं.

वाणियाविषे छपा.

जीव दया प्रतिपाळ, आळ एके नव बोले;
 न्यावट सावट नेक, धर्मनो धारण तोल्दे.
 सदाप्रतनी साख, लाख ठेकाणे लहिये;
 पुण्य वातमा पूर, नूर कुळ सुद्दे कहिये.
 मानेछु मोटा महिपतो, देश विदेश कोठी करे;
 शामळ कहे शा सुलतान सम, एमां नव अतर धरे.
 अधर्म के अभिमान, गान के तान गणे नहिं;
 निदा नीच स्वभाव, भुडु मुख केण भणे नहिं.
 वणिकमाँहि गुण बीश, रीसनो न चडे रंगे;
 चोरी चाढी जूठ, अहपद धरे न अगे.

कदि गाढ़ो कोइक दे घणी, पाढ़ी चाड़ि न जाणियो;
 वड़ि पुँठ न बोले पारकी, व्यवहारी जे बाणियो.
 वीश वसा नहि वणिक, जिभे जे जूँठुं बोले;
 वीश वसा नहि वणिक, पेठनो पढदो खोले.
 वीश वसा नहि वणिक, उतावलियो जे थापे;
 वीश वसा नहि वणिक, बनिताशुं बहेवाये.
 वड़ि वीश वसा ते वणिक नहि, चढ्हो रावच्छे जाणियो;
 जे सत्य तजे शामळ कहे, वीश वसा नहि बाणियो.
 वास नहाँ ज्यां वणिक, नगर ते उजड कहेवुं;
 वास नहाँ ज्यां वणिक, रातवासो नव रहेवुं.
 वास नहाँ ज्यां वणिक, कशो बेपार न करबो;
 वास नहाँ ज्यां वणिक, तहां भंडार न भरबो.
 विद्या विवेक बृद्धो नहाँ, वरे नहाँ ज्यां बाणियो;
 ए अधिक अद्वार वरण विषे, शामळ जुगते जाणियो.
 भोगी भूप समान, दयालु दाता दानो;
 वणज वजीरी बकील, महीपतिनो मन मान्यो.
 नाणावटमां नेक, कोइ कंदोइ कणियो;
 दोशी दास दलाल, भजो भंडारी भणियो.
 गुणसागर दिल गहओ घणो, लेण देण लायक लह्हो;
 सुविचारि विवेकी बाणियो, शामळभट कविये कह्हो.
 हृद हृद्यानो धीर, नीरमा नाणां नांखे;
 दिल्नो ढाढ्हो दीठ, तोतछी भाषा भाले.
 उपजे आगळ बुद्धि, समा परमाजे सूजे;
 करे लालनो वणज, घणो नाणा विण सूजे.
 कोशर कोडी केरी करे, खरच क्रोड जशा जाणियो;
 छे चार वरणमां चतुर नर, विवेकि जोतां बाणियो.
 सेवो निरदय 'नीच, सेवो वसवइया बाटू;
 सेवो कोइ अकरामि; सात्र पाढू के खाटू,
 सेवो भांड भवाइ, सेवजो जात्क जोगी;
 सेवो वरण अवरण, सेवजो भीका भोगी.

सेवजो काण्ठिया माण्ठिया, ठग गोला के ठाणिया;
शामळ कहे अर्थ सरे नहीं, बखाणि सेव्ये बाणिया.

सद्गुण दुर्गुणविषे छपा.

इद वारणा होय, कोय स्त्राते नव स्त्राय;
आयळ केरा फूल, तेथो सुगध न पमाय.
ज्ञाकळ केरा नीर, तृपा तेथो नव भागे;
नगला उच्चळ होय, हसने काम न लागे.
देसाय करा मोतो समा, आभ्रण नव ओपे अशा;
कवि शामळ कहे सात्ती जुओ, गुण विण रूप कहो कशां.
काम क्रोध ने लोभ, मोह माया नव मडे;
अहकार अभिभान, छक छळभेटज छुडे.
परधन ने परनार, तजे परनिंदा प्रीते;
सत्य साथ सवध, रजोगुण रासे रीते.
दे दान मान सनमान शुभ, परमारथ प्रीते करे;
जो ग्रहस्थमा गुण एठला, तो इकोतिर उद्धरे.
छानु न रहे पुण्य, रहे नहि छानी उव्ये;
छानु न रहे सून, छानि न रहे गुण गत्ये.
विद्या छानि'न रहे, रहे नहि छानी प्रीती;
छानो न रहे शूर, रहे नहि छानी रीती.
दाता झुझार जानी गुणी, व्यसन वाद विद्या विधी;
वळि दान मान सनमान शुभ, छानि न रहे सिद्धि रिद्धी.
छानी न रहे छेक, रीत भुडी के नड्डी;
घरमां करिये गुद्ध, देशमा वागे ढुडी.
छानो न रहे पुरुष, शूर कापर के दाता;
छानु न रहे छिद्र, भात भगनी के माता.
वळि विद्या छानि रहे नहीं, लीला लेहेर लक्ष्मी तणी
कादि छानु पाप रहे नहीं, खोदि घाल पृथिवी तणी
राजाने ते साल, फटायो भाइ फूटे;
एक प्रजाने साल, भूप वण वाके लूटे.

वेपारीने साल, पठंतर पटकुळ नांसे;
 पुर्ख पुर्खने साल, भामनी भुंडु भारे.
 शामने सालज शोभयनु, मुररने विद्यातणु;
 जे नर नव भाने नारने, खीने साले ते घणु.
 भलेज जायो जन, जेथि सुर पाणी पाम्या;
 भलेज जायो जन, जेथि दुनियां हुख वाम्या.
 भलेज जायो जन, दान दाता कहेबाणो;
 भलेज जायो जन, सदा सदगुणी गणाणो.
 जननांए जनो भले जण्या, शूर पुर दाता भगत;
 शामळ ते भलेज जनमिया, जेयी सुर पाम्यु जगत.
 धन्य तेहनी मात, पुण्य उपर जो भ्रीती;
 धन्य तेहनी मात, जेह घर मर्डी रीती.
 धन्य तेहनी मात, जेह सदाव्रत आपे;
 धन्य तेहनी मात, परायां कटज कापे.
 धन्य धन्य तो माता तेहनी, दरीद्रता कविनी दले;
 कहे शामळ ते सीधी बडो, बाकी बीजा वहु मले.
 धिक मातानी कूर, करो चोरी के चाढी;
 धिक मातानी कूर, अकल फेलावी आडी.
 धिक मातानी कूर, दुःख दुनियाने देता;
 धिक मातानी कूर, जगतमाँ अपजश लेता.
 शामळ कहे शिदने जनमिया, भुडि वात भावे मण्या;
 वनिता न रहीदो वांझणी, लयोड शंस जेणे जण्या.
 राहु केर कलंक, पापणी वहु प्रकाशो;
 कुमित्र मित्र कलंक, विभ सगळामाँ यासे.
 शेठ तणुज कलंक, खुनी वाणोतर खोले;
 कंथ तणुज कलंक, तुद्धिहीणी खी बोले.
 आपणे ठाम देखाडियो, कलंक बोले आपणु;
 शामळ कहे तेनुं परखिये, प्रथमर्थीज लुच्चापणु.
 हासथकी वहु हाण, हासथी गहआ गांजे;
 हासथी होय कलेश, हासथी भव जन भांजे.

हासथी रुठे राय, हासथी हीमत हारे;
 हासथकी जश जाय, हास वण मोते भारे.
 हसमायी हुश पहोचे नहीं, हसे खोड लागे खरी;
 शामळ कहे शाणा समजजो, करशो नहि कदि मञ्जूकरी.

दोहरा.

दाताथी मोटो नहि, दाताथी नहि शूर;
 दाताथी डाढ्हो नहीं, प्रताप जेनो पूर.
 बहोतेर कळा बुद्धि वधे, चउद विद्या चिन्न चाह;
 दातागुण जेमां वसे, बहोळो जश वधाय.
 कळ विकळ जाणे नहीं, दीलथी होय दातार;
 विशभरने यहालो धणो, धन्य एनो अवतार.
 सोमां झुरो फोइक नर, लक्षे कोइ दातार;
 पडित नर परखी शके, धन्य एनो अवतार.
 शरीर आपयुं सोहलु, दोहलो देवो दाम;
 दाता धन धुळवत गणे, ते नहीं ठामे ठाम.
 जीवत जगते जश वधे, र्खर्गसमु सुख थाय;
 रूपण होय कोटी पती, आप हाथे नव खाय.

रूपणविधे दोहरा.

अभि चोर हाक्यम लिये, रहे कहीं दाढ्हो दाम;
 करपि छोरां करगरे, न मळे वमु विराम.
 कोने धन शत सहतधा, कोय करोडो लास;
 निरखी हरखे सुमनर, रहेछे अंते राख.

छपा.

जेम घाँचिनो बलद, रात दिवसे ते फरियो;
 त्यम गद्दो गुणहीण, भार अणलेखे भरियो.
 पाडो जेम पखाल, पुठपर परठे पाणी;
 वेठे पकड्हो वीर, तरफहीने ते ताणी.
 जर रक्यो रोज थइ रांकडो, वेठी दुख वधारियो;
 शामळ नव खाधो खरचियो, जीती चाजी हारियो.

जर जोतामां जाय, चोर के हाकम लूटे;
 जर जोतामा जाय, जुओ जर खातां खूटे.
 जर जोतामां जाय, उठे जो आग सजोरी;
 जर जोतामां जाय, चढे चाढी के चोरी.
 जर जावा वेसे जे समे, राख्युं घडी रहे नहां;
 शामल कहे जाप समूळगु, कहो मूख जोयु कहां.

लोभविषे छपा.

लोभ घटाडे लाज, काज बगडे जो जागे;
 नक्कि घटे वेहवार, भार शोभा पण भागे.
 लोभे लक्षण जाय, थाप अन्याप अधर्मे;
 लोभे सौ संताप, छाप चोटे कुळ कर्मे.
 सन्मान मान मोटम मटे, शुद्ध कुळमां शूळ छे;
 शामल कहे शाणा समजजो, लोभ पापनु मूळ छे.
 चाणुं सांज सवार, मध्य सध्या मध्य राते;
 घडी पलक नै पहोर, आज काले परभाते.
 रवीं सोम शनिवार, त्रीज तेरंश त्रयवेळा;
 शारद शिशीर वसंत, भुवन भूवनमां भेळा.
 क्रत आदि यूगअति कव्ली, शुद्ध वद सर्व समापछे;
 शामल आशा तो अमर छे, जुग वाधा वहि जापछे.
 जाय लोभथी जीव, दैवपण लोभे रुठे;
 भवन करी दे भस्म, लोभनो अभी ऊठे.
 होय लोभथी हाण, जानपणु लोभे जाप;
 लोभे हीमत हान, दीनपणु लोभे थाप.
 लोभे लक्षण लाखो घटे, लोभे सकट शूळ छे;
 कवि शामलभट सानु भणी, लोभ पापनु मूळ छे.
 लोभे तूटे प्रीत, लोभथी होत न होय;
 लोभे चौरो चाडि, करे कुळवता कोय.
 लोभे बैले जूठ, लोभथी हस्या थाप;
 लोभे जाय विदेश, लोभथी गाणां गाय.

लोभी सगळो संसार छे, होप जेथि पण हीनता;
 शामळ वहु लोभी वेजणां, विप्र अने वळि वीनता.
 आशा ऊंडी खाड, पहाडथि थाय न पूरी;
 हेम मेस्सम होय, तोय पण रहे अधूरी.
 आशा नीर अघात, वहु जन तेमां वूडचा;
 कोण राय के रंक, कोण रुडा के भुडा.
 शूरा पूरा पंडित सज, भण्या गण्या भूला भम्या;
 आशाहपी अरणव जळे, शामळ कहे सज शम्या.
 गळे अढारे अंग, गळे नासा ने नेणां;
 पळे मुऱ्डने तुऱ्ड, वदाये विपरित वेणां.
 अस्थि रधिर ने मांस, सुकाय चलाय न चरणे;
 घातु सरवनो ध्वंस, कशुं संभळाय न करणे.
 इंद्रियो वधिये अडवडे, अहार निद्रा पण घटे;
 शामळ कहे तृष्णा शतगुणी, मनमां यधें नहा मठे.
 अर्थी न गणे पाप, अर्थी जगने नव जुए;
 अर्थी न माने शाप, पाणी परियानुं खुए.
 अर्थी कूडां काम, करे बेके नव बीहे;
 अर्थी बोळे नाम, लाख लांछन शिर लिये.
 अर्थी तो जिव आपे खुए, अर्थी अवगुण नव गणे;
 अर्थी आंखे देखे नही, शामळ भट साचुं भणे.
 कामी कहिये अंध, अंध लक्ष्मीनो लोभी;
 अंध सवारय सर्व, अंध मेलो मन मोभी.
 अंध अदेखो आप, अंध चोरी ने चाडी;
 अंध अहंपद ऊर, अडावे बातो आडी.
 एवा अनेक तो अंध छे, कां नर ने कां नारियो;
 शामळ कहे अंध अती घणा, जे जन इछे जारियो.
 लोभ करावे कट, लोभ मरजाद मटाडे;
 लोभ कपावे झीश, लोभ गुण ज्ञान घटाडे.
 लोभे जाय तणाइ, लोभ सुख सर्व शमावे;
 उत्तम अधिपति आप, नीचने शीश नमावे.

दुख दामानल तो लोभ छे, करे गुणीने गरकमा;
कवि शामळभट साचु कहे, लोभी पड़ो नरकमा.

धीखविधे छपा.

भीखमाहि नहि भोग, भोखथी जोग न साधे,
भीखमाहि नहि मान, भीखथी भाग्य न वाधे.
भीख नाम निर्मल्य, भीखथी भारज खूए;
भीक्षुक ओहु पात्र, भीख सामु को जूए.
छे वरण तुच्छ ते सरकथी, भीख होघ हलकी बहु;
कवि शामळ कहे शाणा शुणो, भिखरी भुदू शु कहू.

दोहरा.

मोतथी भुडु मागवु, धर्यो जन्म ते धीरु;
कहेवो दाता सूमने, भूडो सौथी भीख.
कायर शुर वखाणवो, रूपण कही दातार;
नौचने उच वखाणवो, भारे ग्रहेवो भार.
अधर्मि होय अभागियो, अधिक जणावे हठ,
रीझववो राजा कहीं, भीरने माथे भठ.
गुणी कहेवो गुणहीनने, स्वल्प ज्ञानी शठ;
न रहे बोल जाचक तणो, भीखने माथे भठ.

प्रश्नोत्तरविपद्य छपा.

प्रश्न.

कोण पृथिवी प्रौढ, कोण अणुयी पण नानो;
कोण पवनथी पहेल, कोण देवोथी दानो.
कोण विधुथी विमल, कोण अग्नोथी तातो;
पयथी उञ्जल कोण, कोण मदिराथी मातो.
वल्लि कवण तेज तरणीयकी, कोण शर्कराथी गँडी,
कवि शामळ कहे उत्तर कहो, पूरण पहोने गन, रँडी.
कवण तरणयी तुच्छ, कवण मणिथी छे मौघो;
स्वर्णधि शोभे कवण, कवण कुशकायी सौघो.

कवण बरासयि वेहेक, कवण काजळयी काळो;
 कवण लोहथी कठण, कवण बाळकयी बाळो.
 वळिं कवण भीछिथी वेदना, कवण सरवथी हे गळी;
 शामळ मेलुं शुं मेशथी, कहो तो पहोचे मन रळी.

उत्तर.

महिथी मोटी दानि, अणुथी लोभी नानो;
 पवनथि पेहेलुं मन, विवेक विवृथी दानो.
 चंद्रयि निर्मळ क्षमा, क्रोध अभीथी तातो;
 दुधथी उज्जळ सुज्जश, अमल मदिराथी मातो.
 छे तेज तरणिथी नेत्रनुं, गरजन साकरथी गळी;
 कवि शामळ कहे उत्तर कळो, पहोची तेना मन रळी.
 जाचक तृणथी तुछ, मणीथी सदगुण मौघो;
 स्वर्णयि शोभे सपुत, गरिब कुशकाथी सोधो.
 कीर्ति बरासयि वेहेक, कपूत काजळयी काळो;
 सूम लोहोथी कठण, अङ्ग बाळकयी बाळो.
 दुरवचन वींछिथी वेदना, मिठ वाणि सडथी गळी;
 छे कलंक मेलु मेशथी, पहोचि तेना मन रळी.
 परहर मनविण दान, हेत विण परहर जावुं;
 परहर बालशुं ख्याल, चाहविण परहर चाहावुं.
 परहर बडाशुं वेर, मित्र परहर जे घाती;
 परहर लंपट गुरु, दुष्टनी परहर जाती.
 परहर जे मीठो लालची, परहर लांच ले पांचमां;
 शामळ कहे परहर प्रेपदा, अन्य पुरुपनी आंचमां.
 बाळ पराण प्रीत, बाळ निरधननुं जीब्युं;
 बाळ कुचुद्धी ब्रूध, बाळ खारू जळ पोरुं.
 बाळ सूमनी सेव, बाळ कपटी घरनाणुं;
 बाळ चुगलिनी चाल, बाळ बकरी दूशाणुं.
 बळि बाळन बसवुं सासरे, बाळ बनेवी घर जवुं;
 शामळ कहे चुद्धी नाळ जे, दरीद्रि थइ दाढा थवुं.

बाळ मुरखशुं भेळ, बाळजे पापे रळवुं;
 बाळ निर्लंज वेपार, बाळ अणमळते मळवुं.
 बाळ गुणविण रूप, बाळ वगडामां वसवुं;
 बाळ वहू बकवाद, बाळ हरदम जे हसवुं.
 वळि बाळ उपासन भूतनुं, बाळ विद्याविण नामने;
 वळि बाळ देह दातार विण, बाळ वृद्धविण गामने.
 बाळ वसवुं मोसाळ, बाळ स्त्रीवण सुख घस्तुं;
 बाळ वनेवी घेर, वसीने भरण उदरनुं.
 बाळ दिकरिना दाम, बाळ शत्रुघर शरणे;
 बाळ कुंडलो कान, कथा न शुणी कटि करणे.
 बाळो परवश पेटारथी, आदर विण ऊदर भेरे;
 शामळ कहे बहुधा नाळ जे, सपुत वसे ससरा घेरे.
 बाळ मागवी भीखि, बाळ काशादियुं करवुं;
 बाळ चोरिनुं चित्त, पारकु धन जे हरवुं.
 बाळ वैतर्ह वैठ, भार लेको निल शीशो;
 बाळ पुरुष परवश, दोनता निशदिन दीशो.
 वळि बाळ पंथ जे पापनो, बाळ एकल शूरा थवुं;
 शामळ ते धंधो बाळ जे, विदेश जनमारो जवुं.
 धिक शूरानुं शस्त्र, जो कदी कायर कहावे;
 धिक गुणिजनना गूण, न गणना गुण जो गावे.
 धिक जाचक जगमांहि, कृपण आगळ कर ओडे;
 धिक कविता कविकेरि, कृपणना जश जो जोडे.
 धिकारं पवित्र सुपात्रने, कुपात्रशुं रंजित रहे;
 शामळ धिक विद्या चातुरी, गरथ काज सदगुण ग्रहे
 भामनि भूडी भोग, भोग घेलूं घरसूतर;
 बाळक कृपणे भोग, भोग जे पुत्र कूतर.
 भोग देहमां रोग, भोग जे पापे रळवुं;
 बाला विजोग भोग, भोग वणमोते मरवुं.
 महाभोग प्रेम परनारिशुं, भोग ममत मुरखपणुं;
 महाभोग भक्ति भावे नहीं, भोग एटलाने भणुं.

मुआ मुरखने जाण, मुओ जो नार कुनारी;
 मुओ देह क्षपरोग, मुओ जो रणशिर भारी.
 मुव्यो चडेल कलंक, मुओ अपजशा के आपे;
 मुओ खेप करनार, मुओ जे रळवुं पापे.
 जन मुओ जेह परवश पड्यो, मुओ जे वनिता वश हवो;
 कवि शामळभट साञ्चुं भणे, मानदीण माणस मुओ.
 जीव्यो जश लेनार, जिव्यो परमारथ पूरो;
 जीव्यो दाता देह, जिव्यो जे सामद शूरो.
 जीव्यो भाविक भक्त, जिव्यो जे जगते जाण्यो;
 जीव्यो किरतीवंत, जिव्यो कवियेज वखाण्यो.
 जीव्यो जन ते तो जाणवो, जेनि आशा सउको करे;
 शामळ कहे जीव्यो तेह जन, जे सकट परनां हरे.

प्रश्न.

प्रथम पाणि के पवन, प्रथम क्षीती के खग्गा;
 प्रथम बीज के वृक्ष, प्रथम औषधि के अग्गा.
 घण के एरण प्रथम, प्रथम मरदज के मेरी;
 प्रथम वृष्टि के सृष्टि, प्रथम आंबो के केरी.
 विद्या के विप्र प्रथम कहो, प्रथम दिवस के जामनी;
 शामळ कहे जाणो तो कहो, प्रथम कंथ के कामनी.

उत्तर.

नहि पाणो के पवन, नही क्षीती के नहि खग्गा;
 नही बीज के वृक्ष, नही औषधि के अग्गा.
 महीं एरण घण नही, मरद के नहि नहि मेरी;
 नहीं वृष्टि के सृष्टि, नहीं आंबो के केरी.
 नहि विद्या के नहि विषपण, नही दीवस के जामनी;
 शामळ कवि कहेछे समजजो, कंथनि साथे कामनी.

खावाना उ रस.

गुणनिधि गोरस एक, बिजो इधुरस बाला;
 त्रीजो रस तांबूल, मधू चौथो रस माला.

प्रीया व्यावरस सांच, छठो सवरस ते मीठुं;
 विश्विधे विश्वपात, देवने दुर्लभ दीठु.
 मस्तम रस शोध्यो नव मळे, खरीज रसनी खाण छे;
 ज्यम हीरो कोइक होप छे, पोडा तो बहु पाण छे.
 गावाना रस गणु, कठ सूकठी पहेलो;..
 नीजो रस बहु ताळ, त्रिजो रस नाजा बहेलो.
 चोधो रस चतुराइ, थकी जे बुद्धी बोले;
 पवित्र रस पाचमो, नाम ईश्वर अण तोले.
 छठो रस सउनो छत्रपति, जे बेळानु गान छे;
 शामळ कहे रसिक शिरोमणी, मोटा जनने मान छे.
 दर्शन पेहेलु विप्र, प्रभूने यजे पूजे;
 शुभ दर्शन श्रीपात, सच्चिदानन्दज सूजे.
 निर्मळ दर्शन नाथ, शक्ति पूजननो संगम;
 वर्तिक दर्शन वेद, पाचमु जाणो जगम.
 दर्शन छहु दरवेशानु, एकज तउनो इशा छे;
 शामळ कहे छठो एकनां, पारडो छत्रीशा छे.
 सस्कृत भाषा सरस, मागधी मोटे मुल्ये;
 मालेरी गुणनीय, अपभ्रशी ते तुल्ये.
 देशी भाग दाख, पिशाची पदजो प्रीते;
 चारण चोथी भाख, राजद्वारे शुभ रीते.
 ए खट भाषा जे खोजशो, धारी जोता धर्म छे;
 कवि शामळ भट साचु कहे, भोगी तेना ब्रह्म है छे.
 न्याय शास्त्र नवरगी, विर्जु वेदात वखाणु;
 श्रीमाता महामुल्य, जुगति पाताजलि जाणु.
 साल्य शास्त्रनी सख, भला जन ते स्तो भाले;
 नैशेषक गुणनान, सर्वनो संशय टाळे.
 खट शास्त्र कद्या ते खोजशो, विवेकवता तो घशो;
 कवि शामळ भट साचु कहे, नहि एमां सशाप कगो.

जीवताने सधलुं भळे.

नांकणि प्रसवे पुत्र, मुख्य पण कविजन याये;
 नीर भराय नवाण, रक शिर छत्र धराये.
 बळे कोइ दिन वेर, झेर बळि जाय जस्ती;
 गुणका जेवि गमार, सती ते थायज शूरी.
 ए रीत अनेक यथा यशे, शास्त्र साख दे छे सही;
 शामल कहे शानु शु कहु, जीव गयो आने नही.
 जिवतो पामे राज्य, जीवतो परणे नारी;
 जिवतो बैसे अश्व, याप जीवतो वेषारी.
 जिवतो माडे जगन, सुकीरति जीवतो साहे;
 जिवतो पहेरे नग, जीर तो लाणा लाहे.
 नहालानो होय विजोगियो, ते सजोगी थाप ढे;
 पण मुआ कोइ देखे नही, शामल भट गुण गाप छे.

सुख दुख विषे .

दुखे जाय सदबुद्धि, दुखे भणतर नव भावे,
 दुखे ढहापण दुर, दुख कुड कपट कराने.
 दुखे देहमा रोग, तेज तननू तो नासे;
 दुखमा लीळा लेहेर, पलक नव आवे पासे.
 दुख दावानलमा ढूगियो, जरिये शाती नव जडे;
 दसवु नव आने हेतथी, कुल मुखमाथी वयम पडे.
 सुखे साभरे सर्व, व्यसन बहु विधिना बूझे;
 रमनु हास्यविलास, खेहनी जुगती सूजे.
 भडि भवाइना भाव, जान जोणु ने जातर;
 खटररा भोजन खेल, महासुख महिमा मातर.
 दुख दावानलमा जे पड्यो, सुख सर्वे एन् गयुं;
 दसवु नयम आवे हेतथी, पिंजर चक्री प्रले पयु.

ईश्वरनी रूपा भया आषन्ति विषे.

दिकरी केडे दाम, खरचि जोननमा राडे;
 जन्म कुचारा जाप, पछी घडपण घर माडे.

मृके निरमां नाव, नने एवु के बूढे;
धणि पकवे वहु धान, आवि गामोतर गूढे.
मनना मनसुवा मन रहे, चिचायुं वाये जायछे;
मन ममत घणो मूरख करे, कर्त्तानुं कयुं थापछे.
जे बेसे गजशीश, चरण अणवाणे चाले;
न जुए तडको टाद, फरे दावानळ शाळे.
जे धेर लाख करोड, व्याज भरता ते दीठा;
सुता पुष्पनी शेज, काशदा करे वरीठा.
छे एवि अकळ गति दैवनी, सुख सां दुख आवी अडे;
शामळ कहे सघळां मानवी, साखे दुख जे शिर पडे.

दोहरा.

भर्ता कहे शुण भामनी, तज मन चिता शोक;
गम्यु थाय जगदीशनु, छहापण करवु फोक.

दोहरा.

को वेळा नवनिध्य घरे, को वेळा नहीं दाम;
को वेळा सेवक सहु, को वेळा परकाम.
को वेळा खटरस सहीत, पेर पेर पकवान;
को वेळा कटे भले, भठ कुशका खडधान.
को वेळा गज घोडला, छन चमरनी छाय;
को वेळा पग पाठ्ये, ताती वेळु माय.
कोतक मदीत महेलमी, सुख सउया फळ फूल;
को वेळा आलोटणु, धरणी कटक धूल.
कोतक पटकुळ पामरी, मौंघे मूल्य मगन;
को वेळा रण रसडयु, निर्लंज पणे नगन.
को वेळा परकत टपे, समस्थ पणे शरीर;
को वेळा देह दामणी, न पीए हाये नीर.
कोतक केतर, अरगजा, वपू ओपाये वर्ण;
को वेळा किंकर यइ, चापे परना चरण.
कोतक माणक मोतीना, हैये हाटक हार;
करे को रामे काशदु, भारो माये भार.

को वेळा अश्वे चडे, दिवान थइ दिल दीश;
 को वेळा गर्वन मळे, पडे भोजडां शीश.
 को वेळा ध्वज धर्मनी, सदाव्रतनी शीख;
 कंगाल यहने करगे, भटकी मागे भीख.
 कोतक पंच प्रमाणमां, भोटा आपे मान;
 कोतक देशवटो दिये, कथन शुणे नहीं कान.
 समा समानी छांयडी, सुख दुख अपरमपार;
 पूण्य पाप ने जोड ले, एमां शो अहंकार.
 सात सपूत शोभित सदा, भोटा जन दे भाग;
 वपु पढतां ते वांझियो, कोइ न मूके आग.
 मारुं मारुं मूरख कहे, तारुं न मळे तंन;
 पूण्य परवारे रंग अटे, दिवस पाधरे धंन.
 पूण्याइनुं फल सुख छे, पाप दुखनी पेर;
 पूर्ण कोइ अमृत पीए, कोइ हळाहळ झेर.
 सुत समृद्धि शरीरनो, करजो गर्व न कोय;
 भले भब्यु ते भोगवो, छाया फरती होय.
 राणी दाशरथी तणी, समारे दासि बारीर;
 अरण्यमां अर्भक जण्यो, न मळे अन्ज के नीर.
 रघवाइ रजळी रणविषे, जळ कारण ते जाय;
 यडत पडे चढते चडे, दैवगति कहेवाय.

हिमतविषे छपा.

हीमत मुके हाण, हिमत मूके तन भ्रूजे;
 हिमत तजे जिव जाय, सरस रस्तो नव सूजे.
 हिमत मूके हमेशा, जरुर जर ने जश जाय;
 हीमत मूके दाम, लेणना देणा थाय.
 हीमत मूक्यापी हारिये, भडकी घेण न भासिये;
 कवि शामळ कहेछे सर्वदा, रुदये हीमत राखिये.

गरजविधे छपा.

गरजे जाय विदेशा, गरज शिर भार उपाडे;
गरजे बाजां बाय, गरज तरबार बजाडे.

गरजे गूण गमाय, गरजथी धन पण धीरे;
गरजे मोघो माल, नांखेश उंडे नीरे.

पापर जनने पीता कहे, माठा सग रहे मळी;
कवि शामलभट साचुं कहे, गरजज साकरथी गळी.

गरजे घेल्य साथ, जाय ढाढ्हो पण दहाडी;
गरजे निच घर ऊच, लेज लाखेणी लाडी.

गरजे पंडीतराय, मुरखनी माने सेवा;
लक्ष पती तजी लाज, गरीब घेर जाये लेवा.

वळि गरजे गर्व घटे घणो, गरजे रोय मुकी रहे;
कवि शामळ कहे वश गरजने, कथरणने काको कहे.

गरजे सउ विध विधम, पिपेछे पूरण प्रीते;
दंभी जनने देसि, नमे नर गरजे नीत्ये.

गरजे निर्मळ नार, लाज लाखेणी लोपे;
गरजे सुमनी सेव, चाहे छे चित्तथी चौपे.

राजा पण गरजे रंक घेर, पाळे पगले परवरे;
कवि शामल भट साचुं कहे, नेव नीर मोभे चडे.

गरजे गुणका नार, जइ नर आगळ नाचे;
गरजे ओडे हाथ, गरज जाचक धइ जाचे.

गरजे गुणिजन याय, गाय गुणवंता गीत;
गरजे शत्रू साथ, पराणे मांडे प्रीत.

निरमां मुकेछे नावडां, ते बूढे किंवा तरे;
कळि शामळ कहे गरजे लज, कूडुं के कुडुं करे.

सारा तो देवला कोइ होय.

दाता कोइक देश, रूपण जगमां बहु जाहर;
शूरा कोइ समर्थ, कोटीधा कूडा कायर.

पुष्यनो क्यांदे प्रवेश, पापिनां पूर नहेछे;
सतवादी सति कोइ, कलंकी कोड रहेछे.

हरमे हरमे हीरा नहि, पुरपुर पोटा पाण छे;
जाणो विरला जशबंत नर, असद्य पुरुष अजाण छे.
शेरी शेरी बहु शान, सिह सांभळ्ये काने;
सपुत सहस्रे एक, कपुत कोटी अनुमाने.
सदविदा क्याँइ शेष, अविदा अति आडबर;
धातुवादि को धीर, धूर्त जुठा नग समर.
कविजन साचो तो कोइ छे, मूर्ख कवी बहु माणता;
शामळ बहु लोक सवारथी, परमारथ को जाणता.
बहु बांधे हयियार, ताणना वेळा त्रासे;
बोले बोल अतोल, नाणु स्वरच्याथी नासे.
खाय पिये जन खूब, होय खबराने खापण;
सत्य कोइ साहुकार, ओळो आपी धाँपण.
बकवा करि बोल बके बहु, पाठे बोइक मुरपती;
नुर राखे नरपती नामनु, रुडी करमनी खो रती.

पाप पुण्यविषे उपा-

पापे पापनी बुद्धि, पाप अतिशे दुख आणे;
पापे मिन्न कुमिन्न, पाप जुगती नव जाणे.
पापे कूल कलंक, पापथी पुण्य पळाये;
पापे बटले वश, पाप सउ अगुण गाये.
पापे सुधर्म धारे नहीं, पाप भगावे भोगने;
शामळ कहे पापे पामेशो, रगतपोत सम रोगने.
पाप पुजे पाखड, पापि कुळ हीण कहीजे;
पापे सूख विछेद, पापयी केद रहीजे.
पापे अध अपग, पापथी दुर्बळ देहे;
पापे अपनश पूर्ण, पाप अवगुणनु गेहे.
पापे परिनल प्रिठाय नहि, (रग रग वेठे रोगने);
शामळ कहे कळ ए पापना, (पाप न जाणे जोगने.)
पुण्ये नासे पाप, प्रजा शुभ पुण्ये पामे;
पुण्ये प्रस्तरे कीर्ति, बेदना पुण्ये वामे.

पुण्ये नहि प्रह दोष, पुण्य सउजननु भूपण;
 पुण्ये देह न दंड, पुण्य निर्मल निर्दूपण.
 चालि पुण्यथकी लक्ष्मी मळे, पुण्ये पाप बधु बळे;
 चामल कहे पुण्य प्रतापथी, ताप त्रिविधि तनना ठळे.
 छानु करिये पाप, जगत वाधु ते जाणे;
 छानु करशे पुण्य, मोज महिमा ते माणे.
 छानु खाये शेर, लेर ते बेळा लागे;
 छानो करडे नाग, पलक पाणी नव मागे.
 जप तप के साधन जोगनु, ते छाना करवां घटे;
 अन्याय अर्धर्म गुपत करे, तेनुं मान तुरत मटे.
 छानो करडे नाग, जोरथी शेर चडेछे;
 छानु बासे वेर, पोढि पठि विपत पडेछे.
 छानो करडे विछि, चित्तमा लागे चटको;
 छानो पावक पडे, भयानक लागे भडको.
 जे छाना पाप जगत करे, जरुर ते दुख जोगवे;
 पण छाना पुण्य प्रतापथी, भला सकल सुख भोगवे.

बहोतेर कळा विधे-

चित्रकैळा पोशाकै, पाँगैवधन रुतिपैकै;
 नमैवु तर्वु नीर, स्नैन जितवु विदि थाकै.
 भरवे भावै पलग, बैसवु^१ सूवु^२ शेजे;
 बोलवु^३ हिडवु^४ होडै^५ देनैपैजन अति तेजे.
 धरता अगे शणगारै शुभ, तिलैकै करे दीठु^६ करे;
 भैख्यु ने लेखु^७ लैंगवु, कळा एहको मन धरे.
 करवां लेखो काम, कामरैळैवु जैनैरीजे;
 खेती^८ वर्णज विवेक; सैखं शुरापैर्ण लीजे.
 चडे^९ झाडपर जुगति, पैरंधी परठे पापे;
 पसी^{१०} पाडे पलक, कही महेनैतै करि आपे.

हय वाहैने करे विवेकधी, हाकी जाणे होडधी;
 ओर्धैहै ने अमलज केळवे, शामल सुकळा जोरधी.
 परखे नैरंखे नेह, बोल सठ गमतीं बोले,
 न्यौंय चूकवे नेट, धर्मनी धारैं तोळे.
 गैंये वैंय विवेक, चैंहे चोपगने चित्ते,
 उपासने आसैने, मत्रै जत्रो^{४५} जप नित्ये.
 पोषैं दोषैं ने दिल हैरण, शरैणागतने राखवुं,
 चोरु^{५०} चित्तैमा चेतवु, भणी कळा सस्य भौखवु.
 दैन मौनै अपैमौन, जैठ जाणु परखावु,
 सचैं प्रपच पैखिड, दह देवु^{५५} चित्तं चहावु.
 तज्जैवु सज्जैवु सेव^३, देव^४ दर्शन प्रियर्मळेवु,
 कर्छैवु र्मैवु रमत, दु र्वि सुख शरिरे सहेवु
 चळि प्रीर्त^५ रीत पग कैंदबो, खळ नैव जाये खेतरी;
 नित्य सर्वैनैम दिल राखवु, सामल कळा बहोतरी

छत्रीश वाजा विधे.

तालै मृदगे त्रुइ दोलै, रवाजे सारगीं सतैरो,
 वेणा वशी^६ जन्नै, तबुरो^७ ने त्रोतैरो.
 कासी^८ नैरंधा भेरै^९, नफेरो^{१०} हैंकै शरैदि,
 भुगैळ शृगि^{११} करणीट, डौके डमैसै गोमुखाइ.
 खैरैरी मजिरा^{१२} मोरचगै^{१३}. शर्व उपगै^{१४} नोवैतं भली;
 एकै बे^{१५} चो^{१६} खैट नैव वारैना, तारतणा छत्रिश मळी.

स्वभावविधे उपा.

केसर क्यारा माहि, वरास कस्तुरि बेहेके,
 पाछुळ कनकनि पाळ, लक्षधा मोती लेहेके.
 गगा गोमति नीर, झवेर नडीत्रज झारी,
 सोळ धरी शनगार, सिचे नरपतिनी नारी.

एवी रीते कादि उगियो, लसण छोड गगाहट;
नदबोइ उठे पण नहु घणी, शामळ स्वभाव नव मठे.
जळ तरबाने तुच, अभि ओलबवा नीर;
भुखनुं ओषड अन, बाळनु ओषड क्षीर.
ताव ओषड उपवास, गूमडे डामज देवा;
निनेक तो चशिकरण, समस्त प्रसारे सेवा.

ओषड छे एके एकना, कोडे कोडे कहु कथी;
भुडा के रुडा स्वभावनु, शामळ कहे ओषड नथी.
कोइ स्वभावे शील, तथा कोइक तो तातो;
कोइ स्वभावे उदार, कोइ करपी मद मातो.
कोइ जार को झुज्मि, कोइ दभो के डाढ्हो,
को पापी पुण्यवत, कोइने व्यसने वाढ्हो.

को हरामि ने को हेन्हो, को हसमुखो हरी घड्हो,
शामळ स्वभाव जे जातना, प्रथम पड्हो ते तो पड्हो
कोइ वरणने वेद, भेद को भारे भणियो,
को मूरख माहिष्य, कोइ ज्ञानीमा गणियो.

कोइ करे बहुपुण्य, कोइ कहेवाणा पापी,
कोइ समज्या नहि सत्य, कोइ जपमाळा जापी;
को सुखदाता सत्तारने, कोइ नीच सउने नड्हो;
शामळ स्वभाव पलटाय नहि, प्रथम पड्हो ते तो पर

कणवीविषे छपा

पटल पास पतशाह, आप जइने कर ओडे;
पटल पास पडीत, जाचवा जइ जश जोडे.
पटल पास सउ त्रास, मान मूकीने मागे;
पटल पास लखपति, लालचे पाये लागे
आपेछे पटल पसायतां, जग जीवाडण जाणिया;
पातशाह वधे नहि पटलयी, वखाणिये शा बाणिया.
शेठ होप श्रीमत, होड कणवीथी हरे;
कणवी जेवो कोइ, धर्म रुडो नव धारे.

वणिक कोटिघज होय, तोय गणशे लखि लेखुँ;
दुर्बल कणचि दातार, डाढ्हो के घेलो देखुँ.
जे जाण हशे ते जाणशे, अभिमानी मद आणशे;
शामळ सीमा आप्यातणी, मागण मोजो माणशे.
कणबी जेबो कोय, न दीठो मननो मेहेरी;
अद्वलक आध्ये जाप, अहींनश साज सबैरी.
सुपडे साखु सुरत, साय खरचे ने खेले;
परभोगी परकज, रिद्धि खरचे रग रेले.
भोळो कणची भूमढळे, देता पाहु नव जुए;
शामळ कहे बीजा वापडा, रिद्धि खरच्या केडे रहे.
मळे कणचि जो कोइ, जाचको तेने जाचे;
विजो होय बळवत, खेको तेने राचे.
न कहे कणचि नकार, शरममा ए शरमाशी;
जो कदि नही अपाय, तोय काया करमाशी.
बीजानी पेरे बळ करी, ना पोकारी नहि कहे;
शामळ कहे भूनो भारतो, धोरा के कणबी वहे.
जाचक जे जशवत, सुजश कणचिना जोडे;
मागण जे महामूल्य, हाथ हळपतिने ओडे.
नर्सकी जे नवरग, नेक कणबी प्रति नाचे;
ब्राह्मण चारण भाट, जरुर कणबीने जाचे.
तजि मेल वणिकने बेगळा, एथि अर्थ तो नहि सरे;
कर ओडी जइ कणबी कने, हळपति कोड पती करे.
वाधथी बळियो बळद, घटिवनो भार उपाडे;
चाघ हणेछे जीव, बळद तो जगत जियाडे.
स्वटाये रचि सृष्टि, प्रथम तो कणबी कीधो;
धोरी सज्जो धोर, बनेने सा वर दीधो.
उपाढो भाग अवनितणो, करो काम खड अल जमो;
छत्रपति आदि सउ छोम्हरा, भाभा यइ भूलल भझो.

सोरठी.

“कणवी केडे कोड, कणवी कोइनी केडे नहि;”
खटी एक छे लोड, उंहुनु ओपड नहि.

जुदो जुदी नातो विषे छपा.

वाल्दने उर बात, रहे नहि छानी छपनी;
वाल्दने उर बात, रहे नहि खोटी खपनी.
अढार बरणे एह, अतीझे जातन ओछी;
न गणे पुण्य के पाप, छके तेनी मति छोछी.
शाखामण दउङ्ग सर्वने, देश बागशे इुडियो;
जो वाल्द आगळ बारता, कही रुडी के भुंडियो.

भाटविषे छपो.

करे जमानी कोइ, दसरेंदी कोइ कहावे;
कोइ बळावे बाट, कोइ किरती गुण गावे.
को पिंगळना पाठि, कोइ मोठाशो महोनी;
को पसायतां खाय, करे नहि सेवा कोनी.
सनमान मळे तो साहेजी, अपमाने दिलमां डरे;
कवि शामळभट कोडे कहे, भाट भली मोजो करे.

कोकिलविषे छपो.

कोकिल तो दांतार, स्वभावे कोकिल सगरो;
कोकिल बलामण बाट, न होये कोकिल नगरो.
कोकिल कोकिलमांहि, कदी नहि थामें कूडो;
जइ चोरे परराज्य, राज्यमां तो रहे रुडो.
भेदे भूपति भंडारने, शरणागत सोडा सही;
शामळ जाति कोकिलतणी, दिठी वस्तु मेले नही.

सोनीविषे छपा.

चाहन कोक्की चोर, लहे ते खातर पाडो;
चुगल लोक पण चोर, लहे ते करिने चाडो.
वणिक जात पण चोर, लहे मरडी दांडीने;
रूपिक जात पण चोर, लहे खेतर मांडीने.

एम कसव चोर कइ कोटिधा, ए तो अपरमपार छे;
पण दहाडे चोरे देखता, सख्य चोर सोनार छे.

चोपाइ.

सोनी केरो एज स्वभाव, न चोराय तो आवे ताव;
न चोराय उपजे चितभर्म, सोनी केरा कुळनो धर्म.
तस्कर तो बीजा छे घोर, कोळ्यीयी ए चौगणो चोर;
सोनी साचो तेनु नाम, करे घणु तस्करनु काम.
न गणे ज्ञाहण न गणे भाट, न गणे मात भगनीनी खाट;
न गणे धर्म गणे नहि कर्म, नहि सोनीनी आखे शर्म.
सोनानु सूनु करि दिये, धीरे तेनु लूटी लिये;
प्रथम तो सौकोनु हरे, वल्तो खूए के पुण्य करे.
पाविन जात करे वहु पुण्य, लेता निमिष न राखे न्यून-

दोहरा.

निंदायी नरतु घणु, शु कहु वारवार;
जगमा सोनी जाणबो, सड तस्कर सरदार.
मीठु बोले मुखयकी, पेर पेर करि प्रीत;
विधयिधनी चातो करी, हरे सर्वनु बीत.

सपूत गिथे छपो.

सपूत नाम सरदार, कोइ उपर नव कोपे;
सपूत नाम सरदार, पितानु वचन न लोपे.
सपूत नाम सरदार, बापनु कुळ उद्धरे;
सपूत नाम सरदार, होय समरथ पण हारे.
वल्लि सपूत नाम सरदार ते, कुटबनु पोषण करे;
शामळ कहे सपूत सलक्षणा, मात पिता जेना ढरे.

कपूतविधे उपो.

कपूत कहिये तेह, बहु परियाने बोल्ले;
कपूत कहिये तेह, धर्म धारण नव तोल्ले.
कपूत कहिये तेह, रक जनने रजाडे;
कपूत कहिये तेह, भवन ज्ञासा भजाडे.

एवा तो क्षमुत अनेक छे, अहंकार धर आपनो;
शामळ कहे सउथि क्षमुत जे, बोल उथापे बापनो.

चतुर विषे उपा.

चतुर लोकनुं छिर, जगतमां कोइ न जाणे;
चतुर न चिता धरे, मोज आनदे माणे.
चतुर लोकनो वणज, जणाय न लेवुं देवुं;
चतुर लोकनु पुण्य, गुपत कोइने नहि कहेवुं.
बाळे चतुर लोकना पारने, कोइ पडिते न पारख्यो;
मूरखना मुळ आणो सज, ते शामळ शठ सारखो.
शाकठ थकी कर पंच, वेगळे बाटे यावुं;
अध्यधकी कर आठ, जाणने चाळ्या नावुं.
गजथो गजशत पाच, आचनो जन अधिकारी;
सिंह थकी कर सहत, अहीथी एज विचारी.
पण चोर थकी चोगाम तज, चुगल थकी तो गामसो;
करि देश खाग दुस्तिन थकी, शामळ कहे शाणा चंसो.
जाय शानुने साथ, रुदेमां ते तो रुए;
जाय शानुने शरण, खरे खर जीवन खूए.
जो देखाडे ठाम, ठाम ठेकाणुं जाशो;
शानुनो विश्वास, करे ते घोदा खाशो.
अण जाण्याने जे गुण करे, दया धरे जे देहमां;
शामळ कहे ते दुःख पामशो, नर अजाण शुं नेहमां.

लोकने प्रीति उत्तमवानां कारणीना उपा.

हाकमै विनये विभेकै, शाहैपण ने सर्वे जेमां;
विद्या वें पुं शुभ वार्त, प्रीये पोशाक तेहेमां.
नैदं नैष कविगीनै, टारैनै डहार्पैंड गुणै अर्थै^{१४};
करैवे शर्म नरमाई, न्योपि कुळे बैरे सैमये.
जैवे तैवे जुर्गती जैरे जो मळे, लैर्यिक मल्है नैट रीतनां;
पेखैकै लेखैकै शामळ कहे, लक्षण नविशा प्रीतनां.

ममतविषे छपा.

ममते खरचे द्रव्य, ममतयी वीका माडे,
 ममत कपावे शीशा, ममतयी माया छाडे.
 ममते हारे होड, ममत घरवार घटाडे,
 ममत चडावे आळ, ममत तो मान मटाडे.
 मोटा पुह्यो सड मानजो, रुडी वातमा रेलजो;
 शामळ कहे जीतो जगतमा, मिथ्या ममत्व मेरजो.
 ममते नाय विदेश, ममत तो राज्य मुकावे;
 ममते मूके शरम, ममत चतुराइ चुकावे.
 ममत कपावे कोर्ति, ममत अपजश ओपावे;
 दुखनो छुगर ममत, शेरना तरु रोपावे
 ममते तो मोटम नहि रहे, ममत थकी मरबु पडे;
 शामळ कहे ममत्व मूकजो, ममत नकी नरने नडे.

- एकना कामयी बीजाने पीडा. छपो.

वढे रायने राय, प्रजा त्या तो पीडाय,
 वढे महीप महीप, झाडनु ठेदन थाय
 वढे भातने भात, दुःख पामे ढोकरडा,
 वढे धणीधणियाणि, पिडा पामे ढोकरडा.
 वळि विप्र विपमाही वटे, देवे लेवे दानने;
 शामळ कहे साचु मानजो, महादुख जजमानने.

शूर वीरविषे छपा.

गाडा पण गुणवत, कदी मोटम नव माणे;
 नहिं टेक तरतीब, अहपद मन नव आणे
 चाका चुका न थाय, बोल नव वाका बोले,
 योते थाय न पोढ, परो पटदो नव लोले.
 पण वीर हाक वाजे जहा, त्या धीरज मनमा धरे;
 पठि यम गोला चोस्ता उडे, वेरिडपर कर वाचे.

ईश्वर ज्ञानविषे दौहरा.

धर्म शास्त्र ध्याने धर्म, शुणजो महिमा सार,
 मारग सउना जूजवा, कहेता नावे पार.

को कहे मुक्ती व्यग्नमा, को कहे जप तथ व्रत;
 को कहे दाने यज्ञमा, को कहे तारक तर्त.
 को कहे पूजो प्रतिमा, को कहे नाथो नीर;
 को कहे शोधो स्वातमा, को कहे शुद्ध शरीर.
 वैष्णव जन विष्णु कहे, व्यापक सगळे जगत;
 शिवमार्गीं तो शिव कहे, शक्तिमार्गीं शक्ति.
 वामवादि तो वाम कहे, कहे वैरागी राम;
 पडित परमेश्वर कहे, नौतम जूदा नाम.

पारकी वाशाविषे.

कोइ रळे ने कोइ जमे, ताके परनो माल,
 आजा करे जे पारकी, कर्म हिन कगाल.
 मद मति ते मानवी, करे मनुष्यनी हाश्य,
 चटकि देखी दिन चारनी, वळति थाय निराश.

वावे तेवुं फल.

वावळनु वी वानशे, प्रीते परडा खाय;
 आपानो रहे ओरतो, ईश्वरनो ए न्याय.

चोपाइ.

वारे वीज ते उगे झाड, एमा जानो गणने पाड,
 करे तेवु भोगवडे तेह, एह वातमा जो मदेह.

लद्मी कोइनी नहि तेविषे दोहरा
 लक्ष्मी कोइनी नथी, वीनु कोनु मृत्य,
 स्नेह सप्त गणे नहि, तजी जायठे तर्त.
 रुडो भूडो नव गणे, न जुवे कोना रुख;
 घर के रण दासे नहि, तजी जायठे तर्त.
 वैला कवेला नव जूवे, खेह शु नाणे सर्त;
 नानु मोटुं नव जुने, तजी जायठे तर्त.
 रूप कुरुपने नव गणे, विवेक विद्या वर्च;
 उच्च नीचने नव गणे, तनी जायठे तर्त.
 लद्मी भुडी लक वसा, माथे भुहु मर्द्द;
 रेले खरावे खातधी, तजी जायठे तर्त.

विदा सिंधु सुखतणो, विदा सदगुण वर्ग;
लक्ष्मीने लूँडी गणे, सहेजे पामे स्वर्ग.
वस्त्राण शुणीने वित्तनां, चंचल त्री चल थाय;
जयम वादल्लनी छांयडी, पल पलमां पलटाय.
कनक विधे कल्पियुग वसे, बली कनकमां काम;
कूड कपट कनके वसे, ठेठ नरकनो ठाम.
अलखतवंत घेला धणा, अलखत खां अहंकार;
सुख छे सरशब जेटलुं, दुःख अर्णव अपार.

शिखामण चौपाई.

अधिक हेतथी कहुन्हु अमो, ते रीते आचरजो तमो;
परधन परनिदा परनार, परहर कहुन्हु वारंवार.
परधन देखी थायु अंध, परनिदा नव धारो धंध;
निच वात थकी नासजो, गुणोजन देखो खां धासजो.
जुलम न करशो कोशु जूठ, रंक साथे रखे रहो सूठ;
महा ममतीना मन मोडजो, कंगाळपणु आळस छोडजो.
कुरजो एक ईश्वरनी आश, पुरण जाणो ईश प्रकाश;
नव करशो मदपनो संग, आप मलिन नव राखो अंग.
भजतां भणतां रळतां धन, रखे तस करो खां मन;
पापे धन नव पेदा करो, अघ देखो खांधी ओसरो.
नव गणशो माया आपणी, तरण तणी ए छे तापणी;
स्वप्नावत जाणो संसार, माये ताणी नव ल्यो भार.
स्नेह तजो परदारा साथ, हैडु मन राखो निज हाय;
साची वाते थाजो शूर, निच कामे नव थाशो नूर.
मननी लहेर नाती बाल्जो, जनक जननीनुं पाल्जो;
कुडां कर्म रखे काँइ करो, पंडे पाप त्रुद्धि परहरो.
करजो परमारथ निल काज, तो राजी रहे श्री महाराज;
अमृत फल वाचो सौ स्त्राय, बली वाटमां छाया थाय.
बीजुं पूण्य न वाणे नीर, सुख पामे सहु जन शरीर;
नवाण सोदावे रोपे झाड, परमेश्वर माने छे पाड.

भली वात मुखथी भाखजो, शरणगत शरणे राखजो;
 अहकार नव करशो लेश, दुःख भजन कहेवाजो देश.
 रैयतना कहेवाजो राम, करजो निय परमारथ काम;
 मात तातनो सेवा करो, अहकार मनमा नव धरो.
 किकर गु नव करशो क्रोध, रुडी वात नव करशो रोध;
 जीवाहंसायी बीहीजो धणु, रक्षण करजो प्राणी तणु.
 परदुःख देसी थाजो दुसी, सुखी रइयत पेसी रहो सुखी;
 अनावृटीमा आपो अन्ज, निर्मल रुदु राखो मन.
 कोइ दिवस नव रमशो दूत, धर्म वाते नव थाशो धूर्त;
 अमल वश नव थाशो आप, सती तणो नव लेशो आप.
 आप्यु पाढु लेशो नहीं, ना नव कहेशो मुखथी कही;
 करिये ते भोगवत् पडे, आविने सहु अगे अडे.
 छानु उपनु करिये पाप, परमेश्वर जाणे ते आप;
 आपे ते तो पामे बहु, सुख दुर एवी रीते सहु.
 जेवु अन्ज वाये ते लणे, शामल भट तो साचु भणे.

पञ्चावतीनो वात्ती.

—♦—

आख्यान कहु पद्मावती, सती शिरोमणी जेह;
 पुष्पसेन साथे वरी, वर्णन हु कहु तेह.
 नगर एक चपावती, चपकसेन राजन;
 पटराणी पुष्पावती, पुष्पसेन एक तन
 बनिशा लक्षण आगलो, चउद विदा गुण जाण,
 राग छुविशो आळपे, वदन शशी परमाण.

सोल वरसनो सुत थयो, धनुषिद्यानो धीर;
 हये बेशीने सचर्यो, जाणे बावन वीर.
 प्रीत घणी परधानशु, क्षण अबगो नव थाय;
 बेजण रमवा एकठा, मृगया कारण जाय
 चसत झतु फुली रही, सुदर सरोवर नीर;
 मृगयायी पाढा वळ्या, आव्या तेने तीर.
 सुदर तट रक्षीआमणु, उभा तेने छाय;
 माननी एक मदे भरी, जळ भरवाने जाय.

(એ કંન્યાનું નામ સુલેખના હતું તેને ગજરૂપ વેરે પરણુનાની ધર્શા થઈ)

कुभ भरी शिरपर धर्यो, कठाक्ष करती जाय;
 चातुरी घणी चाढ़यो, तोय न चेल्यो राय.
 रीस करो रामा वटे, साभल साजकुमार;
 कोण कारण ग्रह्य कामठु, शीद वैदारे भार.
 राय सुणी अचरत ययो, सायी सामु जोय;
 शु कहेछे ए कामनी, कही नव शके कोप.
 कहे रामा तु कोण ढे, कोण तमारी जात;
 शा कारण पञ्च पुञ्चु, ते कहो मुजने वात.
 नारी वेणज ओचरी, साभल सातु धीर;
 कशी भरीने नात तु, मारा कुभपर तीर.

कुमे तीरज वागडो, चालशे जळनी धार,
होड आपणे एटली, आपु एकावळ हार.

(पथु भावता तारने व ली लह ने तभारी येती द्वाण चूळापु
तो तभारे भारे घेर आरी भारी वेरे नग्न करवु)

महिषति रिहयो मनविशो, ए तो रुडी वात;
हु निशान भुलु नहि, वेडु ते कोण मात्र.
ताणि तरिज नास्तियो, राजाये दड दोट;
आवतो शाल्पो झडपशु, चुकव्यो पहेली चोट.

सखियो साथे हशी पडा, चडी रायने रीत,
को काळे भुलु नही, जाणे ठेदु शीघ.

प्रचाने वारि रास्तियो, रीस न कीजे राओ,
मुखपि वेणज जो ओचर्या, एने मदिर जाओ
पठिं राय हशि वोलियो, कहो आव्यानी वार,
मदिरनु दे पारखु, आवु पडती रात

निये पावक परजळे, मृत सज्जीवन थाय,
तेयि मोहोल उच्चेरडो, ए एधाणि राय.

अग्नियकी लोढु गळे, जीवती धमणो सार,
मदिर कल्यु ते माननी, लक्ष उसा लोहार.

जेने दिठे जग मोहि, तेनु ठेदे शीशा,
तेने घेर यइ आयजो, रवि आथमते दीश.
निर्मळ वाढी वनस्पति, निर्मळ नीरशु नेह;
पुष्पो विणे प्रीत शु, माळी मदिर तेह

जेह समारे तुजने, तेने समारे जेह,
तेवी महोल उच्चेरडा, सहि एधाणी एह
शोभा दे सउ लोकने, तेने उज्जळ काम;
शामा समजाव्यु तमै, घोवी एनु नाम.

जेने खाधे निष चडे, तेने जे कोइ खाय;
ते मेलु मुज बारणे, ए एधाणी राय.

उत्तर मोर.

कुरुंग हेम सरिखडो, पुछ पीवंतो नीर;
 ते मेलु मुज वारणे, आवजो आणी धीर.
 दिवसे मारे कामनी, कुलमां करे उद्योत;
 घेर घेर अजवाळुं करे, जुवती दीपक व्योत.
 मुखे मधुरं बोलतो, चातुर नर वश हीय;
 तेनो शब्द सुणी आवजो, जेय न जाणे कोय.
 भोगी माणे भूपति, तेने वालो तंत्र;
 बोले बेशी जोखथी, जुवती ते तो जंत्र.
 रांक अढारे वर्णमां, जेवडे ताहुं राज;
 धीरज रास्ती आवजो, जात अमारी आज.
 डाढ्यो अकले आगळ्यो, सर्व कळानो सूत्र;
 नारि में ते ओळख्यो, वणीक केरो पुत्र.
 अमुलक वेजे तमकने, जळमां नीपजे जेह;
 ए वे कीजे एकडां, तात अमारो तेह.
 अमुलक वे ते नेण छे, जळमां कमळं सुधाम;
 नारि तै मुजने कळ्युं, नेन कमळशा नाम.

चोपाद.

एवुं कहीने नारि जाय, मनमां हरख्यो पेते राय;
 आप आपणे मंदिर गयां, सांज समे वे तत्पर थयां.
 कद्यां एधाण धरीने गर्व, राजाने मन वशियां सर्व;
 प्रीत थको राजा परवर्यो, ख्यां महोल सामो संचयो.
 उठि अबळाएं कर्यो प्रणाम, भले पधार्या रुडे काम;
 पांच पदारथ पाम्यां अमो, प्रिते करी पधार्या तमो.
 राजा बेठो पासे जइ, ख्या कर जोडी उभी रही;
 भागनीये निरख्यो तै भूप, राज वीज राडियाळुं रूप.
 राजाये राणि निरखियां, वेउजणा हैडे हरखियां.

दोहरा.

सुलोचना एम औघरे, सांभळ राय सुधीर;
 जो थहुं तो तुंजने वहुं, नहितो पाहुं शरीर.

(बाईनी भरणु असी हती के तेज पर्यंते भांधर्वविनाह कर्त्ता, पर्यंत
राजकुमारने अम अनु परशुरुं शीक लाखु नहि तथी तेहो ना कही)

विनता वल्ती ओचरी, ए गु वोल्या राय;
ना कहेतां मरजुं अमो, ते तमने हत्याय.
राय कहे सुण सुंदरि, एमां अमने खोड़;
काल सबरे परणशुं, आपण जुवती ज्ञोड़.
हैडे धीरज राख तुं, जइ संभवारुं तात;
नगर लोक सउ देखतां, शालु जमणो हाथ.
मढप रचावुं मोक्षो, परणुं रुडी पेर;
पटराणी करु प्रेमशु, राखुं मारे धेर.

(राजकुमारना अे दमनथी सुसोचना संतेथ भाभी भेटानी भानी असे अर्थ
अने दुवर अहो शहने धेर शब्द सूध ग्हो, अवाभां भागुं कौतुक थंड.)

चोषाद.

तेणे समे वल्तुं शुं थाय, सजी सभाने बेठो राय;
चंपकसेन नाम जे तणुं, ढळे छत्रशिर शोभित घणुं.
निशा अंधारि दीपक वळे, राज कुळ छत्रिक्षी मळे;
राग रगणी छत्रिश थाय, बहु मल्या राणा ने राय.
विविध प्रकारे थाये गान, ए रिते बेठा राजान;
पहोर रात एम करतां गइ, नगरमांही त्यां दुमज थइ.
घसमसीने त्यां आच्या लोक, सउकोने मन प्रगट्यो शोक;
राय सभामां आवी रह्या, कारण राजा आगळ कक्षां.
राय वचानो नथी रे लाग, नगर विषे आच्या वे वाघ;
राजाजी साभळजो वात, माणस ब्रणनी कीधी घात.
सुणतां राय थयो असवार, सौळ्या छे त्यां महा कुञ्चार;
नगरथकी वहार नीसर्या, धेरी वाघ वे आगळ कर्या.
राजा सौथी आगळ रहे, कोध करीने वाणि कहे.

दोहरा.

नगरपडो वजडावियो, वरतावी छे आण;
जे नहि आवे रणविषे, तेना लेचं प्राण.

रहे रायना देशमा, अन रायनु खाय;
वोलो आवी आ घडी, रणमा साथे थाय.
पाचथकी पचासनो, पाठो के अस्वार;
जे नहि आवे रण विधे, तेने मारु ठार.

बृद्ध प्रधान वाणि बदे, एम न बोलो गोल;
कोइक एवो रही जशो, उत्तरशो तुज तोल.
नहि गुदरु परधानने, नहि बेठो के बाप;
पक्ष करु जो कोइनो, ब्रह्महयादिक पाप.

चोपाइ.

चपकसेने कोलज कर्यो, शिकार करवाने सचर्यो;
अन्यो अन्य सेना सचरे, धेरी वाघने आगळ करे.
एम करता बीती मध्यरात, वाघ बेपनी कीधी घात;
राजा मनमा हरख्यो बहु, बजीरसाथे हरख्या सहु.
रणमा सभा करीने राय, सउकोने ला करे पसाय;
हु तेने आपु शिरपाव, जेणे वाघ पर कीधा धाव.

दोहरा.

कर्यु निरीक्षण नरपति, जोया सधळा रूप;
दृष्टे आवी नव चट्ठो, पुष्पसेनसुत भूप.
क्रोधपूर्ण राजा थयो, भमर चढावी शीशा,
जइ सुतने हाथे हणु, रवि उगते दीजा.
हत्या न गणु नाळनी, वचन अमारु जाय;
रावत सउ ज्ञास्वा थया, कर्यो महा अन्याय.

चोपाइ.

राते सर्वे रणमा रखु, उग्यो सूर्य ने वहाणु थयु;
प्रातःकाळ थयो जेट्टले, पुष्पसेन जाग्यो तेट्टले.
रवि उगमते ते उठियो, पाग समारि बेठो थयो;
प्रमदा आवी पालव ग्रद्या, राजाने एम वचनज कछाँ.
तमो बिना मैं रखु न जाम, घडी एक वरसनी थाय;
तम दीठे मुज भागे भूत, अण दीठे उपजे महादुख.

राय कहे धीर राखो तमो, वचन मारु जे वरशु अमो;
 वचन देइने महिपति गयो, महोल पोताने दाखल थयो.
 आवत्तो मापे निरख्यो तन, उलठ वधी पात्ताने मन;
 कहो कुवर क्याथी आविया, समाचार शा शा लानिया.
 कोणे वाघ हण्या कइपेर, राजकुवर पधारी धेर,
 जीती जश ते कोणे लीध, केटलाने सरपावज दीध.
 मा शु वाघ शु कहोठो तमो, बात कशि प्रीड़ु नहि अमो;
 राते ते शी थइछे बात, क्याहा गयाछे भारो तात.

दोहना.

राते वाघ वे आविया, सेन गयु रणमाय;
 नगरपडो बजडावियो, तु वयम न गयो साय.
 वचन शुणीने मातनु, चाल्यो राजकुमार;
 अश्वे बैशि एकलो, गयो नगरथी बहार
 कटक सर्व पातु वळ्यु, जाणे सागरपूर,
 कुवर मळियो वाठमा, खा उगमते सूर.
 पिता समीपे आवियो, पाळो थइ ते वार;
 कर जोडीने कुवरे, किधो जइ जुहार.

चोपाइ.

रायनी करडी दीठी दृष्ट, कुवर मनमा पाम्यो कट,
 कुवर मनमा जालो थयो, सौनी पाठळ पाठळ रळ्यो.
 राजा आव्यो रणमा जइ, सेना सौ सौने धेर गइ;
 चपक बैठो आसन चडी, तेझ्यो कुवरने ते धडी.
 नानु मोहु नगरनु सहु, भव्यो खल्क जोवाने वह;
 साचु कहो रळा नया रात, वळती आव्या वयम प्रभात.
 वळती कुवरे वचनज कह्यु, जेम सरजु हतु तेमज थयु;
 राजाजी जे कहो ते कह, दो आज्ञा ते महतक धर्ह.
 शाने पूछो राखणहार, हु अन्याइ उभो आ ठार,
 वोस्यो राय चडावी रीश, जाओ कुवरनु छेदो शीश.

एनी जे को करशे वार, मारु तेने साथे ठार;
 चपक वाणी एम बोलियो, हाहाकार नगरमा थयो.
 एह वचन करि मानो सत्य, वार न लागे कहे भूपल्य;
 नगरलोक सौ मनमा लहे, कोण एवो जइ रायने कहे.
 बेठी हती राणीजी जहा, ते वात बळती गइ तहा;
 मारा सुतने मारे आज, तेना चक्षुं करावु त्याज.
 जो कोइ लहे कुवरनु नाम, तेनो फेहु निश्चे ठाम;
 चढावी दृष्टि लुटे केश, भर जोवनमा बाले वैशा.
 राणिये मन आणी गर्व, सोढाडो साहेली सर्व;
 लागी वारज करता वात, साहेलियो मळी सेसात.
 सउको खडग उघाडा करी, राजसभामाहे सचरी;
 जइ नरपतिने कर्या प्रणाम, मागुउ हु एक इनाम.
 राय कहे भागोछो तमो, ते हाथधि नहि आपु अमो;
 लारा मनथी भाष्यो सुत, तु उगारवा आवी पुत.

दोहरा.

राणि मन विमाशियु, जातेनु कशु जतन;
 जीवदायी मरबु भलु, जो सुत जाय रतन.
 कोध कस्ने कामनो, धरी रायशु रोश;
 शोक कारे नेठी सभा, कोइ न देशो दोश.
 राजाने कह्यु राणिये, कोहे गळशे जात;
 हमणा तुजने लागशे, स्त्रीहत्या सेसात.
 ब्रह्महत्या हुन्या तणो, कोइक काळे पार;
 स्त्रीहत्या जेणे करी, नहि नरकमा ठार.

चोपाद.

वचन सुणो माताजी तण्, कुवर मन दुख पाम्यो घणु;
 सुत माने जइ लाभयो पाय, फोकट बोलो का अन्याय.
 मारा तातनु वचनज जाय, शे कामे आवे आ काय;
 जायु ते जावानु सर्व, गदी देह तणो शो गर्व.

मुज पिताथी उगारशो, जमकिंकरने क्यां वारशो;
एक वचन माटे बळि छल्यो, पुरणवचन पोताने पळ्यो.
हरिश्वंद्र अंखज घेर रखो, विभीषण लंकापति थयो;
वचने पांडव वनमां गया, वचने कौरवना क्षय थया.
अहंकारी अभिमानी हीय, चिरंजीवी जगमां नाहि कोय;
जाओ वेसो तमो सृङ्डी फेर, प्रीछवी माने मोकली घेर.
कह्युं तातने मूको माम, तमे तमारुं करोने काम.

दोहरा.

राये मन विमाशियुं, मोटी हल्या वाळ;
कुंवरने हाथे हणी, आणुं मारो काळ.
कोल पळे सुत उगरे, स्त्रीहल्या नव थाय;
कह्युं प्रधानने ते वरो, पुछो पंडित राय.
तेड्या पंडित प्रीतश्चं, प्रधान पुछे जोप;
कहो केम सौ उगरे, दिसे न कोइने दोप.
प्रीत करी पंडित कहे, सुणो राय ए रूत्र;
बोल तमारो पाळवा, वनमां कहाडो पुत्र.
अम शिर दोप न दिनिये, सुणो राय सुजाण;
जेवी शास्त्रोमां घटे, एवी बोलुं चाण.

चौपाई.

कोधे बोल्यो चंपकराय, कुंवरने काढो वनमांय;
पठ्ठी पडितनी भागी भूता, टाळ्युं जन्म वधानुं दुख.
पुष्पसेने सज्पो केकाँय, अंगे धर्यां धनुष ने वाण;
मागी शिख चाल्यो जेटले, प्रधानपुत्र मळ्यो एटले.
परस्परे रोया वेजणा, रोतां काँद न राहिय मणा;
पुछे विचार ब्राह्मणजन, वळती मुजने काढे वन.
वळती मित्र गयो ते स्यांय, राजसभा वेढी छे जांय;
मान दइ महिपतिने मळ्यो, एक अरज भारी सांभळो.

दोहरा.

वजीरसुत वाणी वदे, सुणो रायजी सूत्र;
 एक वचनने कारणे, बनमा काढो पुत्र.
 एणे वचन तम पाल्लियु, उत्तम कीधो न्याय;
 वचन जाय तम पुत्रनु, ए मोटो अन्याय.

चौपाद.

सुतने सेढीने पुलियु, सख कहो काले केम थयु;
 क्याहा रघ्वाता केने काज, साचु बोल तजीने लाज.
 जे तारा मनमाहि होय, मारिआगळ भासो सोय;
 सुत कहे साभळो महाराज, बनमा जाता हस्त्यो आज.
 मुजने वहाली नथी मुज देह, सख करी मानोजी तेह;
 काले मुजने कौतुक थयु, बोक थकी कोइने नव कल्पु.
 आज तमे तजियोठे क्रोध, तो साचो बोलु प्रतिबोध.

दोहरा.

नेनकमळ बहेवारियो, नगर तमारामाय,
 वत्रिश लक्षण आगळी, तेने छे कन्याय.
 करम सजोगे ते मळी, नाख्यो तेणे पाश;
 वचन दिधु वरवातपु, भागि तेनी आश.
 आशा भगो जे करे, कोल बेकोली थाय;
 महा नरकमा मानवी, जरूर ते तो जाय.
 चपक चितमा चितवे, सर्व सुणी वृत्तात;
 तरत शेठ तेडावियो, अधिपतिए एकात.
 महानन आव्या भलपता, ज्या वेठा छे राय;
 भूपे मान दिधु गणु, आवि नमिया पाय.
 राय कहे शुण शोठजी, मागुदु हु मान्य;
 नेन कमळनी दीकरी, आपो अमने दान.
 वळता माझन घोलिया, साभळरे भूपाळ;
 कन्या अमो क्यम दिजिर्ये, वेसे शिरपर गाळ.
 तमो क्षत्रि अमो वाणिया, तमो राय अमो राक;
 वरकन्या परणे नहि, वैश्यो काढे वाक.

चोपाइ-

नरपति कहे नहि मारो बाक, ए कन्याये बाल्यो आक;
 मुज कुवरने तेडी गइ, किधो कोल अमारी यह.
 तेने जइ पुछो निरधार, जेम घटे ते करो विचार;
 शेठ शुणि आब्या घरमाय, पुत्रीने जइ पुछयु ल्याय.
 सत्य वचन तु कहेजे आज, जेम कहे ते करीये काज,
 पुत्रि कहे वर एज प्रमाण, नहितो मारा छाङु प्राण.
 शेठे वात धारी ते ध्यान, देउ कुवरने कन्यादान,
 नव आपु तो पुत्रि मरे, वळि राजा मन वेरज धरे
 कहोठो तो राजा लिनिये, काया दान अमो दीनिये.

दोहरा

मारी पुत्री नाडकी, तम सुत वावन वीर,
 जुगतु जोडु परणशो, जम साकरने स्वीर

चोपाइ

राजा कहे न लगाडो वार, सामग्री करजो तइयार,
 शाने वार करो एवडी, जाओ परणावी दो आ घडी.
 मदिर आब्यो वेवारियो, समाचार जइ स्तीने कद्दो,
 कुवरि तो इच्छावर वरे, ना कहिये तो निश्चे मरे.
 शेठाणिये से शुणि लह्यु, जइ कुवरिनी आगळ कह्यु.

दोहरा.

राजकुवर तने परणशो, हवणा जाशे रान,
 लख्यु हशे तो आवशे, तु शुण तरे कान.
 कर्म मारे जे लख्यु, ते थाशे मुज हाल,
 रुडों भुडो मैं वयो, आ ठेकाणे काल.
 तु जाणे वह रायने, वेठी चानु पान,
 एतो रहेशे ओरियो, समझे आणि सान.
 काल सवारे काढशे, रक्षाली भरशे पेट,
 तात कहे छे ताहरो, नहि सुख पामे नेट.

कन्या माताने कहे, कर जोड़ीने वात,
 मानु नहि हु मावडी, घेलो यथो मुन तात
 तात शु तेठो दीन थइ, करो गणेश आचार,
 लगन चोघडियु जायठे, हवे न करवी वार
 आव्यो राजा परणवा, वाग्या वडा निशान,
 पाट त्रेसारि पद्मनी, जाणे उग्यो भान
 हाथ मेलाव्यो हाथशु, आरोपी वरमाळ
 मूर्ति एकमा उठिया, परणि ते तत्काळ
 आशिरवाद विप्रो वदे, वेद वदीने वाण,
 चिरजीवी रहे वे जणा, त्रैरे लोक प्रमाण
 परणी उठचा पाटथी, उत्तारी वरमाळ,
 मीटल डेढा दूटशे, लरव्यु हशो ते काळ
 शिर मागी नारिकने, हु परदेश पव्यीश,
 हुकम लइने हजुरनो, जाता तने मब्बाश

चोपाद

पुष्पसेन परणी परवर्षे, नमस्कार जइ माने कया,
 माताजी अमो वन चालशु लरयु हशो व्यरे आवशु
 मारा समजो दु रस दिल धरो, नयने आसु शाने भरो,
 त्या जाड त्या सुखन होय, मुजने गानी शके न कोय.
 प्रसञ्ज यइने गिर दिनिये, प्रणाम लक्ष्मरा लीजिये,
 चालो कहेता जीवन जाप, पण शु करिये कोप्यो राय

दोहरा

नवन मातनु शिर धर्यु, त्यार्थी चाल्यो जाय,
 सामो जइ उभो रद्दो, ज्याठे रान रभाय.
 शिश नमाव्यु तातने, सभाने कर्यो जुहार,
 राजा तेठो त्या नइ, चरणे नम्यो कुमार
 राजा मुसरथी वेलियो, जो सुत मारो होय,
 वनमा जाने एकत्रो, साथे न लइश कोय
 हु ने अश्व अमारडो, न कस्त कोइनी आश,
 जो कोइ साथे सचरू, सुकृत धाजो नाश

सेवक साथे सचरे, ते कायरनु काम;
जाझ वनमा एकलो, “पुण्पत्तेन” मुज नाम.
एम कहि पाठो वळ्यो, न होय मन उच्चाट,
प्रधानपुत्रे निरस्तियो, उपज्यो मन गैगाट.
प्रधानसुत पाठो वळ्यो, हैडु फाटि जाय,
साथे आबु केम करि, वारि राखे राय
वळती निज नारि कने, आब्यो राजकुमार,
नारे निरख्यो कथने, कीधु रुदन अपार.
नारि प्रन्ये नेहना, कद्या वचन दे चार,
जो जीवशु तो आवशु, नहितो कोटी जुहार.

चौपाई.

खी कहे अश्वयकी उत्तरो, मारे हाथे भोजन करो;
मुजने साथे तेडो आज, सफळ थाय तो मारा काज.
प्रीति पाननी श्रीदि कर, मारे हाथे मुखमा घर.

दोहरा.

भोजनरु मने शु कहो, हु नप पीड वार,
वचन न पाढु तातनु, धिक मारो अवतार
जो अश्वेयी उत्तर, लजे जननी आज,
हार हाल करी शिख द्यो, कीजे रुदा काज

चौपाई.

माया मोहने भमता तजो, एक मने इश्वरने भजो;
बुद्धिसागर ठे मारो पित्र, धणो चतुर ने धणो पवित्र.
रहेंडे धणु तमारी पास, एधि काय न याय विनाश.

दोहरा.

रानाने नारि कहे, कोल अमारो एह;
बारे वर्षे न आविधा, तो पाडु मुज दैह.
बार वर्सपर एक दिन, जो वित्तिने जाय,
जीर धन जो देहमा, नहि मुज एक पिताय.

कथ पाखे जे कामनी, भारे नहि सुख भोग;
 एटलु तम पाखे तजु, सुखनो नहि सजोग.
 चालु कहेतां चमकशु, पुठ दिठे जीव जाय;
 नेणा पडशे नीकली, काळजु कटका याय.
 आभ पडे धरति गळे, एउडु मास दुःख;
 यारे तमने देखशु, यारे याशे सुख.
 नरथी नारि एकली, पगले पगले वक;
 दिशे दिन दिन दावणि, कामनी शिर कलक.
 पुउय अमारे एकतम, अवर न विजो कोय;
 अवर विजो जो करु, कुळमा खापण होय.
 राये नारिने कही, चलावियो तोखार;
 ए अवसरे प्रधानसुत, आव्यो एणे ठार.
 कर्यो प्रणाम प्रधानने, वळो हवे कद्यु वीर;
 जीव आपणो एक छे, दीसे दोय शरीर.

चोपाई.

प्रधानसुत ते पाठो वळयो, पोते राजा पथे पळयो;
 वेगे पाणी पथ पळाय, मनमाँ वोक न आणे राय.
 अनेक दिन एम ररते थया, भमतां भमतां वनमाँ गया;
 राजा चाल्यो वनमा वळी, महावनमा एक जक्षणी मळी.
 मोटा हाथ ने भूरा वाळ, आवीने वीवराव्यो वाळ;
 कोण छे ने केम आव्यो अहाँ, मुज आगलथी जाइश कहाँ.
 घोडा साये तुजने गलु, घणे दिने मुजने भक्ष मळ्युं;
 लारे वायक वाल्क भणे, हु शरणे आव्यो तुजकने.
 तमो कहो ते कामज करु, दो आज्ञा ते मस्तक धरु;
 जक्षणीने मन आवी दया, प्रीत वचन राजाने कद्या.

दोहरा.

बळती जक्षणी वदे, सांभळ राजकुमार;
 भाँड पडे सभारजे, हु आवीशा ते ठार.

१ मूतडी अम्रवा भीलडी हजे.

सिद्ध वचन ते शिर धर्यु, वेगे खेड़यो गर्जै;
 घणे दिने जइ नीसर्यो, कुती भोज उपा राज.
 नगर समोपे जइ रख्यो, मब्यो विप्र एक राय;
 पुठ्युं तेने प्रेमशु, कोण नगर कोण राय.
 विप्रज वाणी बोलियो, तु शे न जाणे मन;
 धार नगर रक्षियामणु, कुती भोज राजन.
 वदन नमाव्यु विप्रने, पछि खेड़यो केकाण;
 नगर अनुपम निरखियु, जाणे उग्यो भाण.
 गढ दिसे रक्षियामणो, देति रिद्यो राय;
 रुवर्ण कुभे सुदरी, जळ भर्त्वाने जाय.
 बडी जुक्कि वाडितणी, पुष्पो आड विशेक;
 वर्णन पुरनु शु कह, केता नावे छेक.
 राजसभामा सचर्यो, उत्तम शोभा होय;
 नृप करे वारागना, ते देखी मन महोय.
 पडित वेठा पाचसे, राजकुळी छग्नीश;
 जोशि जुगते ओचरे, लक्षणधर बनीश.
 जमणी पासे जुगतशु, प्रधान ने धनराज;
 ढाँगी पासे पैटडो, कान कुवर महाराज.
 कळावत कळा करे, गुणिजन त्यां गुण गाय;
 चमर ठळे चोपासर्यो, कनक सिहासन राय.
 राजसभा मनमा वशी, हैडे हरख्यो राय;
 वया जइए आपु तजी, उत्तम आज राय.
 पडित सौने प्रणभियो, रायने कर्यो जुहार;
 भूपति मन आनदियो, देखि राजकुमार.
 राजसभामा जइ रख्या, सउना रीढ़या मन;
 मान दड बोलावियो, मन हरख्यो राजन.
 कोणतणा तम वेटडा, कोण तमारो देश;
 किया मुलकथी आविया, पुछे वात नरेश.

ऐथ्वी देश अमारडो, तात तो सरजन हार;
 उमेदवार ओळगतणो, ज्यां धार्यु कर्तार.
 राजसभा राजि थइ, वंधाव्यो तोखार;
 खाओ पियो आनंद करो, एम बोल्या दरबार.
 अहो रहो ओळग करो, सहस्र टका ल्यो रोक;
 कुंवर साथ नित्ये रमो, न होप मनने शोक.
 नित्य वाडिये संचरे, चोरे चौटे जाय;
 जाणितो थयो नगरमां, आव्या अमुलख राय.
 वार्ता सधळे निस्तरी, सुंदर चतुर सुजाण;
 ज्यां बेठी पद्मावती, दासी करे वसाण.
 कुंवरि कुंती भोजनी, पद्मावती अभिधान;
 शाशिवदनी मृगलोचनी, हीरा दंतसमान.
 साहेली सोळ वर्षनी, सुलेखा तेनुं नाम;
 ज्यां बेठां पद्मावती, ते आवी ते ठाम.

चोपाइ.

हसति रमती ने बोलती, आची निकट दासि डोलती
 बात सुणो बाइ अमतणी, अमने आपो वधामणी.
 तम सरखो दिठो एक भूप, तमथी अदकुं तेनुं रूप;
 कोइ नगरनो छे राजियो, महा संकटे अहीं आवियो.
 रूप सुरूप छे लक्षण सार, कारण रूपतणो अवतार;
 हेत करि राख्यो छे राय, तेनी शोभा कहीं नव जाय.
 अश्व अनोपम उपर चढ्यो, काल अमारि दृष्ये पड्यो;
 चित्र लखेलि हुं तो थइ, सुध बुध मारि सर्वे गइ.
 वर्ष सोळ बाइ मुजने थयां, एवां रूप में नव निरखियां;
 सहि मानजो मारु कह्युं, रूप अलोकिक में तो ।

दोहरा.

पद्मावती कहे प्रेमशुं, सांभळ सहियर एह;
 वसाण तुं करे जेहनुं, मुजने दाखन तेह.
 बाइ बेसो माळिये, निरखावुं हुं चाल;
 करवा स्नान सरोवरे, जाशो प्रातःकाळ.

नारि बेठी निरखया, चोगम देखे वाट;
 चार घडिमा आवियो, भाष्या भव उचाट.
 दुरुथी दिठो आवतो, भागो मननी भ्रात;
 अथ डोटाव्यो पाटिये, निरखियो एकात.

चोपाइ.

नृपे नाइ वस्त्रो पेरिया, दडवतो सुरजने कर्ण,
 सखागजी शिर उपर केश, उटा मेल्या बाळे वैशा.
 घोडा उपर थयो अस्थार, उटी चाळे राजकुमार;
 वाका मेल्या ठोगा वहु, ते दीठे हरसे छे सहु.

दोहरा

कपूर सरखो उजळो, कुडळ झळके कान;
 रुपे काम सरिखडो, दाता कर्ण समान
 जो परणु तो एहने, नहिकर वैसे पाप,
 अबर पुरुप पृथ्यीविषे, सर्व भाइ ने वाप.

चोपाइ.

आपु तने सोळ शणमार, वल्लि एक मोतिनो हार;
 उपाय करवो स्फळि पेर, जैम तेम तेढि लावो धेर.
 रुप रग एनु निरखिये, जात नात एनी पूठिये,
 जोइये चतुराइनो रग, पाठि परणु हु तेने सग.

दोहरा.

विहुं झडप्यु माननी, उलट अग न माय,
 जो नव लावु रायने, नावु मोलो माय.

चोपाइ.

दासि चाली वेगझु, आवो ज्या राजान;
 सम देइ समजावियो, चाल्यो चतुर सुजान.
 आगळ दासि सचरि, पाढळ चाल्यो हैल;
 धशमसतो मोले चड्यो, थइ रही रग रेल.
 प्रभावती प्रेमे करि, दिधु घणुएक मान;
 सफळ जन्म अमारडो, पेर भाष्या राजान.

खाटे वेसो रांत शु, ल्यो चावो आ पान;
 अमउपर करुणा करि, त्रुठया श्री भगवान.
 आशा पूरो अमतणी, अम धेर आव्या इशा;
 राज पधार्या रीझमा, सफळ थयो आ दीस.
 राजा रीढ़ी वेशयो, सन्मुख उभी नारि;
 कोण धरती कोण देशडो, पुछे राजकुमारि.
 कोण रायना बेठडा, केम नीकब्बा पर देश;
 हु पुच्छुं प्रेमशु, दिसो बाळे वेश.

चोपाद.

शे कामे पुछोछो गाम, शे कामे पुछोछो नाम;
 जेह करे विनानी वात, ते पुछे पितानी जात.
 ज्यहा वसु या मारु गाम, रजक लइ आव्यु आ ठाम;
 तारा तातनी ओळग करु, मृगया रमवा साधे फरु.
 लख्या प्रमाणे रदिशु अमो, ते सख करिने मानो तमो.

दोहरा. समश्या.

नारि बोली नेहशु, तमोछो चतुर सुजाण;
 पाच “प” वहाला पुरुषने, तेना करो वस्त्राण.

उत्तर.

पान पाद ने पदाणी, पुरिमळ ने पोशाग; *
 पाचे वहाला पुरुषने, वळि पूछ सद्गाग.
 धन धन तारि सूजने, धन धन राजकुमार;
 पांच क वहाला कामनी, एह हवे उच्चार.

उत्तर.

काजळ कंकु कंचबो, वळि कसुबो कत;
 पांच क वाला पदाणी, सुणजे नार सुचत.

प्रश्न.

जुगतु बोल्या जाणिता, लागी मनशु राड्य;
 पाच कक्का नयी तुजकने, ते तु कही देखाड्य.

उत्तर.

कुड कपट कुलक्षणो, कुडि जान कुनारि;
ए पाचे नथी मुजकने, साभळ राजकुमारि.

प्रश्न.

कहो छो छैये एकला, तम साथे छै सात;
प्रगट देखु तु तमकने, ते कहो साच्ची वात.

उत्तर

तीर तरकस तरवारने, भालो ने तोखार;
दाल अने बड्डी चावको, सात साथी छे सार.

प्रश्न.

पखी उडे जीविना, वेसे जेनी डाळ;
मृत्यु पमाडे देखता, कहो मुजने भूपाळ.

उत्तर.

कुवर कहे सुग कामनी, सौ हु समझो एह;
शमश्यामा समझावियो, तीर कहीजे तेह.

प्रश्न.

उत्तम कुळथी उपनी, ताततणो जे तात;
ते साथे विवा कर्यो, समझो सज्जन वात.

उत्तर.

महिपति कहे झुण माननी, उत्तर आपु एह;
ए समश्या हु समझीयो, तक कहीजे तेह.

चोपाद.

एवा चन्दन वनिताये कस्ता, राजकुमारि मनभा लक्ष्मा;
प्रती उत्तर एनो आपियो, स्त्रीने मन भूपति भावियो.

दोहरो.

रामाने राजा कहे, छो तमे चतुर सुजाण;
अमने उत्तर आपिये, बोल्यो राय प्रमाण.

समश्या. प्रश्न.

एक नरे स्त्री शोभती, स्त्रीने चाली अपार;
गळस्यळे चुबन करे, ते कहो राजकुमार.

उत्तर.

कुवरी कहे अकोटडी, तमे पुछियु तेह;
बीजु पुठो रायनी, उत्तर आपु एह.

प्रश्न.

शत नर वाध्या वधने, मद्दी नर थयो एक,
ते नर तारी पास छे, वहालो स्त्रीने वशेक.

उत्तर.

कुवरि कहे शुण रायनी, उत्तर आपु एह,
हार नाम छे एहनु, तमे वताङ्यो तेह.

चोपाद.

राजाये जे पुछि वस्त, स्त्रिये उत्तर कर्या समस्त;
एक एकथी अदकी चातुरी, वाधी न शके कोइ वाकरी.
माहोमाहे हरखज धरे, या विहगना तस्ति उच्चरे,
तमो वेड ठो चतुर सुजाण, तम आगळ मुजमति अजाण.
वाइ जो मन माने ताहरु, राजा साये वातो करु,
कुवरि कहे बोलने सत्य, मारा लूणनी साखे पत्त्य.
हरख घणो हइए आणिये, बोलिये जो बोली जाणिये.

दोहरा

पर पराक्रम पर चातुरी, पर लक्ष्मी पर नार,
तेजु वाद न कीजिये, सामळ राजकुमार.

चोपाद.

विहगना वाणि उच्चरे, हेते राजा हइडे धरे;
तमो मुखे वदता लाजिये, एक वेण उत्तर आपिये.

प्रश्न. दोहरा

चाले छे पण चरण नहि, उडे पण नहि पाख,
लाखे सायो नव रहे, सउको देखे आख.

उत्तर.

उडे ते आकाशभणी, धरमा रहे गेंधाट,
धुमाढो निर्धारिये, विचरे वसभी वाट.

प्रश्न.

चचु पण चकवी नहि, माजारि मुख शाम;
वे जीभो नहि नागणी, नरपत कहो ते नाम.

उत्तर.

डाढ़ाना दिलमां वसे, पडितने प्रीय पूर;
लक्षण जोता लेखणी, नाणावटीनु नूर.
राजा मन रिड्यो घणु, जोइ चतुराइ एह,
साचु बोल सलक्षणी, तु नहि दासी देह.

चोपाई.

बोलि दासि नमावी शीश, हु साचु बोलिश आदिश,
दासि पण राणिशु वसु, एह वातनु अचरत कशु
कुवरि कहे उठोजी राय, भोजननी बैला वही जाय,
तत्पर थइ हेठा उत्तरो, भोजन मन भावता करो.
(राजकुवरे बाधने पूर्खु डे तमे डाने परख्याओ। ते कहे
कु परख्यीनी जोडे वात कर्तो नथी)

दोहरा.

हु परणी कु पेटमा, दृष्टे चडिया आप;
तमविण बीजा पुरुष जैह, ते भाइ ने बाप.
जेम घटे तेवु करो, छोजी चतुर सुजाण;
ना कहीने जो निसरो, तो तमने दउ प्राण.

चोपाई.

राजा कहे जाणे तुज तात, आपण वेनी करशे घात;
बाली नथी मुजने मुज काय, मुजने चिंता तारि थाय.
विनता ए मूकी दो वात, कहो जूइ परणावे तम ताते;
आज्ञा लेवाने सचरो, शामाटे वण खुटे मरो.
• चतुराइ नहि चड्ठे वेचाय, एळे जीव तमारो जाय.

दोहरो.

क्षत्रियुं ए कर्म नहि, कुवरि कहे शुण कर्ण;
नादायी क्षूटे नहि, माथे आव्यु मर्ण.

चोपाद.

झणि रुदयामां राजा हश्यो, वोल्त तेहनो मनमा वश्यो;
जो वरवानु मनमा धरो, विप्र तेडावि मुजने वरो.
पुरे साख जो ब्रालण आप, ए वाते नव वेसे पाप;
पछि सकट जो आवी पडे, इधर आपणी वरि चडे.

दोहरा.

गोर पोताना घरतणो, तेढी दिधु मान;
मुज परणावी परवरो, ल्यो मन गमता दान.
विप्र पञ्चो विचारमा, वळग्यु मुजने व्यग;
मृत्यु मारू वे तरफ, पडियो विकट प्रसग.
जो नृप जाणे तो हणे, कुवरी केम दुभाष;
वैय प्रकारे भोत छे, पडित मन पस्ताय.

चोपाद.

वळति वनिता वाणी बदे, वाडव दु स नव धरशो रुदे;
जो राजा केडे मुज ठाम, ताह नहि लेवा देउ नाम.
परणावि आणे भाळिये, जनम तणा दुखडा टाळिये;
कुवरी कहे गुहजी शुणो, आशिरवाद रुपिजी भणो.

दोहरा.

जोडी लाकडे माकहु, दक्षणा पामु क्षिप्रै;
वळती अगोपारा गणु, एम विचार्यु विप्र.
कयुं माहरू मलपतु, चोरिना थभ चार;
मगळ केरा केरवी, आरोगाव्यो कसार.
प्रेमे परणी उठिया, पोती मननी आश;
भावठ भागी गुरु तणी, कहे कवि शामळदास.

चोपाद.

सां विप्रे वनिताने कह्यु, आपो शिर न जाये रह्यु;
तने अमे रुहु कहाविये, हरे भणावा नहि आविये.
साचु मानो रुडी पेर, हने नहि आतु तुज धेर.

दोहरा.

बोली बत्रीस लक्षणी, साभल विप्रब वीर;
 लाज अमारी तमकने, सौप्यु तुजने शीर.
 एक तात जेणे नप्या, विज्ञा तात करतार;
 त्रिजो तात तो गोर छे, चोयो अन दातार-
 ब्राह्मण भोळे भाखियु, वश थाशे सउ लोक;
 आशिरवाद अमारडो, शामा ठाडो शोक.

चौपाई.

नर नारि मळी लाम्या पाय, विप्र शिख लइ थयो विदाय;
 सौप्यु घर घरूणी चाशिये, पछि वाडव चाल्यो काशिये.

आ छाना लग्ननी अभू राजा तुनि भेल्लने ढेटलाङ वरस सधी थर्द नहि

प्रातःकाळ समे परवरे, राज सभामाहि सचरे;
 कुति भोजने हरख न माय, जाणे रखे नगरथी जाय.
 एम करता विसा वहु दिन, राजानु मायु वहु मन;
 प्रतिहार नामे पेयियो, चतुरपणे मनमा चेतियो
 तेणे त्या माडि पडपूछ, जेने मुखे नहोती मूछ;
 रात दिवस खुलारा करे, सधालि बात ते दिलमा धरे.
 आखे काणो ने वामणो, भुरा वाळ ने लज्जामणो;
 कुवरि मोलतणो प्रतिहार, रात्त दिवस नव ठाडे ठार.
 गया आव्यानी ते शुद्धे लहे, खबर जइ राजाने कहे,
 एम करता वाम्या वहु दिन, चैखो पोळियो पोते मन.
 ब्रण वरस एम विति गया, चौर यइ नगरीमा रह्या;
 एक दिवस एक कौतुक थयु, सेज बातमा लक्षण लहु
 एक समे बेठा राजन, गोर पधार्या तेणे दन;
 महिपतिये दिधा वहु मान, आप्या आभूषण धन दान.
 पुछे धर्मधुरधर धणो, कहो कुवरि केटलु एक भणी;
 शाशा यथानु शीखि ज्ञान, भाषा कवित संगित तान.
 काव्य कोश ने नैपध न्याय, कहो बात जेयी सुख थाय.

दोहरा..

ब्राह्मण वाणि बोलियो, साभळ राजा कर्ण;
 कुवरिने मंदिर गया, वर्ष वितिया त्रण.
 बाला वत्रिश लक्षणी, अद्भुत बुद्धि अपार;
 शिखि विद्या सर्व ते, मैं छोड़तो ते ठार.
 त्यार पठिं जात्रा गयो, जोयु काशि गाम;
 पुठि जुवो ते पुत्रिने, बोलावी आ ठाम.

चोपाइ.

एवु कहिने ब्राह्मण जाय, प्रधानने तेडाव्यो राय;
 प्रधान आव्यो तेणे दीश, आवी रायने नाम्यु शीश
 जाओ तमो कुवरिने द्वार, आशिश कहो अमारि सार;
 कहेजो चिता तजजो तमो, वर रुडो जोइये छिये अमो.
 शिखामण दइने आवजो, प्रतिउत्तर तेनो लावजो;
 प्रधान पधार्या हडिपेर, ते आव्या कुवरिने घेर.
 मल्पता मेडिपर चड्या, ते कुवरिनी नजरे पड्या;
 भले पधार्या प्रधान आन, उभी थइने कीधि लाज.
 किया देशना वा वाइया, प्रधान मुज मोले आविया;
 वात सर्व जाणुद्ध अमो, लेवा खबर पधार्या तमो.
 अलखत घणी करूद्ध आप, ते तो राय प्रधान प्रताप.

चोपाइ

वजीर वक्ती बोल्यो वाण, साभळ कुवरि चतुर सुजाण;
 राजाने साभस्त्रिया आन, मोकल्यो झुद्द लेवा काज.
 कहुठे चिता तजजो तमो, वर रुडो जोइये छिये अमो;
 देश विदेशविको कहानशु, वर रुडो खोक्ति लावशु.
 खाओ पीओ ने दिन निर्गमो, सखियो साथे स्नेहे रमो.

दोहरा.

बाला बोली रीसशु, साभळ डाढ्या शेठ;
 वात करो घरवातणी, पाली भाह पेट
 जइ सभलावो तातने, जेम चढे नहि रीस;
 तात तुल्य तु भाहरे, तारे खोछे शिश.

राजाने तो सान नहि,- राजाने तो कान;
माने कहु प्रधाननु, माटे मागु मान.
वणिक रामोतो कोइ नहि, दीसतो ते रक;
वगर वजीरे वाणिये, खोइ रावणे लक.

चोपाइ.

प्रधान कहे साभल्डे सती, एमा कोइनु डापण नथी;
जेवी इश्वरनी इच्छाय, ते कोइथी भिथ्या नव थाय.
आज्ञा आपो तो सचन, काम काज राजानु कर,
शिख मागीने शेठज गयो, राजसभामा आवी रह्यो.
राजाये दीठो परधान, बोलावीने दीधु मान;
कुवरि लाडकवाइ जेह, शु बोली कहो साचु तेह.
प्रधानने शुणि चिंता थाय, साचु कहेता कोपे राय;
प्रधान बोल्यो रुडी पेर, तमने मळवा तेडे घेर.
कहु तात मळवा आगजो, राधे कोइने नव लावजो;
वल्लि कल्युछे बेउ कर जोड, नथी मरे परण्याना कोड.

दोहरा.

कुति भोज शुणि कल्कक्ष्यो, ए शु गोली गळ;
कुवस्त्रिने भोले जगा, ते उठयो तत्काळ
राय पधार्या माल्ये, आव्यो ल्या प्रतिहार;
नरपतिने चरणे नम्यो, जुगते कर्यो जुहार.
मोहे बेठी माननी, कर्यु दासिये जाण;
तमे गाइजी साभलो, आवेठे अहिं राण.
राय पधार्या वेगयी, कुवरि आगळ जाय;
प्रखक्ष जइ उभो रह्यो, आसन बेठो राय.

(पछी पुनी बेडे वातचीत कृता गऱ्जने भन अयो वहिम
आपो कु ते छानी पुग्यी छे, अधी औपापमान थई राजा पोताने
भहुल गयो, न अ शुक साच्या कु जुडा ते नकी कृत्याने कुपरीना भदि-
रनी चेत्ती कृत्यार पोजियाने जोनारी तजरीन करी ते परथी जण्यापुं
कुपरीना शुभ लम पुण्यसेन वै यां छे)

दोहरा.

प्रतिहारे जे वात कही, विहगना शूणि जाय;
 चेतावी पद्मावती, कोप्यो तुज शिर राय.
 चेळा बठी आपणी, जो चेते तो चेत;
 उगर्णिनो उपाय नर्थी, उत्तर्यु वापनु हेत.
 पद्मावती बोनी पछी, साभल सखि सुजाण;
 मुजपतिने चेताव जइ, नहितो थाशे हाण.
 लाव तेढी आ गोलमा, करिये काई विचार;
 विहगना बळती गइ, तेढी आवि ए ठार.
 पद्मावती प्रणभी कहे, चतुर पुरुष तु चेत;
 चेळा बठी आपणी, उत्तर्यु रायनु हेत.
 मुज माटे तने मारशे, मोटी थाशे हाण;
 माटे भारा कथजी, मानो माटी गाण.
 जीयशो तो नारि घणी, जीवि विना रौ शून्य;
 परदेशो क्याइ परवरो, तमारे शी छे न्यून.
 तात कहेशो ते शूणिश, धारिश आज्ञा शौश;
 तमारो जीवि उगारजो, कोप्यो नृप आदीश.
 स्वामी कहे सुण सुदरि, नव मुकु आ ठोर;
 लाजे जनुनी माहरी, नाम धरावु चौर.
 मरवु माथे सर्वने, चिरजीवि नहि कोय;
 नासु नहि निर्बल थइ, प्रभु करे ते होय.

चोपाइ.

तु क्षत्राणि केरो तन, आज अमारु मान्यु मन;
 मुज माटे तुजने नृप हणे, हत्या मनमाही नव गणे.
 तम हाथे हु देउ वचन, तम साथे पाहु मुज तन;
 एने मन पुत्रीनु झोर, वहु वध्युछे मनमा वेर.
 मारु चालतां मुकावीश, नहितो तुज साथेज मरीश;
 पुण्यक बोल्पो लारे लाय, विचर राजसभानी भाय.
 शामा अमने झीखज दियो, छेलो जुहार मानी लियो;
 रामा कहे सांभळरे राय, चतुर न धरशो मन चिंताय.

प्रसन्न जो परमेश्वर हशे, तो कल्याण आपणु थशे;
 मागी शिख ने थयो विदाय, राजा चाल्यो राज सभाय.
 बेठो सन्मुख भूपति भणी, विक न आणी मन कोइ तणी.
दोहरा.

राजा कहे वजीरने, शो करवो उपाय,
 वात बहार नव नीकळे, काम आपणु थाय
 वजीर वाणी बोलियो, वाणी मारी शूण;
 जाणो तेम तमे करो, ना कहेनाह कूण.
 रावे तेडु मोकल्यु, तेडाव्या चडाळ;
 रात समे लळ निसरो, आणो एनो काळ.
 निशानी लावो नेत्रनी, मननी आग ओलाय;
 कोइने नहि जणावशो, एम उच्चर्या राय.
चोपाइ.

एवी कीधी छानी वात, अरुण अस्त अने यश रात;
 तेडाव्यो या राजकुमार, पासे पतीत उभा चार.
 एनी साथ तमो परवरो, आयुध सर्वे अहिया धरो,
 पाढा पथ जाओ ते साथ, हवे नव पुछशो बीजी वात.
 राजाये मन आण्यो गर्व, ते कुवर मन समजयो सर्व.

दोहरा

राजकुवर वळती वदे, हु गाज्यो नहिं जाऊ;
 जे कही ते हाजर करू, लुण तमाह स्वाऊ.
 लुण हरामी जे करे, वळि विश्वासी घात;
 मित्रज्ञेह वळि जे करे, दासी जेनी मात.
 पाप पूर्खीमा ढे घणा, कहीये लाख करोड,
 नर्थी कोइ त्रिलोकमा, लुण हरामी जोड
 ते भाटे हु सचरू, ज्या कहो तहा सुजाण;
 जो कहो तो हाजर करू, मुज हाथे मुज प्राण.

चोपाइ.

शाक्षी शीद करोठो वात, जाओ तमो चडाळो साथ,
 वळती छोडीने हथियार, रणभा चाल्यो राजकुमार.

पांचे जण चाल्या जेटले, जइ प्रधान मळ्यो एटले;
निशा एक पहोर त्या गइ, कोश एक पहोसा ते जइ.
दोहरा.

कहे प्रधान पतीतने, लइ जाओठो वन;
राजकुचारिये जे कड्या, ते तमे शुणो घचन.
जो आ काम करो नहि, काम तमारु थाय;
कुवारिये कड्यु छे शुणो, उगारि लेजो राय.

चोपाई

एबु कहीने पाठो फर्यो, कुवरि पासे ते परवर्यो;
चतुरा वेठी चिंता करे, दुःख घणु दिलमा ते धरे.
एटले या आव्यो परधान, बोल्यावी दीधु घणु मान;
खोला उपर मैलु शिशा, प्रधान उगारी आदिशा.
मात तात मोशाक्कज तमो, तमो थकी उगरिये अमो.

दोहरा.

प्रधान कहे पझावती, वेगे वार न थाय;
सखिने धन दइ मोकलो, तेढी लाचवा जाय.
पसाय करीने पतीतनी, भदनी भावठ भागय,
हुं मदिर जाड माहरे, जन मोकल ते जागय.
काढी मेल तुज कथने, कोइ नगर मोशार;
राजा जाणे जीवितो, तो मारे ते ठार.

चोपाई.

एबु कहीने गयो प्रधान, तय कुवरीने आव्यु ज्ञान;
कहे कुवरि कोने तेडिये, रातसमे बनमा लेडिये.
एकाते दाशि तेडिया, गुणिका भणी पथे खेडिया,
चतुर गुणका चक्रान्ति, दाशि नझेने तेने मळि.
तमने तेढे पझावती, अजर कर्यानु कारण नयो;
पठ्ठि दडवड गुणका दडवडी, पझावतीने मोळे चडी.
ज्ञा कामे बाइ तेढी आज, मुज सरसु कही दीजे काज;
पझावती तब लगी पाग, ओलव आज अमारि आग.

आज संकट मारे अति घणु, तेथी काम पड़यु तम तणु;
राजकुंवर मे छानो वर्यो, तात अमारो क्रोधे भर्यो.
तेह तणु छेदावे शीशा, पतित पाठब्या आणे दीश;
वार नथी लागी एवडी, हमणा लइ गया आ घडी.
छाना गया न जाणे कोय, आवी प्रधाने प्रिलुव्यु सोय;
तेने जइ उगारो तमो, दीन थइ बोलुन्हु अमो.
रसे राय नगरथी जाय, तेढी लावो पोलो मांय.

दोहरा:

बळती चंद्रावळी वदे, शामा तु तज शोक;
जो नव लावु रायने, सुक्रित सर्वे फोक.
तेढी लावुं तुज कंथने, राखु मारे धेर;
खवर काढवा मोकले, दासीने शुभ पेर.
सांभळ तहणि तुं बळी, जो नव लावुं राय;
जो पतित तेने हणे, तुं हणजे मुज काय.
मनमां दुःख रखे धरो, छांडो उर उच्चाट;
जाणो महिपति मोलमां, नव करजो गेंगाट.

चोपाइ.

एवु कहिने गुणका नाय, वेगे जइ पोती बनमाय;
पतीत दीठा तेणे चार, आगळ उभो राजकुमार.
गुणका लां जइ उभी रही, पतीत आगळ वाणी कही;
रात समे अर्ही केम आविया, राजकुरने केम लाविया.
राजकुवरिने चढी छु रोड, तमो चात्नां छुदे शीश;
राजकुंवर केम यार्यो नाय, अद्वांगा जेनी ते धाय.
रात समो छु मूळी दियो, जे जोइये ते मुजधी लियो;
बळती बोल्या ते चंडाळ, अम शिर शाने शोछो आळ.
कुर्ती भोज बोल्यो जे राय, केम वन्दन ते मिथ्या जाय;
लावुं पाप अमने वे पेर, कोतो जावा दइये धेर.
राजा कोपे जो ते ठाम, लइये अमे तमाम नाम;
खारे गुणका ते तो हडी, वात एह मारे मन वडी.

कुवर देश विदेशे जशे, 'महिपति शि रीते जाणशे;
 एह वातनी शि चित्ताय, जेम तेम काम तभारु याय.
 सोनानी महारो सें चार, बैंची आपी तेणे ठार;
 पतीत तो हङडे हरसिया, हेमटका नयणे निरसिया.
 बळती बोल्या मधुर बचन, मृगमारि लेशु लोचन.

दोहरा.

दाम उगारे देहने, जो कोप्यो होय दैब;
 हु बलिहारी दामडा, समर्थ तुज सर्दब.

चोपाइ.

पतीत शिय मागी परवर्या, नगर भणी चारे सचर्या;
 जइ राजाने कह्या बचन, लाव्या तेहतणा लोचन.
 नृप कहे क्याइ न करशो वात, करजो तो तमने कहु घात,
 एह वात एठलेथी रही, पुष्पसेननी शी गत थइ.
 बनमा उगर्यो राजकुमार, तव गुणकाने कर्यो जुहार;
 अमो विचरशु देश विदेश, पुरमा तमे करोज प्रवेश.
 पद्मावतिने कहेजो जइ, लख्यु हतु ते वातज थइ.

टोहरा.

चद्रावली बळती बदे, शोक मदयनो टाल,
 मुज घेर आवो महिपतो, वाचा मारि पाल
 उनो वा वाशो नहि ले नहि कोइ नाम;
 धीत घरीने रायजी, चालो मरि धाम.
 सम परदेशी पसिया, बळी कोमळ तम हाड;
 आवो मदिर माहरे, मानु तमारो पाड.

चोपाइ.

पद्मावतीशु परठी होड, लाखु पति पोचाडु कोड;
 माटे मारो कोल न जाय, बीक तजी चालो धेर राय.
 एबु शुणि मुख बोल्यो वाण, सुण चद्रामलि चतुर सुजाण
 गारो तमे उगार्यो जीर, तमो अमो वचे छे शीव.

दोहरा।*

सम खाई वे चालिया, आब्या पुग्मोशार;
जळ हळ ज्योत झळकी रही, गुणका नेरे द्वार.
दासिदास तेने घणा, थइ रहो गगाट,
सुदर आसन त्रेसवा, हेम हीडेला खाट.
प्रवेश नहि त्या पुरुषनो, दीशो लीला विलास;
खाओ पीओ दीन निर्गमो, रहो अमारी पास.
शाक पाक घृत नवनवा, पान सोपारी तेल;
खाट तळाइ ओशिसा, थइ रही रग रेल
पद्मावती ए पाठवी, दासि जोवा एक,
पति आब्यो के आवश्ये, जुओ करी विवेक.
दासि म्याथी सचरी, ज्या गुणकानो वास;
राजा दीठो रीझमा, पोती मननी आश.
चद्रावळी बळती बदे, जुनती जलदी जाय;
महोपति छे मुज महोल्मा, बधामणी तु खाय.
दासि दोडती त्या गइ, सुणो गाइ कहु वात;
राजा आब्यो महोल्मा, मैं दीटो साक्षात.
मुकाहार हरे जड्यो, जळ हळ ज्योत अपार;
कठथी आप्यो काटिने, न्याल करी ते नार.
भावठ भागी दासिना, बहुविध दीयु मान;
महोच्छव कोधो मोल्मा, टइ जाचकने दान.
शणगार सोळे मोकल्पा, चद्रावळीने घेर;
तुज प्रतापथी उगर्यो, रारे रुडा पेर.
चरणा चोळो शोभता, नार कुजर चीर;
तुजथी अदकु काइ नहि, लावा नणदी बीर.

चोपाड़।

एम करता बीता बहु दन, मा यु रानकुवरनु मन,
चद्रावळीना भटिर माय, सभा इद्रना सररी थाय.
चद्रावळिये ठानि बीध, नाम ठाम पूर्णने लीध;
ए वात अहियाथी रही, पद्मावतीनो शि गत थइ.

पद्मावतीनी ज्यां छे मात, कुंती भोज त्यां जइ कहे वात;
शिखामण कुंवरिने दियो, समजावीने पासे लियो.
आज सुणी मे विपरित वात, ते राची मानी साक्षात्;
गोरे मंदिर तज्युं ते तणुं, प्रतिहारे पण जाण्युं घणुं.
त्रिजो जोइ आव्यो परधान, तेणे संभक्षाव्युं मुज कान;
चौथो हुं जोई आव्यो वट, काया निरसि पाभ्यो कट.
पांचमुं कह्युं परणवुं नहि, ते शुणी चिता सुजने थइ;
मैं मोटो कीधो उन्पात, राजकुवरनी बीधी घात.
अति अलौकिक एनुं रूप, एमाटे मैं मार्यो भूप;
सघङ्गुं राणी सांभळो रहो, पछि बोल्वा ततपर थइ.
मारि कुंवरे एवी न होय, जुड तमे बोलोछो सोय;
नथि मुज बेटीनो कांइ वांक, शामाटे मार्यो नररांक.
शरणे आव्यो राजकुमार, वण अपराधे मार्यो ठार;
कोई नगरथी आव्यो घेर, बडा साये बैधाशे वेर.
राय कहे मे सघङ्गु लह्युं, मानो साचु मार्दं कह्युं;
कुंवरिने मोले जइए आज, दो शिखामण तो रहे लाज.
एवुं वचन कही गयो राय, कुंवरिपासे माता जाय;
चांपी कुंवरि रुदयासाय, गुज करवाने बेठी मात.

दोहरा.

माता बोली मान दइ, कैवी खबर छे तूज;
मल्वा कारण आवी हुं, साचुं कहे तूं मुज.
पद्मावती थइ गळगळी, आंखे आंसुधाइ;
शामाटे हुं अपतरी, धिक धिक मुज अवतार.
मार्यो रुडो महिपती, बेठु मोठुं पाप;
मुज माटे हन्या करी, मूरख मारो वाप.
वळती बोलो म.वडी, संभळ पुत्री सुजाण;
करवा धायुं इश्वरे, निपञ्जे एज प्रमाण.
खाओं पीओ दिन निर्गमो, रनो संयरो साय;
शिखामण दइने बळी, मंदिर आवी मात.

चोपाद.

शिखामण दइने गइ माय, राणिने जइ पूछे राय;
 कही पुत्रिनु जोयु रूप, दिलगीर थइने पूछे भूप.
 राणी कहे रानाजा शुणो, भुड़ी वात मुरय शाने भणो;
 जेवी तेकी पण बेटी थाय, रुडे घेर परणावो राय.
 राय गयो साभळीने वात, तेडाव्या रावत से सात,
 कुवरिने मोले राचरो, रात दिवस आ चोकी करो.
 पुरुषनाम आवे कोइ वार, पण पठे हणजो ते ठार,
 शीख लइ रावत परवर्यो, कुवरिने मोले सचर्यो.
 रात दिवस आ रता करे, महोर फरती चोकी फरे;
 पठि राये तेढ्यो प्रतिहार, हवे चुकीश तो राइश मार.
 एक गुनो में वपस्यो रही, नीजो गुनो तो बखसु नहीं,
 कपट होय ते करजे जाण, निकर तारा खोइश प्राण.
 एकी साचवी रस्सो बाल्ड, माथे जेम न बेते गाल्ड,
 एम करता दिन शाशा गया, आठ मास गुणिका घेर रद्या.
 रुदयामा राणि सामरे, हारा विनोद हइयामा ठरे,
 राणीने नव भावे अन्न, राजकुनर शु मान्यु मन.

दोहरा.

एक समे सजोने सभा, कुता भोज जे राय;
 पडित चेठा पाचसे, जोशि जोश पुठाय
 क्यां आ कन्या दिजिये, जुओ प्रथ विचार,
 लेणु होयने रायर्या, ल्यां परणानु कुमार.

- पडित वाणि ओचर्या, एक करोने काम,
 मब्दता वशेक नोइये, ल्यो वरकन्या नाम.
 चपक देशर्यी ते समे, आवी गुणिका नार;
 भर जोरन वर्ष सोलमा, विचरी राजदार.
- शात गाधर्व साथे पछे, साहेली से सात,
 रूप स्वरूपे आगळी, सगीतमा खिल्पात.
 दोधु मान यहीपति, विष्मय थइ मनमाय;
 महिपति रीझो मन चिषे, चित्ररेख सी थाय.

खा प्रधान पडित मज्जा, राणा ने बळि राय;
 वाजा सर्वे साधिया, आनंद उर न समाय.
 वाजे बेणा वासल्ली, सारगी ने साज,
 ताळ काति ने तवुरो, जत्रो अने पखाज
 नगर लोक जोवा मज्जा, करे नायका नाच,
 ए अवसर शोभे सभा, सुरपति जैवी साच
 राजा जोइ रीझ्यो घणु, आप्यो भलो पसाय;
 आभूषण ने पालखी, सुर्प नेपुर पाय.
 सलाम करिने शिर धरी, रामा उभी रहेय,
 एक मास अहिया रहो, राजा मुखे कहेय.
 नारि नीचु जोइ रही, बळि धुणाव्यु शीश,
 ते देखी शाखो पळ्यो, चढी रायने रीश
 गुणिकाने राजा कहे, साभल चतुर सुजाण,
 साचु कहे मुज अगळे, तुजने मारे आण
 प्रेमदा कहे नव पूऱ्यो, दूऱ्ये यशे अनर्थ,
 दु स थाशे मन अति घणु, बळि कोपशो व्यर्थ.
 भूपति कहे शुण भामनी, तात तणो ए कोल,
 जे होय ते पखशु गुनो, सख होय ते गोल्य
 रामा कहे शुण रायजी, दु स लागो के सुख;
 चतुर न दीठो कोइने, माटे मरझु मुख.
 महिपति कहे शुण भाननी, जोया केटला देश,
 चतुर शिरेमणि सर्वथी, निरख्यो कियो नरेश
 राजा प्रथे ते पळि, बनिता बोलि बाण,
 चतुर शिरेमणि रायनु, साभल कहु बखाण
 सोरठ दीठो सामटो, मास ने मेवाड़,
 नरपति निरख्या अति घणा, जेना कोमळ द्वाड़.
 सागरतट चपावती, चपकसेन राजन,
 बनिश लक्षण आगळो, पुण्यसेन एक तन.
 रुप अनुपम एहनु, जाणे सकल विवेक,
 नर सधबा में निरखिया, आव्यो दृष्टे एक

राजा मन रीझो घणु, पोत्या मनना कोड;
 कुवरि आपु एहने, जुगते जुक्ति जोड.
 पद्मणी पुत्री माहरि, वत्रिश लक्षणो एह;
 परणावु जो प्रीतशु, दुधे बुठे मेह.

चोपाइ.

वे दिन ते या गुणिका रही, शिख मागीने मारग वही;
 राजाये तेढाव्या भाट, चपावतीनी ज्ञालो वाट.
 वेगे जाओ चपर भणी, कहेजो जे कुतलपुर धणी;
 तेने पुत्री पद्माचती, स्पष्ट अनुपम छे ते अती.
 विवा अर्थ मोकल्या पान, पुष्पसेनने देवु दान;
 काम सिद्ध करीन आरजो, साथे जान तेडी लावजो.
 ए रीते उचरेठे राय, चद्रावल्ली आवी वली थाय;
 कुंति भोजे जे जे कहु, ते चद्रावल्लीये झुणी लहु.
 ए रीते बोल्यो जे राय, चद्रावल्लीने हरख न माय;
 मैं राख्यो छे पुष्पक राय, सकल मनोरथ पुरा थाय.
 भाट वाट चाँके जेटके, चद्रावल्ली बोली तेटके.

दोहरा.

गुणका कहे झुण रायजी, कुति भोज सुजाण;
 पुष्पसेन अहिं पाठवु, शु देशो मुज लाण.
 दृत मोकलवा नव पडे, दिन ज्ञाज्ञा नव थाय;
 तेढावु हु पाधरो, शु देशो मुज राय.

चोपाइ.

राजा कहे साभल तु नार, मागो ते आपु आ ठार;
 तत्पर यइने जाओ तमो, जे केशो ते देशु अमो.
 चद्रावल्लि कदे ते वार, पुष्पकराय हतो आ ठार;
 राख्यो हतो तमे जे राय, ते तो पुष्पसेन कहेवाय.
 तात्पर्यचनथी ते यन गयो, नगर आपणे आवी रघो;
 हवणा कहीं गयो शे काज, ते तो तमे जाणो महाराज.

दोहरा.

राजा कहे प्रधानने, माठी उपनी मख;
 वण समजे में मारियो, राजकुवर भूष्य.
 कातो विप खाइ मरु, का करु आतमघात;
 जमाह हण्यो में झुगत शु, अघटित कीधी चात.
 बजीर कहे शीद दुख धरो, शिद आणो चिताप;
 यो वायक चद्रावळी, पेदा नरशे राप.
 गुणिका कहे मानु नहि, राजानो विभास,
 कोल दिजिये तातनो, तो लावु तम पास.
 राप ऐहि माने नहीं, जो सौंपी दे प्राण,
 सइ सोनी ने सर्वनो, पाने प्रीत अजाण.
 सिंह अही ने ठगधर, माने मित्र अजाण,
 जो तुठे तो गुण करे, रुठे तो ले प्राण

चोपाई

नरपति कहे साभळ तु नार, अप शिर एडो नव दे भार
 कोल मारो जो रीशज धर, जे मागे ते हाजर करु.

दोहरा.

गुणिका कहे नृप साभळो, वायक रुढी पेर,
 चपक केरो बेटडो, मैं राख्यो उे घेर.
 प्रधान प्रतापे उगर्यो, आयुष्य एनु होय;
 मोने राख्यो माहेरे, नेम न जाणे कोप
 शाल आपी सो लक्षनी, गुणकाने दइ मान;
 गयो कुवरने तेढवा, कुती भोज रानान.
 कर्मो प्रणाम प्रधानने, धन चतुराइ आज,
 मुज डिर हया उतरी, राखी मारी लाज
 एक विप ने वाणियो, वळी नदी नहि गाम;
 राना कहे शुग सुदरि, ते गोस्तारो ठाम
 ओछय कीधो अति घणो, मळिया राणा राप,
 प्रधान पाये चालीने, कुवर कने ते जाय.

नगरपडो वजडावियो, गडगडियो निशाण;
 राजा चाल्यो तेडना, जाचक करे वसाण.
 पुष्पसेन पासे जइ, पुरपति लाल्यो पाय;
 अम उपरे दया करो, कोधो छे अन्याय.
 उठी आलिंगन कर्यु, रथे बेशीने जाय;
 कहे शामळ शुं वर्णवु, अद्वृत ए शोभाय.
 महेल पधार्व मलपता, कुचरिने थयुं जाण;
 मनमां हरखी मननी, उग्यो कनकनो भाण.
 सुरत जोइ सुख उपन्यु, पदावर्तिनी माय;
 रसबस यह रही रंगमां, हइडे हरख न माय.
 कनक थाळ हारे जड्या, मुक्यां शुभ आसन;
 जोडे बेशी नुगत शु, कर्युं राय भोजन.
 लविंग सोपारि एलचो, बिडा मांहि वरास;
 अरोग्यां आनंद शुं, पोतां मननी आश. . .

चोपाइ.

बळती राजा बोल्यो वाण, शुणजो पुष्पक चतुर सुजाण;
 बाल्यापणमां बाल्ये वेश, निकर्त्या केम तमे परदेश.
 शामाटे तमे छांड्यो देश, मुजने मांडी कहो नरेश;
 बळतो बोल्यो पुष्पक राय, मांडीने बधी कही कथाय.
 चंपावती नगरिनो राय, चंपकसेन तात मुज थाय;
 सिंह केडे सेना परवरी, भारे ताते प्रतिज्ञा करी. .
 जे नहि आवे रणमोझार, तेने हुं तो भाँह ठार;
 सउ लोको संघाते यथा, कर्मसंजोग अमो रही गया.
 मुजने हणतो जाप्यो दोप, ताते बन काढ्यो करि रोप;
 तैयी अहियां आव्या अमो, पछि थयुं तै जाणो तमो.
 जामातानुं शुणि बचन, हख्यों कुंती भोज राजन;
 पंडित प्रधानने कहे राज, करो हवे विवानुं काज.

दोहरा.

पुत्रीने जइ कहे पिता, करिने अतिशो कोध;
 बण परणे दंपति यां, किधो धर्म विरोध.

पद्मावतिये गोरने, तेडि पुरावी साख;
 गोर कहे अयाय नथी, राजा रीस न राख
 जेम ओखानु नारदे, कर्यु सक्षेपे लम,
 विधिवत पछि वाणासुरे, कर्यु लम यइ मग्न
 में पण सक्षेपे क्रिया, करि परणावी एम,
 विधिवत हवे विवा करी, परणावो तमे तेम
 तहा लग्न लेवराविया, पोवा मनना कोड,
 कहे शाभल शु वर्णवु, जुगते जुक्कि जोड

चोपाद

राजाये करी नगर शोभाय, अण फेगवीने पुस्माय,
 अजगाळिया महोल माळिया, शणगारिया गोख जाळिया.
 घेर घेर गाये मगळ सह, राजाये धन खरच्यु वह,
 भाट चारणो मागणहार, व्राज्ञणनो नव लइये पार
 प्रधान सउ उत्तरे फरे, नगर वधु था भोजन करे.

दोहरा

पीठी चोळी पद्मणी, कनक कचोळा माय,
 कस्तूरि लेपन करी, सुगधा जब्यी नाय
 एक सुगध शारीरनो, भीनो पुष्पनो होय,
 भमरा गुनारव करे, देखिने मन भोय

चोपाद

पीठी चोळी राय शरीर, मजन कीधु निर्मळ नीर,
 वर राजा वरधोडे चड्या, दुदुभिये डका गडगड्या
 थागे ढोल निशाने घाय, सीना मनमा हरख न माय,
 गज तुरग तणी वहु लहर, ते उपर बेठा झुझार
 तोरण आब्यो पुष्प कुमार, सासुये पोख्यो ते थार

दोहरा

कर्यु मनोहर माहरु, चोरिना थभ चार,
 पधरावी त्या पद्मणी, वर्त्ये जे जे कार
 वाजा वागे अति घणा, गुणिजन था गुण गाप,
 परणेछे पद्मावती, जोडे पुष्पक राय

हाथ मेलाव्यो हेतशु, दीधु कन्यादान;
 हाथि घोडा आपिया, दइने मोटु मान.
 मगळ फेरा त्या फर्यां, आरोग्या कसार,
 मगळ गाये माननी, हरख्या स्त्री भर्यार.

प्रश्न.

पेलु मगळ वर्तता, वनिता बोलि वाण,
 राति वस्तु वसाणिये, तमो ढो चतुर सुजाण.

उत्तर.

राति पानी पगतणी, राता अधर प्रवाळ,
 रातो रग मजीठनो, शुक नासा पण लाल.

प्रश्न.

शाम नील ने पीत वळी, वस्तु श्वेत वस्वाण;
 कहो एठलु कथजी, जो ढो चतुर सुजाण.

उत्तर.

श्याम तो कीकी आख्यनी, शाम भमर शुभ भाग;
 शाम तो अजन आजीय, शाम तो वेणि नाग
 लिलि पहेरो कचुकी, नील कमळनु फुल,
 नीलु ककण चूढले, निलु त्राजु अमुल्य.
 पीळु सुर्ण शोभतु, पीळी केतर आड;
 पीळा पटकुळ येरिया, जोता मोह पमाड.
 श्वेत नेण छे शोभिता, श्वेत शशिसम मुख;
 श्वेत हार मोतितणां, जोता भागे भूख.

प्रश्न.

बाध्या तातणे सप्त नर, एवा नर मळी चार;
 एह बतावो रायजी, यइ तेनी एक नार.

उत्तर.

पुष्पक बोल्यो प्रीतयी, तमे जुओ आ ठाप;
 पुढोछो जे प्रेमयी, चोरी एनु नाप.
 सत्य कहोछो रायजी, हु हरखी मन आन,
 विघ्न नजो सद तमतणा, आवेचळ तपज्जो राज.

चार वेदनीं धुन थइ, आशिर्वचन भणाय;
 आज्ञा मागी गोरनी, उठचा वरकायाय.
 गोत्रज पासे आद्रीया, रमवा पासा सार;
 ल्या जीऱ्या पद्मावती, हार्यो राजकुमार.
 त्या कीतक विध विध करे, रायने हर्ष न माय;
 मीढल छेडा छोडीया, गुहने लाया पाय.
 मदीरभा रही माननी, गयो सभामा राय;
 कहे शामळ शु वर्णनु, राजकुवर कन्याय.
 उत्तम आसन उपरे, बेठो राजकुमार;
 वदिजन जश वर्णवे, हरख्या लोक अपार.

चोपाइ.

वर कायाना पोहोच्या कोड, जुगते जुगती मळीठे जोड;
 राजाराणी रगे रमे, करे विनोद जै मनमा गमे.
 वळी चसरानी साथे राय, मृगधा रमवा कारण जाप,
 एम करता दिन झाज्ञा गया, त्यारे राय चिंतातुर यया.
 साभरीया ल्या मा ने वाप, तनमा अतिशो उपज्यो ताप;
 पिता साभरे वारचार, अख आवे आसुधार.
 माता साभरे पुष्पावती, आण्यो शोरु हैडामा अती;
 सुलोचना सभारी मन, हेडु फाटे वरे रुदन
 जै परणी मुकी ते लार, तेह साभरे वास्तवार;
 घर मुकीने त्याथा वद्धा, वरस अगीआर पुरा यई गया.
 सुलोचनानु वचन साभर्यु, वार वरश वीत्या पछी मरू;
 जो मरशो तो हत्या याय, अवतार एनो एक्के जाय.
 एम कहि मुक्यो निश्वास, पद्मावती तव आवी पास;
 रामाये दीठु ल्या मुख, दीलगीर जोईने पामी दुख.
 पाय नमीने उभी रही, शामाटे चिंता चित थइ;
 राये वात वर्णयो कही, जेठली वाती आगळ रई.
 मुजने मोटी ते चिंताय, नार मरे तो हत्या याय,
 घण तेढ्यो अहींथी जो जाऊ, तरणा तुल्ये हल्को याऊ.

एवी वात करे जेटले, चंद्रावळी आधी तेटले;
 बळती गुणका बोनी वाण, ग्रीलो सान्हु चतुर सुजाण.
 शे कारणे तमे दुख धरो, मुज आगळ सान्हु ओचरो;
 आप वीती जे वार्ता थइ, गुणका आगळ माढी कही.
 गुणका कहे आ जाण अमो, चिंता मननी ठाळो तमो;
 राजा कहे जे जो जो गाम, अमारु ला जे ऐजो नाम.
 पुर्णी चरचा जो जो सोय, ला अमने सभारे कोय;
 झईने त्या चेतानो राय, चार हत्या शीर पर नव थाय.
 मात तात ने ग्रीजी नार, चोथो भारो जीव उगार;
 गुणका त्याधी वाटे थई, खट मासे चपक पुर गई.
 नगरपडो वाजे ते दीस, गुणकाए जे नाम्यु शीर;
 प्रधान बोल्यो गुणका साय, नाटकनी नव करशो गाथ.
 राजाने मन दुख छे घणु, माटे नृत न जुवे तमतण;
 त्यारे गुणका बोली वात, शु दुस छे राजाने भात.

दोहरा.

त्यारे प्रधान बोलीयो, साभळ तु गुणकाय;
 पुष्पसेन एक बेटडो, काळ्योठे बनमाय.
 वर्ष एकादश वहि गया, उपर थया खट मास;
 ते कुवर आन्यो नहि, माटे मन उदास.
 पुरु वर्ष थया पछी, नारी तजशो प्राण;
 वात चालशो विश्वमा, हस्तु ने वच्छी हाण.
 माताए अनजळ तत्यु, तात खागसे देह;
 जोता वाट न आवियो, लेम वर्पेयो मेह.
 गुणका कहे शीद दुस धरे, मुजने आपे लहाण;
 अहिं आणीने आपशु, चतुरा चतुर सुजाण.
 वारो एनी मातने, वारो एनी नार;
 मास छ पेहेला मोकलु, पुष्पक राजकुमार.
 नृपने आनद उपन्यो, कीधो वहु पसाय;
 पछी हु आपीश पालसो, जो मन चिंता जाप.

खबर सुणावा मोहोलमाँ, गुणकाने लई जाय;
 पुँछे राणी प्रीतथी, कहो कुंवर छे क्यांय.
 कुंतल पुर रळोआमणुं, कुंती भोज राजन;
 बेटी परण्यो तेहनी, पुष्पसेन तय तन.
 त्यां गुणकाने आपीया, मोतीकेरा हार;
 न्याल करी चंद्रावली, आप्या गज तोखार.
 दासी एवुं सांभळी, खांथी चाली जाय;
 सुलोचना जे पदमनी, पास वधामणी खाय.
 आदी कुशलता कंथनी, चिंता मननी मेल;
 सुणतां आनंद उपन्यो, थई रही रंग रेल.
 प्रेमे जैने पद्मनी, नमी सासुने पाय;
 यात कहो गुणका तणी, मुजने आनंद थाय.
 सुलोचनाए कंचबो, हीराजडीत अपार;
 आध्यो गुणकाने बळो, आध्या शुभ शणगार.
 गुणकासाथे मोकल्यो, गुणसागर परधान;
 तेडी बेहेला आवजो, एम बोल्यो राजान.
 केहेजो कुंति भोजने, अमे तणो नुहार;
 जेम तेम तेडी लावजो, बेलो राजकुमार.
 चळती प्रधान सांचर्यो, शत सहस्र लई दास;
 बे मासे पोत्या जई, कुंति भोजने वास.
 नगर समीपे आविया, गढगडीयां नीशान;
 राजा बेठो तो तहां, गुणकाए कपुं जाण.

चेयाद.

चंद्रावली गुणका गई तहां, कुंति भोज बेठोछे जहां;
 पासे बेठो पुष्पकराय, गुणका तहां वधामणी खाय.
 आध्यो चंपक तणो प्रधान, तेडी लावो दर्दने मान;
 प्रधान साथे पुष्पकराय, गुणसागरना सामो जाय.
 टोल ददामा वाजे बहु, आध्यो प्रधान हस्त्या सहु;
 पुष्पसेन मंत्रीने मब्बो, ताप तेहना तननो टच्यो.

सीने मळिया पुप्प नरेश, बळती पुरमां कर्पों प्रवेश;
 राजसभामां वेगे जाप, कुंती भोज त्यां उभो याप.
 मळी हळी आसन वेठाप, कुशल चार्ता पुछे राप;
 पछी सुंदर नीपजाव्या पाक, रसोइ रुडी सुंदर शाक.
 करी भोजन कीधो मुखवारा, कुंति भोजनी पोती आश.
 दोहरा.

गुणसागर कहे रापने, अमने करो विदाप;
 एक घडी रेशु नहि, क्षणु वर्प सम थाप.
 पुप्पसेन पद्मावती, मोकलो मारी साप;
 फरी फरी ना पुछशो, अमने बीजी गाप.
 ताते भोजन त्यामोपु, माए तजीपुं अल;
 दीन घोडे देखे नहि, तजशो नारी तन.
 बीजी वात केशो नहि, जे केशो ते जुठ;
 सासरवासो सज करो, राय आ घडी उठ.
 त्यामोपु ततकणे, तेड्या वणीक सोनार;
 "वस्त्र घराणां सज कर्या, केहेतां नवि पार.
 चीर खीरोदक दोरिया, मयियां मोधी भात;
 साढी जरकशीनी सही, जेनी उत्तम जात.
 त्रणसो रथ शणगारीया, सहस्र दासी दास;
 दश सहस्र दई अश्व ने, उंटो शत पंचाश.
 गज मोटा शणगारीआ, मट शरता यद्युराल;
 बखतर टोप धरी शारे, वेठा थीर निकंराळ.
 वहु पशाप दील शिशीने, आप्या तेणे ठार;
 कहे शामळ झुं वण्युं, केहेतां नावे पार.
 प्रातःकाले पद्मनी, मनि लागो पाप;
 माता आपो आगना, अमने करो विदाप.
 नैणेथी आंतु पड्यां, तुनविण रद्युं न जाप;
 सुर दुल केहेशो कोणने, ए मोटी चिताप.
 माने वाली वेठडी, सौधी होय विशेष;
 पुच्छीने जननी कहे, दुर न धरशो लेश.

शीतल मार्गी लह सर्वनी, लईने सघळो साज;
रथमा बेठी शीघ्र थई, सरिया सघळा काज.
पुष्पक हय उपर चड्यो, बाध्या कशी हथीभार;
ससराने शीर नामियु, सौने कयो जुहार.
चद्रावळी चरणे नमी, राये आपी लाण;
हस्ती आप्यी हेतथी, वळी आप्या केकाण.
नगर थकी ते निसर्या, सर्व वळावा जाय;
चरणे नमीओ रापने, मळ्या कईक राणाय.

चोपाइ.

प्रणाम करीने पाडा बळ्या, पुष्पसेन तो पे पळ्या;
दोह शब्द थाये अती घणा, मोटा लळकरमा नहि मणा.
एक देशाथी बीजे जाय, पडे नीशा खा वासो थाय;
कईक दीवस तो वाटे थया, अघोर बनमा वासो रह्या.
कर्या उतारा तेणे ठाम, सौ लाग्या पोताने काम;
रथथी खा राणी आखडी, अबनी उपर आवी पडी.
सखी सखव आवी विटाय, हाहाकार शुण्यो ते राय;
नव बोले नेत्रे नव जुवे, दुख पोकार करीने रुवे.
राजाजी देरामा गयो, जोर्द राणीने दुखीयो ययो;
एम दीवस ब्रण्य वाटे गया, राजा दिलमा दुखिया थया.
बनमा स्त्रीनी थाशे हाण, घेर सुलोचना तजशे प्राण;
एवु कही मनदामा बळे, खा जक्षणी ते सामी मळे.
कुवरे तेणीने कही गुज, कोल दीधोछे मारे मुज;
आ दुखथी बीजु शु लहु, खीनु दुख जाये नहि कळु.
नव खाये नव पीये नीर, ते दुख साले मुज शरीर;
जक्षणिये उपायज कयो, रोग राणीना तननो हयो.
नण दीवसे भोजन त्या कर्मु, भूपतिनु मन हरखे भर्मु;
बळती द्यायी थया विदाय. चपकुपुरनो वाटे जाय.
नगरलोक सौ करे उचाट, पुष्पसेननी देसे वाट;
वर्ष थवाना पुरा बार, सेमा छे ओडा दिन चार.

दोहरा.

नेनकमळनी दीकुरी, मुलोचना जे नार;
 वेगे चाली सासरे, सीने कर्यो जुहार.
 ससरा आपो आगना, पाहु मुज शरीर;
 वरस बार बीती गया, नाढ्यो नणदो बीर.
 सासुने साचु कब्यु, पाहु मारो देह;
 बाट जोई नव आवीयो, सासु जायो जेह.
 कोल दीधो तो करविषे, ते मिथ्या थई चात;
 तन न तनु जो माहस, लाने मारो तात.
 एनु मन नव लावीए, कहे सासु ते चार;
 चार वरसमा तो हज्री, छे ओडा दीन चार.
 घडी एकमा शु निपजे, साद्य करे भगवान;
 वहुने चारी राखिया, कथन शुणावी कान.

चोपाइ.

समजावीने राखो नार, गया पठो दुखना दीन चार;
 यीजे दीवस पडी न्या रात, पुष्पक आव्यो रेना साथ.
 नगर विषे आवीने अडे, नीशान वागे ने गडगडे;
 वधामणी त्या दश दिश जाय, वधामणि वधामणिया राय
 चपक नृप बेठो जे ठार, आवी भाट बोल्यो ते चार;
 राजकुवर आव्या पुर चार, सुणता हरख्यो राय अपार.

दोहरा.

आसनयो नृप उठियो, हरख न हइये माय;
 पडो वजडाच्यो पुरविषे, राना सामो जाय.
 आगळ मा पुष्पवती, साहेगी सें चार;
 पाठळभी सुलोचना, विचरी तेणी चार.
 ते पाठळ एष्यीपती, सेना अपरम पार;
 ते पाठळ वेषारियो, ससरो जे निरधार.
 सउ आगळभी परवन्यो, गुणसागरनो तन;
 ते जइ पुष्पकने मच्यो, मान्यु बेनु मन.

मात पिता जइने मळ्या, पुत्र पणमियो पाय;
 वचन हतु मुज तातनु, पाब्यु तमो पसाय.
 स्त्रीने भळिया सानमा, पोती मननी आश;
 सासुने चेळो थयो, हख्यां दासि दास.
 ससरा केरा हायमा, सुवर्णकेरी याळ;
 सोना पुण्य वधाविया, उरमां आणी वहाळ.
 वाय भीडीने भेटिया, नर सउ आणि नेह;
 शीतळ मन सउना थया, अमृत मुठ्या भेद.
 सुदर महेल सुलोचनांगो, जोता पोत्या कोड;
 पद्मावती उतारियां, सुलोचनानी जोड.
 सासुने पाये नमी, पद्मावती तजी गर्व;
 चहुवर पुत्र घणा हजो, सुखमा रहेजो सर्व.
 पद्मावतीना महेलमा, सुलोचना पछि जाय;
 आदर कीधो अति घणो, आप्या ग्रहु पसाय.
 पद्मावती पठी वोलिया, साभळ वेन सुजाण;
 वातो करो विनोदनी, वोलि अमृत वाण.
 मारो तात वेकारियो, तमो तणो राजन;
 तमने ओचरवु घटे, वोलो पथग वचन.

प्रश्न.

एक नारि आ विश्वमा, पाडे सउने नास;
 आठ मास छानि रहे, माले चारे मास.

उत्तर.

सहियर मारि सुलक्षणी, तने हजो कल्प्याण;
 पद्मावती कहे पुष्टियु, ठाठ तैह तु जाण.

प्रश्न.

एक नारि ससरामा, राय रक घेर जाय;
 जे उपर करुणा करे, मृतकतुल्य ते थाय.

उत्तर.

सुलोचना कहे धन्य तु, कोइना तुज तोळ;
 निरा तैनु नाम छे, बोली तुं जे बोल.

प्रश्न.

नारि एक नव संडमा, लागे सउने अंग;
सत्रक्लाने निर्वल करे, करे रंगनो भग.

उत्तर.

सुलोचना कहे सत कहुं, दिले न धरशो दुर
शामा जे समशा कही, भूढी ते तो भूख.

चोपाइ.

*भाहोमांही वातो करे, चतुराइ शु मनहु हरे;
मारासम निये आवजो, काम काज रुहु कहावजो.
पद्मा कहे प्रथमधी वयाँ, माटे मुजधी मोटाँ ठयाँ;
क्षिख मागीने थयाँ निदाय, महा हरखथी महोले जाय-
नारि वे रहे पियुनी पास, कपट नहि मनमांही उल्लास;
रोज गळी वे बेनो रमे, भेली वेशी भोजन जमे.
साथे वेशी तात ने तन, प्रीते शु किधुँ भोजन; '
पान सोपारि चर्वण कयाँ, आप आप मोले परवर्या.

दोहरा.

शामल भट कहे वर्णब्यु, पुष्परुनु आख्यान;
भणे गणे ने सांभळे, रूपा करे भगवान.
सत्यवादि सत्तियो तणो, गाय शुणे महिमाय;
विजोग भागे तेहनो, आशा पूरण थाय.
खोड न देशो मुजने, सर्व कविनो रांक;
जाण अजाणे मैं कह्यु, क्षमा करो मुज वांक.
प्रचंड बुद्धि चातुरी, साहसिक सुख धाम;
रामशा चोपाइ दोहरा, किध परमारथ काम.
सवत सतर चुंबोतरे, मादशुङ्ग पक्ष सार;
कही कथा दिन पांचमे, मळतो मंगल चार.

कठण शब्दोनो कोश.

—०८४३०—

अ.

अग, पु० पर्वत
अगम्य, वि० जाणी शकाय नहि ते.
अगोचर, वि० अजाण्यु. (अ+नहि
‘ गो=द्वियो. चर=ज़रु=द्वियो
जह शके नहि तेजु.)
अघ, न० पाप.
अजा, खी० नकरी. २ भाषा.
अटन-ण, न० रखदबु, फरबु.
अटारी, खी० हवेलीनो सौथी उपलो
माक. २ झरखो.
अष्टहास्य, न० खडखडने हसबु.
अंतक, पु० काळ; मोत.
अंतरपट, पु० पडदो.
अंतधीन, न० अदृश्य थनु.
अंत्यन, पु० ढेड, भर्गा बगेरे.
अनमी, वि० कोइने नमे नहि ते.
अनलूप्ति, खी० वरसाद न थापते.
अनिल, पु० पवन
अनुचर पु० चाकर.
अनुचरी, खी० दासी.
अनुपम, वि० उपमा आणी शकाय
नोह जेबु.
अनुराग, पु० ग्रीति.
अनोपम, वि० अनुपम.
अन्य, अ० दीजु.

अपरिमित, वि० अपरमित, जेनु
गाप थइ शके नटि ते
अपवाद, पु० हरकत २ वाध.
३ तोमत.
अचला, खी० खी.
अंचार, पु० अयो, ढगलो.
अभीत, वि० दीये नहि ते
अभिधान, न० नाम
अभिराय, वि० मनोहर.
अभिषेक, पु० छटकाव, राजगादी.
ए बेसी बखते मत्र भणने पा
णी छाटेछे ते.
अमित, वि० अपार.
अयुत, वि० दश हजार.
अर्णव, पु० समुद्र.
अरण्य, न० अगल.
आरि, पु० शान्त.
आरण, पु० सूर्य २ वि० रातु.
३ सूर्यनो सारथि.
आर्क, पु० सूर्य. २ आकडो.
आर्चन, न० पूजन
अर्धांगना, खी० परणत खी.
अर्धांगा, खी. अर्धांगना.
अलंकार, पु० शणगार.
अलंकृत, वि० शणगोरु.
अलखत, वि० अणधारेलु (अलक्षित.)

अलछ, स्त्री० फुवडखी, अलक्ष्मी.
 अलोकिक, वि० दुनियामा न होय
 तेवू, अलोकिक
 अवनि, स्त्री० पृथ्वी.
 अवर, अ० जुदु. २ बीजु.
 अवलोकवुं, क्रि० जोवु.
 अवसान, पु० अत, छेवट
 अश्य, पु० घोडो.
 अख्त, न० फेकवानु हथियार.
 अहि, पु० सर्प
 अक्षत, पु० डागर, चोखा बगेरेना
 आङ्गा दाणा.
 अक्षोहिणि, स्त्री० २१,८७० रथ.
 २१,८७०हाथी. ६५,६१० घोडा.
 १,०९,६५० पायदळ एटली
 फोज.
 अज्ञ, वि० अज्ञानी.
 आक्रंद, न० रुदन.
 आखेट, पु० शीकार.
 आख्यान, न० कथा.
 आगलु, वि० वधारे.
 आतप, पु० तडको.
 आदर्श, न० दर्पण.
 आभरण, न० घेरेशु.
 आयुध, न० हथियार लडाइनु.
 आरक्ष, वि० रातु.
 आरत, स्त्री. आतुर.
 आरठ, वि० स्वार.
 आलिगन, न० भेटीने मळवु.

आवसत, (आवसथ) पु० एक
 अभिनो कुड राखेछे ते.

आवास, पु० घर.

आहालाद, पु० आनद.

ईशा, पु० धर्णी. २ महादेव.

उ.

उचलवुं, क्रि० वरनु परणवा सीधा
 बु.

उजावुं, क्रि० दोडवु.

उत्तरक्रिया, स्त्री० पछीनी क्रिया.

उत्संग, पु० खोलो, पलाठी.

उदर, न० पेट.

उन्मनी, स्त्री० पाचमी अवस्था.
 १ जागृत, २ स्वम, ३ सुपुसि,
 ४ तुरिया, ५ उन्मनी (न्रघस्त्रप
 थबु ते.)

उपकंठ, पु० कीनारो.

उपचार, पु० टापटीप.

उपरति, स्त्री० वैराग.

उपवन, न० बगीचो.

उपवीत, न० जनोइ.

उर, न० छाती.

उर्वी, स्त्री० पृथ्वी.

उवेषद्वुं, क्रि० अवगणना करवी.

एकावळ, पु० एक सेरनो हार.

ओरियो, पु० लाबो.

ओवारणां, न० दुखदाँ लेवा.

ओसाण, न० भान, स्मृति.

ओसार, पु० मारग.

ओळग, खी० चाकरी करवा आ
यो फेरो खावो ते.

क.

कंकर, पु० काकरो
कंचन, न० सोनु.
कंडल, न० कमल.
कंटक, पु० काटो.
कटक, न० लघुकर.
कटाक्ष, पु० वाकी नजर.
कडबुं, वि० भेळशेळ थबेलु, क
 नितामां राग भेळशेळ थया होय
 तेने कडबुं कहेछे.
कतार, खी० पगन.
कंदर्प, पु० कामदेव.
कंटुक, पु० दडो.
कनक, न० सोनु.
कनिट, वि० नानु
कपि, पु० वानर.
कयोळ, पु० लमणो.
कमङ्डळ, न० बोगीनु बळपात्र.
करतुत, न० कर्तव्य, करेलु काम.
करण्य, न० अनाजना छोड.
कर्द्यम, पु० कादव.
कर्मज्ञो, पु० कलबो.
करूप, पु० ब्रह्मानो १ दहाडो, वस्तिनी
 उत्पत्तिथी ते नाशपर्यंतनो काढ,
 जमानो.
कवण, अ० कोण (को जन).
काम, पु० कामना, इच्छा. २ काम
 देव. ३ कार्य.

कामेनी, खी० खी० (कामिनी)
काय—या, खी० शरीर.
किंकर, पु० चाकर.
किन्नर, पु० एक जातना देव.
किशोर, पु० बालक. २ पदर वर्ष-
 सुधीनी उमरनु माणस.
कीर, पु० पोपट.
कीशा, पु० वानर.
कुंजर, पु० हाथी.
कुरंग, पु० हरण.
कुलिन, वि० कुलबान.
कुवासन, न० डाखनी सादडी.
कुसुम, न० फूल.
कुञ्जाचार, पु० कुञ्जनी चाल.
कुर, पु० भात.
लाति, खी० कार्य, करेलु काम
लघ, वि० दुबलु, पातलु.
लघिक, पु० खेडूत
केकाण, पु० घोडो.
केनु, पु० धजा, बुडो.
केश, पु० वाळ.
कोकिला, खी० कोयलपदी.
कोकिल, पु० कोयकी २ कोयलनो
 नर.
कोटी, वि० क्रोड.
कोठार, पु० भडार. २ कोवाडो,
 कोटागार.
कोदैङ, न० धनुष.
कौरव, पु० कुरुक्षेत्रा राजा, दु-
 योधन वगेरे.

ऋगी, पु० कीड़।

रव.

खग, पु० पक्षी।

खट, वि० छनी सख्या।

खडग न० तरवार।

खडधान्य, न० सामो, मणचो बेगेरे
हलकुं धान्य।

खलक, खी० दुनिया।

खांडेरु, न० उटनु टोलु।

खांपण, न० कलक।

खीरोदरु, न० दूध ने पाणीना फीण
बेवा रगनी साडी।

खुंप, पु० फूलनी टोपी लांवा लट
कतो सरा बाढी।

खेडवुं, क्रि० चलाववु।

खोडवुं, क्रि० खोब्बवु।

ग.

गज, पु० हाथी।

गंजन—त, न० गाजवु। २ वि० हरा
वनार।

गणक, पु० जोशी।

गद्गद, वि० गद्गलु।

गय, पु० हाथी। (गज)

गरक, वि० रसवस

गरुभो, वि० मोटो।

गादुं, वि० जाहु, मजुत। (गाढ़)

गात, न० गात्र; शरीरना अवयव।

गामीतर, वि० वीजागामना लोको।

गारवो, पु० गर्ब।

गिरि पु० पर्वत।

गुंजारव, पु० भमरानो आवाज।

गुड़, खी० गुप्त, छानु-

गोगाट, पु० हरखमा, शोकमाँ, के
गधमा रसवसपण।

गेद, पु० दडो।

गेह, न० घर।

गौर, वि० गोरु।

घ.

घट, पु० घडो। २ शरीर

घटिका, खी० घडी।

घरुणी, खी० खी।

घाट, पु० काठो

घृत, न० धी।

च.

चख, खी० आख।

चंचु, खी० चांच।

चंत, न० चित्त।

चतुरंग, वि० चारपकारनी फोज।

चतुरा, खी० चतुर खी

चक्कु, खी० आंख।

चर्वण, न० चाचणु, अथवा चाववु।

चाप, न० धनुष।

चातक, पु० बपैयो।

चाह, वि० सुदर।

चिरंजीवी, वि० घणो काळ जविनार।

चिह्न, न० निशानी।

चूडामणि, पु० माथानो मणि।

चेटक, न० भूतनो बछगाड़।

छ.

छलवुं, क्रि० ठगवुं.

ज.

जंगम, वि० हालतु चालतु. एक
जातना जोगी.

जत—तु, पु० झीणो माणी.

जदा, अ० ज्यारे. (यदा)

जननी, स्त्री० मा.

जरा, स्त्री० घडपण.

जशुं, वि० जेनु.

जळधर, पु० वरसाद.

जागृति, स्त्री० जागवु.

जानहवी, स्त्री० गगानदी.

जापक, वि० जपकरनार.

जापी, वि० जपकरनार.

जामात, पु० जमाइ.

जामात्र, पु० जमाइ.

जावुं, क्रि० जवु. २ जनमवु.

झीवाजोनी, स्त्री० हरेक माणी
नी जात.

झुगल, न० जोडु, युगल.

झुवती, स्त्री० जुवान स्त्री.

झुटुं, वि० एनु.

झूथ, न० जथो, यूथ.

झेठीमल, पु० मल.

झैयल्हो, वि० जेने जश बालो होय
ते. (जे जश. बलो बालो)

झोख, पु० शोख.

झोगबवुं, क्रि० जोग करबो, मेलबवु.

झ.

झमर, पु० घणा माणसो एक ची-
तामा बचे ते चीता.

झुझार, पु० लडबहयो.

ट.

टेटुं, वि० बाकु.

टाणियो, पु० राखत.

त.

तक, स्त्री० छाश.

तजगारवुं, क्रि० गणकारयु.

तडित, स्त्री० बीजढी.

ततखेव, अ० नेज बखन, ततकाळ.

तनपर, अ० तैयार.

तदा, अ० त्योर.

तदाकार, वि० तद्रूप.

तदूत, वि० तेनाजेतु.

तन, न० शरीर. ३ दीकरो.

तनया, स्त्री० दीकरी.

तनु, न० शरीर.

तनुज, पु० दीकरो.

तरंग, पु० पवन, पाणी, आनदनो
मोजो.

तरण्णु न० तृण, पास.

तरणी, पु० सूर्य.

तरतीब, स्त्री० युक्ति, तदबीर.

तरु, पु० झाड.

तरुण, पु० जुवान.

तरुणी, स्त्री० जुवान स्त्री.

तरुवर, पु० मोडु झाड.

तव, वि० त्यारे. २ तारं.
 तशुं, वि० तेवु.
 तात, पु० वाप.
 तातुं, वि० उनुं. (तप)
 ताहणी, खी० तहणी.
 तास, स० तेने—नुं.
 तीर, खी० काठो, तेड.
 तितिक्षा, खी० सहनशक्ति.
 तुंड, न० मो
 तुरंग, पु० घोडो.
 तुरंगम पु० घोडो
 तुरी, पु० घोडो. २ तुरइवाजु.
 तृष्णा, खी० चोथी अवस्था, मूर्छा
 अवस्था.

तूळ, न० फोतरा. २ आकडानी फल.
 तृण, न० घास.
 तृष्णा, खी० तरय.
 तोखार, पु० घोडो.
 तोरी, पु० घोडो.
 त्याज, पु० त्याग.
 चाँदुं, न० छुदण.
 त्रिपुरारी, पु० शिव.
 त्रिया, खी० खी.
 त्यंवक, पु० महादेव अथवा ते-
 मनु धनुप.

द.

ददामा, खी० नोवत.
 दनुज, पु० देत्य.
 दंपती, पु० खीपुरुषनुं जोडुं.

दम, पु० बाहारनी इश्वियोने रोकवी-
 दमडो, पु० पइसो.
 दसोदी, पु० दशमो भाग लेनार.
 दब्ल, न० फोज.
 दक्षणावंत, पु० जमणीतरफ बढ़े
 लो शख उत्तम गणाय हे. (दक्षि-
 णावर्त्त)
 दानवी, खी० दानवनी खी.
 दाम, पु० पदसो.
 दामणुं, न० दुबल्दु. (दयामणु.)
 दारा, खी० खी.
 दावानल, पु० बननी आग.
 दाहकिया, खी० मठदु झाङ्कानी
 क्रिया.
 दिगपाल, पु० दिशानो पालणार देव.
 दिन, पु० दिवस.
 दिनकर, पु० सूर्य.
 दिस, पु० दिवस.
 दीन, वि० गरीब.
 दीर्घ, वि० लानु.
 दुंदुभि, न० मोटी नोडन.
 दूत, पु० चाकर, जासुद.
 दैव, पु० नसीब.
 दोटाववुं, क्रि० दोडाववुं.
 दोय, वि० बे.
 दूत, न० जुगडु.
 दिन, पु० ब्राह्मण.

ध.

धंध, पु० लडाद-

धनु, न० धनुप.
 धनुष, न० कामर्दु.
 धरणी, स्त्री० पृथ्वी.
 धारक, वि० धारनार.
 धुरंधर, पु० आगेवान.
 धृती, स्त्री० धीरज
 धेनु, स्त्री० गाय
 धोरी, पु० बब्ध
 धड़ा, स्त्री० धजा
 ध्वंस, पु० नाश

न.

नगरं, वि० गुरुवगरनु.
 नंदन, पु० दीकरो
 नंदी, पु० पोडियो
 नभ, न० आकाश.
 नमेन्द, वि० निर्दय.
 नरदेव, पु० राजा.
 नरतक, पु० नाचनार.
 नवाण, न० पाणीनी वधावेली
 (निपान) बगा

नष्टचर्चा, स्त्री० छानी वतिमी.
 नाइ, पु० हजाम
 नाद, पु० शब्द
 नाशन वि० नाशकरनार.
 नासा, स्त्री० नाक.
 निकट, अ० पासे.
 निडा, अ० पोवानु
 निदान, न० परिणाम.
 निधान, पु० भंडार.

निधि, पु० घडार २ समुद्र.
 निमंत्रण, न० नोत्रह.
 निरीक्षण, न० तपाग्निने जोत्रु.
 निर्गमयुं, क्रि० जवु, काळगुजारवो.
 निर्वाण, अ० निश्वळ.
 निवर्त्तनुं, क्रि० नीरात कर्मने
 वेसत्रु
 निशा, स्त्री० रात्री
 निशाचर, पु० रात्रस.
 निशान, न० बाबटागाढी भोवत.
 निशिचर, पु० रात्रस.
 नेत्री, पु० नानो बानयो
 नेट, अ० छेबट
 नेपुर, न० झाँझर
 नेह, पु० स्नेह.
 नैषध, पु० सस्कृत कान्यनो एक
 ग्रथछे
 न्यून, अ० ओछु

प.

पंकज, न० कमल.
 पटंतर, पु० पटदो
 पढो, पु० (पठह) मोगो ढोल.
 पण, न० प्रतिज्ञा
 पताका, स्त्री० शेड बगरनी धजा.
 पतित, वि० पडेलु, भट थयेलु.
 पत्तन, न० शोहेर.
 पत्त्य, स्त्री० पतियार, विश्वास.
 पद, पु० पण २ पदबी.
 पदाति, पु० पणपाढो.

पय, न० दूध.
परवरचुं, क्रि० जबु.
परस्वेद, पु० परशेवो (प्रस्वेद.)
परिणाम, पु० छेबट जे फल थाय ते.
परिताप, पु० चिंता.
परिमल, पु० सुगंध.
परिव्रक्ष, पु० परमेश्वर.
परियो, पु० ऐटी, वशनो प्रत्येक
पुरुष.
पल्लव, न० पादहु. २ पालव.
पसाय, पु० मसाद; बक्षीस.
पल्लचुं, क्रि० जबु. २ पक्षिया आव
वा. २ सचबाबु.
पांकचु, क्रि० कलबु.
पाखे, अ० विना.
पाग, पु० पग. २ पाघडी.
पाटी, ख्ती० घोडानी दोड.
पाठवचुं, क्रि० मोकलबु.
पान, न० पीनु.
पाय, पु० पग.
पारथ, पु० अरजुन (पार्थ)
पारधी, पु० शीकारी.
पालव, पु० छेडो. २ वरफ.
पावक, पु० अमि.
पावन, पु० पवित्र.
पाश, पु० जाळ. २ फासो.
पिन्डर, न० पाजर.
पिट, पु० लोट.
पीत, वि० पीळु.
पुनित, वि० पवित्र.

पुरुषार्थ, पु० पराक्रम, मर्दामी.
पृष्ठ, न० वासो.
पेर, ख्ती० रीत.
पोदुं, वि० मोटु (मीठ)
प्रचंड, वि० मोटु. २ भयकर.
प्रतिविव, न० दर्पण, पाणी बीगरे
मा छाया (आकार) देखाय ते.
प्रतिवोध, पु० सामामाणसने सम-
जाबु ते.
प्रतिहार, पु० दरवान.
प्रमदा, ख्ती० ख्ती.
प्रमाद, पु० आळस.
प्रवीण, वि० डाहु.
प्रवेशचुं, क्रि० पेसबु.
प्रसवबु, क्रि० जणबु.
प्रहार, पु० मार.
प्राशन, न० चाटबु, खाबु.
प्रीछचुं, क्रि० जाणबु.
व.
वंदन, न० तोरण.
वंदीलन, पु० भाट; चारण.
वंधु, पु० भाइ.
वतुल, पु० बाबळ.
वहिर्मुख, पु० बिमुख, मड़बीब-
हार थथेलो.
वाज, पु० घोडो; वाजी. २ शीचा
जो पक्षी
वाधु, वि० बधु.
वाहु, पु० बाबडु
बुडी, ख्ती० बरछी.

बुंदवुं, क्रि० जाणवुं. २ ओलावुं.
भ.

भंगी, पु० भागपीनार.
भजवुं, क्रि० शोभवुं.
भड, वि० बहादुर. (भट)
भडवुं, क्रि० लडवुं.
भर्ता, पु० स्वामी.
भवन, न० घर.
मालवुं, क्रि० बोलवुं.
भान-ण, पु० सूर्य.
भामणां, ना० ओवारणा.
भामनी, खी० खी.
भानु, न० रीछनी एक जात हेच
भिन्न, वि० जुदुं.
भुज-जा, पु० खी० हाथ.
भू, खी० पृथ्वी.
भूकुटी, खी० आँख उपरनी भमर.
भोरिंग, पु० सर्प.
भ्रात, पु० भाइ.

म.

मंगलाक्षत, पु० मंगलिक अक्षत.
मंगलाएक, न० मंगलिक आठ
शोक विवाहगाँ भणेछे ते.
मछराळ, वि० अदेखो.
मञ्जन, न० मञ्जिरुं, उटकवुं. २ मञ्जधा-
नी वस्तु पीढी वगेरे.
मंडन, न० परांणु.
मणा, खी० खामी.
मदिरा, खी० दार्हणीवानो.

मद्यप, पु० दार्हणीनार.
मधुकर, पु० भमरो.
मधुपर्क, पु० एकमकारनी पूबा.
मम, स० मारू.
मराज, पु० हंस.
मर्कट, पु० मांकडुं.
मही, खी० पृथ्वी.
महीप, पु० राजा.
मंहिला, खी० खी.
महिप, पु० पाडो.
मांजारी, खी० विलाडी.
मांझार, पु० विलाडो.
माणवुं, क्रि० भोगवर्तु.
मातंग, पु० हाथी.
मातुल, पु० मामो.
माननी, खी० खी.
माम, खी० ममता.
मीडक, पु० देढको.
मुक्ता, खी० मुक्ताफळना अर्थमां
वपरायछे. (मोती.)
मुङ्ड, न० मायुं.
मुमुक्षुता, खी० मोक्षपामवानीइच्छा.
मूर्त, न० वे घडीनो काळ.
मृग, पु० हरणियुं.
मृगमद, पु० कस्तुरी.
मृगया, खी० शीकार.
मृतक, न० मडडुं.
मृत्तिका, खी० माटी.
मेदनी, खी० पृथ्वी.
मेर, पु० मेरपर्बत.

मेरी, वि० दयालु २ स्त्री० स्त्री मो
कम, वि० जोरावर, कठण (मक्कम)
मोझार, प्र० मांही.
मोडबुं, क्रि० मरडबुं.
मोद, पु० आमद, मुद-
य.

यज्ञोपवीत, न० ज्ञोद.
यौवन, न० जुवानी
र.

रक्त, वि० रातु २ रगायेलु.
रक्तक, न० अन. २ धोडी.
रजनी, स्त्री० राति.
रटियालुं, वि० होशीलु
रण, पु० सग्राम २ करज. ३ बगल.
रणियो, पु० करजदार.
रंभा, स्त्री० अप्सरा.
रक्षिम, पु० किरण
रळी, स्त्री० मुर्दी.
रस, न० रीछ.
राका, स्त्री० पूनमनी रात
राखणहार, पु० राखनार
राजन, पु० राजा.
राजवी, पु० राजवशी.
राजान, पु० राजाओ.
राजेंद्र, पु० मोटो राजा.
राठ, स्त्री० लडाइ.
रामा, स्त्री० स्त्री.
रात्रादी, स्त्री० गधो.
रात्ति, स्त्री० इच्छा, मरडी.

रुडबुं, क्रि० रीसातु.
रुटमाल, स्त्री० माणसना माथानी
माळा.
रुपक, न० कवितानो एक अल्कार
ठे जेमके पुरुषनु वर्णन सिंहरूपे
करबु इत्यादि.
रोमाचित, वि० हररथी रवाडा
उभाँ थवा
रौरौ, अ० भयकर-

ल.

लघु, वि० नानु. २ टकु.
लछ, स्त्री० लक्ष्मी.
ललना, स्त्री० स्त्री
ललित, वि० सुदर
लग्न, न० मीठु, लूण.
लोचन, न० आस.
लोह, न० लोटु

व.

वण, न० कपास. २ अ० विना
वत्स, पु० वालो २ वाछडु.
वदन, न० मुख.
वधु, स्त्री० वहु.
वनकुल, न० झाडनी छालनु लूगडु.
वपु, न० शरीर.
वय, न० अपरथा.
वर, वि० शेठ, सुदर. २ वरदान.

चार्तंक, पु० गोरजी, जती.
 चशियर, पु० सर्प. (विषधर)
 चटि, स्त्री० पचात
 चसन, न० चख.
 चह्नि, पु० अभि.
 चाक, स्त्री० वाणी
 चाडव, पु० ब्राह्मण.
 चाण-णी, स्त्री० वाणी.
 चात्सल्य, न० वहालपण
 चाथवुं, क्रि० वधवु.
 चामणुं, वि० हीगणु.
 चामवुं, क्रि० काढी नाखवु
 चायक, न० वाक्य, वेण.
 चायस, पु० कागडो.
 चार, स्त्री० सहायता.
 चार-रि, न० पाणी.
 चारांगना, स्त्री० वेश्या
 चाहन, न० घोडो, गाडी चेगेरे चेस-
 वानु
 चिचरवुं, क्रि० जर्वु.
 चिचक्षण, वि० डाह्यु.
 चितान, पु० चदरबो.
 चित्त, न० नाणु, दैवत.
 चिधि, पु० ब्रह्मा.
 चिधु, पु० चद.
 चिनता, स्त्री० ली.
 चिनीति, वि० नम्रतावाळो.
 चिनोद, पु० आनंद, गमत.
 चिपरित, न० उल्लु.

चिमांसवुं, क्रि० पस्तावु, विचारवु.
 (विमासण.)
 चिरला, वि० थोडा
 चिलास पु० मोज, मजा
 चिशारद, पु० पडित.
 चिहंगम, पु० पक्षी
 च्रक, पु० चरु.
 चृत्ति, स्त्री० मननो विचार. २ आजी
 विका
 चृपभ, पु० वाड्डो
 चृपभास्तृ, पु० महादेव. २ चब्दधडपर
 वेसनार.
 चृपा, स्त्री० वरसाद.
 चैडाग, पु० घोडो.
 चैद, अ० नकी
 चैश्य, पु० वाणियो २ चैपारी, कारी
 गर, खेद्दू.
 च्यंग, न० भूत
 च्यंडक, पु० नपुसक.
 च्यतर, न० एक जातनु भूत.
 च्याघ, पु० वाघ.
 च्याळ, पु० सर्प
 ३.
 शक, स्त्री० शका.
 शकट, न० गाढु.
 शत, वि० सो.
 शब, न० मठ्ठु
 शब्दवेधी, वि० शब्दउपर तीर ना.
 खनि वेधनार.

शम, पु० शमता.
 शमी, खी० शमडी, खीजडी.
 शारासन, न० धनुष.
 शालभ, न० टीड.
 शशि, पु० चंद्र.
 शख्त, न० हवियार.
 शाम, नि० कालु.
 शामद, पु० सरदार.
 शामा, खी० खी.
 शिष्य, खी० रजा.
 शिरोमणि, पु० माथानो मणी.
 शिटाई, खी० मोटाद.
 शीखंडी, पु० मोर.
 शीखा, खी० चोटली.
 शीघ्र, नि० उतावलुं.
 शीत, खी० टाढ.
 शीशा, न० मस्तक.
 शोणीत, न० लोही.
 श्रीता, पु० साभळनार.
 श्रेत, नि० धोलुं.
 पोडशा, नि० सोछनी संख्या.

स.

सकुमार, { नि० कुमछुं (सुकु-
 सकोमछ, } मार) नाजुक.
 सगर, नि० जेने माथे गुरु दोय तेवुं.
 २ गोलो वगेरे उपडावाना सो
 गन सवराववा ते.
 संचरदुं, कि० जनुं.
 सत्त्वर, नि० उतावलुं.

सदन, न० घर.
 संपुट, पु० डाकडी. २ वे हाथ जो
 डवा अथवा वे कमाड' भीडवा ते.
 सप्त, नि० सात.
 समागम, पु० मेळाप.
 समीप, अ० पासे.
 समेत, अ० सहित.
 सर, न० तलाव.
 सर्वदा, अ० हमेशा.
 सर्वथा, अ० सर्व प्रकारे.
 सविता, पु० सूर्य.
 सवेरुं, न० सवार.
 सहस्र, नि० हजारनी संख्या.
 सांग, खी० शक्ति कहेछे ते हथी-
 आर.
 सांचरवुं, कि० जबुं.
 साधक, पु० साधनकरनार.
 सायर, न० धनुष.
 सारंग, पु० चद्र. २ हरण. ३ तंबुरो.
 ४ अमृत. ५ दाँचो. ६ मोर. ७ धनुष.
 सारिलुं, नि० सरखुं.
 सांसो, पु० सशय.
 सिधु, पु० समुद्र.
 सुरुत, पु० सार्काम, पुण्य.
 सुखासन, न० सुखपाल.
 सुल, पु० पुत्र.
 सूर्जुं, नि० ऊड.
 सुधग, नि० सुदर.
 सुय, पु० कंबुस.
 सुरपति, पु० इंद्र.

सुरभी, खी० गाय.
 सुवर्ण, न० सोनु.
 सूत्र, वि० सूतर, पश्चात्, सीधु, फा
 वे तेवु.
 सूर, पु० सूर्य.
 स्थापा, पु० सृजनार, ब्रह्मा.
 सुति, खी० वज्ञान.
 सेन, न० फोज.
 सेना, खी० फोज.
 सोडो, पु० मददगार.
 सोढुं, क्रि० विदाय थनु.
 स्थूळ, वि० जाहु.
 स्वर्ण, न० सोनु.

स्वल्प, वि० थोडु.
 स्वस्तिवाचन, न० मगालिक मत्र
 बोलचा ते.
 हय, पु० घोडो
 हरम-हर्म्य, पु० हवेली.
 हस्ती, पु० हाथी.
 हाटक, न० सोनु.
 हीसवुं, क्रि० हरखवु.
 हुनाशन, पु० अग्नि
 हलवु, पु० अडपलु.
 क्षिति, खी० पृथ्वी.
 क्षीण, वि० ओहु थवु.
 क्षोणि, खी० अक्षोहिणी.

सुरभी, ल्ली० गाय.
 सुवर्ण, न० सोनु
 सूत्र, वि० सूतर, पाशक, सीधु, फा
 वे तेवु
 सूर, पु० सूर्य
 स्वप्ना, पु० सृजनार, ब्रह्मा
 स्तुति, ल्ली० वस्त्राण
 सेन, न० फोज
 सेना, ल्ली० फोज
 सोडो, पु० मददगार
 सोटवुं, कि० विदाय थवु
 स्थूल, वि० जाहु
 स्वर्ण, न० सोनु

स्वल्प, वि० थोडु.
 स्वस्तिवाचन, न० मगाळिक मत्र
 बोलवा ते
 हय, पु० घोडो
 हरम—हर्म्य, पु० हवेली
 हस्ती, पु० हाथी
 हटक, न० सोनु
 हीसवुं, कि० हरखवु
 दुनाशन, पु० आमि
 हलवु, पु० अडपलु
 क्षिति, ल्ली० पृथ्वी
 क्षीण, वि० ओङ्गु थवु
 क्षीणि, ल्ली० अदोहिणी.
